भाग 2

सातवीं कक्षा के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक

संपादक

प्रमोदकुमार दुबे

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण
जनवरी 2003
माघ 1924

PD 500T NSY

ISBN 81-7450-132-0

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस	108, 100 फीट रोड, होस्डेकेरे	नवजीवन ट्रस्ट भवन	सी.डब्लू.सी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग	हेली एक्सटेंशन बनाशंकरी, III इस्टेज	डाकघर नवजीवन	32, बी.टी. रोड, सुखचर
नई दिल्ली 110 016	बैंगलूर 560 085	अहमदाबाद 380 014	24 परगना 743 179

प्रकाशन सहयोग

संपादन : नरेश यादव
उत्पादन : डी. साई प्रसाद
ओम प्रकाश
आवरण : अमित श्रीवास्तव
चित्र : बाल कृष्ण

रु. 30.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटर मार्क 70 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा सुप्रीम ऑफसैट प्रेस, के-5, मालवीय नगर, नई दिल्ली 110 017 द्वारा मुद्रित।

आमुख

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के अनुसार परिषद् में नए पाठ्यक्रम एवं तदनुरूप नई पाठ्यपुस्तकों का निर्माण किया गया था। किंतु शिक्षा सतत विकासशील प्रक्रिया है। इस कारण बदलती हुई परिस्थितियों, ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में होने वाले अद्यतन विकास तथा नवीन शैक्षिक आवश्यकताओं के कारण नए पाठ्यक्रम तथा उसके अनुसार नई पाठ्यपुस्तकों का निर्माण अपेक्षित हो जाता है। 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी समय-समय पर पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम तथा पाठ्यपुस्तकों में आवश्यकतानुसार संशोधन एवं परिवर्तन पर बल दिया गया है। इस दृष्टि से परिषद् ने सन 2000 में 'विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा का निर्माण किया। इसके आधार पर विभिन्न विषयों के पाठ्यक्रमों में संशोधन एवं परिवर्तन किए गए। इस नवनिर्मित पाठ्यक्रम के अनुरूप परिषद् ने नवीन पाठ्यपुस्तकों के प्रणयन का कार्य हाथ में लिया है। इसी क्रम में कक्षा सात के लिए हिंदी की यह नवीन पाठ्यपुस्तक तैयार की गई है।

प्रस्तुत पुस्तक की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं –

(क) पाठ्यसामग्री का चुनाव विद्यार्थियों की बौद्धिक क्षमता, रुचि तथा उनकी भाषिक दक्षता के विकास को दृष्टि में रखकर किया गया है। साथ ही पाठों के चयन में जीवन के विविध संदर्भों, नागरिक के मूल कर्तव्यों, केंद्रिक शिक्षाक्रम के घटकों तथा मूल्यपरक विषयों के समावेश पर बल दिया गया है।

(ख) विविधता और रोचकता की दृष्टि से पुस्तक में वर्णनात्मक तथा विचारात्मक निबंध, ललित निबंध, लघु निबंध, कहानी, जीवनी, संस्मरण, रेखाचित्र, 'यात्रा-वृत्तांत', एकांकी आदि गद्य की विभिन्न विधाओं के पाठ सम्मिलित किए गए हैं। पाठों में विषयों की

विविधता का विशेष ध्यान रखा गया है। साथ ही प्रकृति-सौंदर्य, देश-प्रेम, नीति तथा कर्तव्य-भावना से संबंधित कविताएँ भी दी गई हैं।

(ग) पाठ में आए हुए तथ्यों, भावों, विचारों, जीवनमूल्यों तथा भाषा-शैलीगत विशेषताओं को पूरी तरह उभारने की दृष्टि से प्रत्येक पाठ के अंत में विस्तृत 'प्रश्न-अभ्यास' दिए गए हैं। इनमें बोध और विचार के अंतर्गत दिए गए प्रश्न विद्‌यार्थियों में पठित वस्तुओं को समझने और उसपर विचार करने की योग्यता विकसित करने में सहायक होंगे। 'भाषा अध्ययन' के अंतर्गत दिए गए प्रश्न और अभ्यास से विद्‌यार्थियों को भाषिक तत्त्वों और संरचनाओं को समझने तथा भाषा का प्रभावी प्रयोग करने में सहायता मिलेगी। साथ ही उच्चारण, वर्तनी तथा वाक्य-विन्यास संबंधी अशुद्‌धियाँ भी दूर हो सकेंगी। कविता के पाठों से संबंधित प्रश्न और अभ्यास में बोध और सराहना तथा शिल्पगत विशेषताओं को भी उभारने का प्रयास किया गया है।

नए पाठ्‌यक्रम में मौखिक भाषा की दक्षता पर विशेष बल दिया गया है। अतः प्रश्न-अभ्यास में मौखिक प्रश्नों को जोड़ा गया है, जिससे विद्‌यार्थियों में शुद्‌ध उच्चारण और शुद्‌ध भाषा प्रयोग की दक्षता विकसित हो सके। इससे मौखिक भावाभिव्यक्ति की योग्यता में भी वृद्‌धि होगी।

'योग्यता-विस्तार' शीर्षक के अंतर्गत दिए गए सुझावों और निर्देशों से विद्‌यार्थियों को पाठ्‌य विषयों से संबंधित अधिकाधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए अतिरिक्त साहित्य पढ़ने की प्रेरणा प्राप्त होगी और उनकी पठन-रुचि का विस्तार होगा। साथ ही, प्रस्तावित क्रियाकलापों से उनके भाषिक कौशलों (सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना) का संवर्धन भी हो सकेगा।

अंत में 'शब्दार्थ और टिप्पणी' के अंतर्गत पाठ में आए कठिन शब्दों के प्रसंगगत अर्थ बताए गए हैं और उन प्रसंगों, व्यक्तियों, अंतर्कथाओं आदि पर टिप्पणियाँ भी दी गई हैं जो पाठ के अर्थबोध की दृष्टि से अपेक्षित है।

(घ) पुस्तक के अंत में 'शब्द-कोश' और उसे देखने की विधि दी गई है, जिससे विद्‌यार्थियों में हिंदी का शब्द-कोश देखने की कुशलता विकसित हो सके। इस शब्द-कोश में

'शब्दार्थ' के अंतर्गत लिए गए कठिन और अपरिचित शब्दों को अकारादि क्रम में रखा गया है। अर्थ देते समय शब्द के प्रसंगगत अर्थ को महत्त्व दिया गया है। आवश्यक स्थानों पर अनेक समानार्थी शब्द भी दे दिए गए हैं। इससे विद्यार्थी मिलते-जुलते अर्थ वाले शब्दों में अंतर करना और उनमें से उपयुक्त शब्द का चुनाव करना सीख सकेंगे। कोश में शब्द-रचना की प्रक्रिया को समझाने का प्रयत्न किया गया है, ताकि विद्यार्थी इसका उपयोग शुद्ध वर्तनी और रचना आदि का अभ्यास करने के लिए कर सकें।

प्रस्तुत पुस्तक के निर्माण में हमें अनेक शिक्षाविदों, अनुभवी अध्यापकों तथा भाषाशास्त्रियों का सहयोग मिला है, इसके लिए मैं उन्हें हृदय से धन्यवाद देता हूँ। जिन कवियों और लेखकों ने अपनी रचनाएँ इस पुस्तक में सम्मिलित करने की अनुमति दी है, उनके प्रति हम विशेष आभार प्रकट करते हैं।

इस पुस्तक के विषय में अध्यापकों और विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया तथा सुझाव प्राप्त कर हमें प्रसन्नता होगी।

जगमोहन सिंह राजपूत

नई दिल्ली — *निदेशक*

अक्तूबर 2002 — राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

गांधी जी का जंतर

तुम्हें एक जंतर देता हूँ। जब भी तुम्हें संदेह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आज़माओ :

जो सबसे गरीब और कमज़ोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शक्ल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुँचेगा? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा? यानी क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा, जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा संदेह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।

विद्यार्थियों से

'भारती' का भाग 2 आपके हाथ में है। यह कक्षा सात के लिए मातृभाषा हिंदी की पाठ्यपुस्तक है। इस पुस्तक में ऐसी कहानियाँ, कविताएँ, एकांकी, आत्मकथा, निबंध आदि रखे गए हैं जो आपको रुचिकर लगेंगे। पाठ्यपुस्तक में संकलित पाठों को पढ़ने में आपको आनंद आएगा और आपकी भाषा धीरे-धीरे विकसित होगी।

इस पुस्तक के पठन-पाठन में आपके अध्यापक तो आपकी सहायता करेंगे ही, पर इसमें ऐसे अनेक अंश हैं जिन्हें आप अपने-आप भी पढ़कर अच्छी तरह समझ सकते हैं। आपकी सहायता के लिए हम कुछ बातें नीचे दे रहे हैं। इन बातों पर ध्यान देकर आप इस पुस्तक से अधिक-से-अधिक लाभ उठा सकेंगे –

(क) भाषा का मूल रूप मौखिक है। जीवन के हर क्षेत्र में बोलने की आवश्यकता पड़ती है और हम अपने अधिकतर कार्य मौखिक अभिव्यक्ति द्वारा ही पूर्ण करते हैं। बोलना एक कौशल है और उचित अभ्यास से ही इसका विकास होता है। अतः इस पुस्तक के पाठों को घर पर बोलकर पढ़ने के अभ्यास कीजिए। इससे न केवल आपके बोलने का ढंग सुधरेगा अपितु आपको पाठों में निहित विचारों को समझने में भी सहायता मिलेगी और आपकी पठन योग्यता भी बढ़ेगी। बोलने के कौशल के विकास के लिए अपने उच्चारण पर ध्यान दीजिए। आपका उच्चारण न केवल शुद्ध होना चाहिए बल्कि स्पष्ट, सुश्रव्य, भावानुकूल भी होना चाहिए।

(ख) आप पाठों को अच्छे ढंग से बोलकर पढ़ने के साथ-साथ उनका मौन पठन भी कीजिए। मौन पाठ में न तो आपके मुँह से आवाज़ निकलनी चाहिए और न ही होंठ हिलने चाहिए। मौन पठन करने से आप अधिक गति से पढ़ सकेंगे और पाठ के विचारों को भी जल्दी और अच्छी तरह समझ सकेंगे।

(ग) भाषा शब्दों से बनती है। आप अब तक हिंदी के हज़ारों शब्द जान गए हैं। इस पुस्तक में कुछ नए शब्द आए हैं, जिनका अर्थ आप शायद नहीं जानते होंगे। आपकी सुविधा के लिए पुस्तक के प्रत्येक पाठ के अंत में 'शब्दार्थ और टिप्पणी' दी गई है। साथ ही पुस्तक के अंत में 'शब्द-कोश' भी दिया गया है, जिसमें नए शब्दों के अर्थ दिए गए हैं। अध्यापक आपको इस शब्द-कोश का उपयोग करना सिखाएँगे। इस कोश से अधिक-से-अधिक लाभ उठाइए। सातवीं कक्षा उत्तीर्ण करते-करते यदि आप इस शब्द-कोश के हर शब्द का अर्थ अच्छी तरह जान लेंगे, उन्हें सही-सही लिख सकेंगे और उन शब्दों का अपनी भाषा में प्रयोग कर सकेंगे तो आपकी भाषा की योग्यता निश्चित ही बढ़ जाएगी और आपको आगे की कक्षाओं में पढ़ने में बड़ी सुगमता होगी।

(घ) भाषा यद्‌यपि शब्दों से बनती है पर शब्दों पर ही समाप्त नहीं हो जाती है। शब्दों का अर्थ जान लेना ही भाषा-ज्ञान नहीं है। शब्दों के परस्पर संबंध से वाक्य बनते हैं और वाक्यों के परस्पर संबंध से अनुच्छेद। आपको मालूम होना चाहिए कि कौन शब्द या शब्दों का समूह वाक्य में काम कर रहा है। इसके लिए भाषा के विश्लेषण अर्थात् भाषा के विभिन्न पक्षों को अलग-अलग समझना ज़रूरी है। हमने इसके लिए गद्‌य पाठों के अंत में 'भाषा-अध्ययन' शीर्षक से कुछ अभ्यास दिए हैं। उन अभ्यासों को भली-भाँति समझकर पूरा करने से आपकी भाषा सुधरेगी और आप अपनी बात को अधिक प्रभावशाली ढंग से कह सकेंगे और लिख सकेंगे।

(ङ) लेखक या कवि शब्दों के द्‌वारा कुछ कहना चाहता है। उसके विचारों और भावों को समझने की कोशिश कीजिए। इसके लिए शब्दों में निहित विचारों तक जाने की आवश्यकता है। पढ़ते हुए सोचने का काम जारी रखिए। बिना समझे रटने की कोशिश मत कीजिए। लेखक या कवि की बात को भली प्रकार समझकर उसपर अपने ढंग से विचार कीजिए।

(च) प्रत्येक पाठ के अंत में 'योग्यता-विस्तार' शीर्षक से कुछ अभ्यास दिए गए हैं। इस प्रकार के अभ्यास पाठों से मिली जानकारी को और समृद्‌ध तथा विस्तृत करेंगे। साथ

ही ये आपको अतिरिक्त जानकारी प्राप्त करने के लिए भी प्रेरित करेंगे। इन अभ्यासों में कई जगह आपसे पाठ के विषय से संबंधित कोई पुस्तक या उसका कोई अंश-विशेष पढ़ने के लिए कहा गया है। भाषा-योग्यता बढ़ाने का सबसे अच्छा मंत्र है पढ़ना, पढ़ना और पढ़ना। इसलिए आप पढ़ें, खूब पढ़ें। आपके विद्यालय में पुस्तकालय अवश्य होगा। यदि किसी विषय पर कोई पुस्तक विद्यालय के पुस्तकालय में नहीं है या किसी कारण से वह आपको मिल नहीं सकती तो उसके लिए अपने अध्यापक, पुस्तकालयाध्यक्ष या प्रधानाचार्य से प्रार्थना कीजिए। वे अवश्य ही आपकी माँग पूरी करने का यत्न करेंगे। कुछ अभ्यासों में लेखन-कार्य पर बल दिया गया है। इनके माध्यम से आप अपनी लिखित अभिव्यक्ति को विकसित कर सकेंगे।

(छ) भाषा किसी एक व्यक्ति की संपत्ति नहीं है, वह समाज की उपज है। भाषा पढ़ते समय हमारे अंदर अच्छे सामाजिक गुणों का भी विकास होना चाहिए। इन गुणों में सबसे प्रमुख है – सहयोग की भावना। इसलिए सबके साथ मिल-जुलकर सीखिए। आप अकेले जितना सीखेंगे उससे कहीं अधिक औरों के साथ काम करके सीखेंगे। किसी पुस्तक में अच्छी बात पढ़ने पर उसके बारे में अपने सहपाठियों से चर्चा करना न भूलें। इसी प्रकार अपनी कठिनाइयाँ बिना झिझक के औरों के सामने रखिए और दूसरों के अनुभवों से सीखिए।

भाषा का मुख्य उद्देश्य ज्ञान और आनंद की प्राप्ति है। हमें विश्वास है कि आप इस पुस्तक के सभी पाठों को लगन से पढ़ेंगे ताकि हिंदी के अध्ययन से आपको ज्ञान भी मिले और उल्लास भी।

पांडुलिपि समीक्षा-संशोधन कार्यगोष्ठी के सदस्य

1. श्री निरंजन कुमार सिंह
   अवकाशप्राप्त रीडर
   सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग
   एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली
2. डॉ. आनंद प्रकाश व्यास
   अवकाशप्राप्त रीडर
   शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
3. डॉ. माणिक गोविंद चतुर्वेदी
   अवकाशप्राप्त प्रोफ़ेसर
   केंद्रीय हिंदी संस्थान, सूर्यमुखी
   श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली
4. डॉ. कृष्ण कुमार गोस्वामी
   प्रोफ़ेसर, केंद्रीय हिंदी संस्थान
   कैलाश कालोनी, नई दिल्ली
5. डॉ. अनिरुद्ध राय
   अवकाशप्राप्त प्रोफ़ेसर
   सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग
   एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली
6. डॉ. मान सिंह वर्मा
   अवकाशप्राप्त रीडर एवं अध्यक्ष
   हिंदी विभाग, मेरठ कॉलेज, मेरठ
7. डा.(कु.) नीरा नारंग
   वरिष्ठ प्रवक्ता, शिक्षा विभाग
   दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
8. डॉ. सुरेश पंत
   अवकाशप्राप्त प्रवक्ता
   राजकीय उच्चतर माध्यमिक बाल विद्यालय
   जनकपुरी, नई दिल्ली
9. कु. कुसुमलता अग्रवाल
   हिंदी अध्यापिका, सर्वोदय बाल विद्यालय
   रमेश नगर, नई दिल्ली
10. श्री ब्रजेंद्र त्रिपाठी
    कार्यक्रम अधिकारी
    साहित्य अकादमी, नई दिल्ली
11. श्री अमर गोस्वामी
    वरिष्ठ लेखक, एफ 12, सेक्टर 12
    नोएडा
12. श्री रमेश तिवारी
    प्रवक्ता, कॉलेज ऑफ वोकेशनल स्टडीज़
    दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
13. श्रीमती सावित्री शर्मा
    हिंदी अध्यापिका, डी.एम. स्कूल
    क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (एन.सी.ई.आर.टी.)
    अजमेर
14. श्री अशोक शुक्ल
    हिंदी अध्यापिका, सर्वोदय विद्यालय
    पीतम पुरा, नई दिल्ली
15. श्री कमल मल्होत्रा
    हिंदी अध्यापक
    माता जयकौर पब्लिक स्कूल
    अशोक विहार, दिल्ली
16. कु. डिंपल खन्ना
    हिंदी अध्यापिका
    भारतीय विद्या भवन
    नई दिल्ली

एन.सी.ई.आर.टी. संकाय

सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग

17. डॉ.(कु.) स्नेहलता प्रसाद
    रीडर
18. डॉ. प्रमोदकुमार दुबे (**समन्वयक**)
    प्रवक्ता

पाठ-सूची

भारत का संविधान

भाग 4क

नागरिकों के मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य – भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;

(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं,रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे; और

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके।

1. भारति जय-विजय करे!

(प्रस्तुत पाठ में सरस्वती के रूप में राष्ट्र की वंदना की गई है। भारत माता मानो सरस्वती है, जिसका मुकुट हिमालय है, जिसके चरण-युगल को सागर धोता है, गंगा की धारा जिसके गले का हार है और हरी-भरी वनस्पतियाँ जिसके वस्त्र हैं। प्रणव का उच्चारण ही इसके प्राण हैं और यहाँ सर्वत्र सबको अपनी बात अपने ढंग से कहने की उदारता है।)

भारति जय-विजय करे!
कनक-शस्य-कमल धरे!

लंका पदतल-शतदल
गर्जितोर्मि सागर-जल,
धोता शुचि चरण युगल
स्तव कर बहु-अर्थ भरे!

तरु-तृण-वन-लता वसन
अंचल में खचित सुमन,
गंगा-ज्योतिर्जल-कण
धवल धार-हार गले!

मुकुट शुभ्र हिम-तुषार
प्राण-प्रणव-ओंकार,
ध्वनित दिशाएँ उदार
शतमुख-शतरव-मुखरे !

– **सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'**

प्रश्न-अभ्यास

बोध और सराहना

(क) मौखिक

1. भारत को किस रूप में संबोधित किया गया है?
2. भारत माता का मुकुट किसे कहा गया है?
3. किस पंक्ति का आशय है कि भारत में अपनी बात प्रस्तुत करने देने की उदारता है?

(ख) लिखित

1. भारत माता के चरण-युगल को धोनेवाले सागर की स्तुति में क्या-क्या अर्थ छिपे हो सकते हैं – उन्हें स्पष्ट कीजिए।
2. कवि द्वारा बताए गए भारत माता के वस्त्राभूषणों का उल्लेख कीजिए।
3. गंगा को भारत माता के गले का हार क्यों बताया गया है?
4. कविता में भारत माता का जो संपूर्ण चित्र उभरा है, उसका वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

योग्यता-विस्तार

1. सुमित्रानंदन पंत की 'जय जन भारत' और जयशंकर प्रसाद की 'अरुण यह मधुमय देश हमारा' कविताओं को खोजकर पढ़िए और प्रस्तुत कविता से उनकी तुलना कीजिए।
2. भारत-वंदना से संबंधित कुछ कविताओं का संकलन कीजिए और उन्हें कक्षा में पढ़कर सुनाइए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

भारति जय-विजय करे! - विजय दिलाने वाली हे भारती! (हे सरस्वती)!
भारति - हे सरस्वती! (भारती = सरस्वती)
कनक-शस्य-कमल धरे! - सुनहली फ़सल रूपी कमल को धारण करने वाली
पदतल-शतदल - चरणों के नीचे स्थित कमल
गर्जितोर्मि - गर्जन करती हुई लहरोंवाला
शुचि - पवित्र
स्तव - स्तुति, वंदना
बहु-अर्थ भरे - अनेक अर्थों से युक्त, विविध अर्थों से भरी (जैसे : श्रद्धा, भक्ति, समर्पण, सेवा आदि भावों से संबंधित)
वसन - वस्त्र
अंचल - आँचल
खचित सुमन - फूलों से जड़ा, विद्वानों से भरा, उदार हृदय वाला
गंगा-ज्योतिर्जल-कण - गंगा के चमकते जलकण
धवल - श्वेत, निर्मल
मुकुट - ताज
मुकुट शुभ्र हिम-तुषार - बर्फ और पाले से निर्मित श्वेत मुकुट : हिमालय
प्रणव - ओम्
ओंकार - ओम् की ध्वनि, ब्रह्म का नाद-प्रतीक
शतरव - सैकड़ों आवाज़ें
मुखरे - मुखर करने वाली, कहने वाली (हे भारति!)

2. शहीद बकरी

(किसी जीवन मूल्य को सहज और बोधगम्य बनाने के लिए उसे किसी घटना, दृष्टांत या कथा के माध्यम से प्रस्तुत करने की साहित्यिक विधा प्राचीनकाल से ही चली आ रही है। ऐसी रचनाओं को 'बोधकथा' कहते हैं। 'शहीद बकरी' ऐसी ही बोधकथा है।

प्रस्तुत कथा में कायर बकरियों के माध्यम से लेखक ने यह उजागर किया है कि किस प्रकार भेड़िये जैसे अत्याचारी के आतंक के कारण लोग भय से दुबककर बैठ जाते हैं। वे एकजुट होकर उसका सामना करने का साहस नहीं जुटा पाते, किंतु जब युवा बकरी जैसा कोई प्राणी कमज़ोर होने पर भी साहस करके अत्याचारी का मुकाबला करने के लिए आगे आता है तो अत्याचारी को मुँह की खानी पड़ती है। उस प्रयास में भले ही अत्याचारी का विरोध करनेवाले को इस कथा की बकरी के समान शहीद होना पड़े। साथ ही समाज-हित के लिए किए गए आत्मोत्सर्ग का उपहास करनेवाले तोते और समाज-हित के लिए किए गए बलिदान पर गर्व का अनुभव करनेवाली मैना के संवाद द्वारा इस कथा के संदेश को व्यक्त किया गया है।)

हरे-भरे पहाड़ पर बकरियाँ चरने जातीं तो दूसरे-तीसरे रोज़ एक न एक बकरी कम हो जाती। भेड़िये की इस धूर्तता से तंग आकर चरवाहे ने वहाँ बकरियाँ चराना बंद कर दिया और बकरियों ने भी मौत से बचने के लिए बाड़े में कैद रहकर जुगाली करते रहना ही श्रेष्ठ समझा। लेकिन न जाने क्यों एक युवा नई बकरी को यह बंधन पसंद नहीं आया। अत्याचारी से यों कब तक प्राणों की रक्षा की जा सकेगी? वह पहाड़ से उतर कर किसी रोज़ बाड़े में भी कूद सकता है। शिकारी के भय से मूर्ख शुतुरमुर्ग रेत में गरदन छुपा लेता है। तब क्या शिकारी उसे बख्श देता है? इन्हीं विचारों से ओत-प्रोत वह हसरत भरी नज़रों

से पर्वत की ओर देखती रहती। साथियों ने उसे आँखों-आँखों में समझाने का प्रयत्न किया कि वह ऐसे मूर्खतापूर्ण विचारों को मन में न लाए। भोग्य सदैव से भोगने के लिए ही उत्पन्न होते रहे हैं। भेड़िये के मुँह हमारा खून लग चुका है, वह अपनी आदत से कभी बाज़ नहीं आएगा।

लेकिन नई युवा बकरी तो भेड़िये के मुँह में लगे खून को ही देखना चाहती थी। वह किस तरह झपटता है, यह करतब देखने की उसकी लालसा बलवती हो गई। आखिर एक रोज़ मौका पाकर बाड़े से वह निकल भागी और पर्वत पर चढ़कर स्वच्छंद विचरती, कूदती, फलाँगती दिन भर पहाड़ पर चरती रही। मनमानी कुलेलें करती रही। भेड़िये को देखने की उत्सुकता भी बनी रही, परंतु उसके दर्शन न हुए। झुटपुटा होने पर लाचार जब वह नीचे उतरने को बाध्य हुई तो रास्ते में दबे पाँव भेड़िया आता हुआ दिखाई दिया। उसकी रक्तरंजित आँखें, लपलपाती जीभ और आक्रमणकारी चाल से वह सब कुछ समझ गई। भेड़िया मुसकराकर बोला, "तुम बहुत सुंदर और प्यारी मालूम होती हो। मुझे तुम्हारी जैसी साथिन की आवश्यकता थी, मैं कई रोज़ से अकेलापन महसूस कर रहा था। आओ, तनिक साथ-साथ पर्वतराज की सैर करें।"

बकरी को भेड़िये की बकवास सुनने का अवसर न था। उसने तनिक पीछे हटकर इतने ज़ोर से टक्कर मारी कि असावधान भेड़िया सँभल न सका। यदि बीच का भारी पत्थर उसे सहारा न देता तो औंधे मुँह नीचे गार में गिर गया होता।

भेड़िये की ज़िंदगी में यह पहला अवसर था। वह किंकर्तव्यविमूढ़-सा हो गया। टक्कर खाकर अभी वह सँभल भी न पाया था कि बकरी के पैने सींग
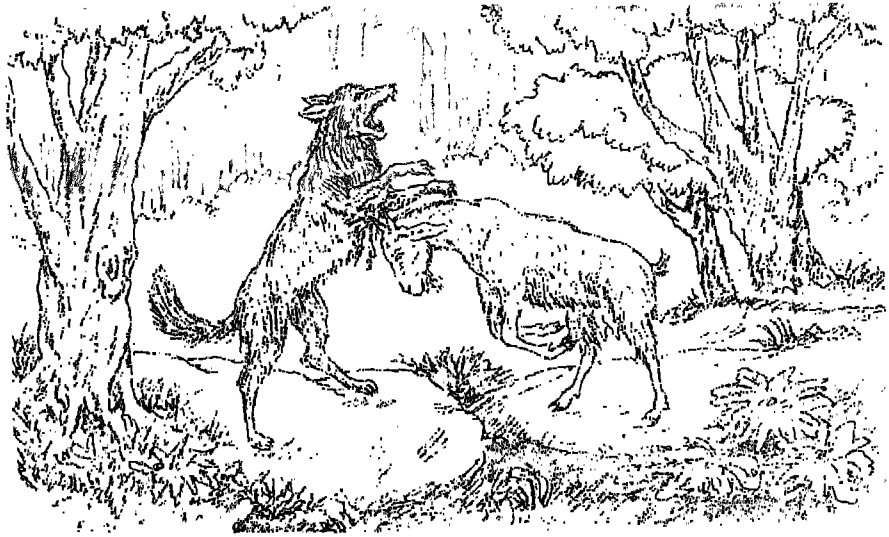
उसके सीने में इतने ज़ोर से लगे कि वह चीख उठा। क्षत-विक्षत सीने से लहू की बहती धार देख भेड़िये के पाँव उखड़ गए। मगर एक निरीह बकरी के आगे भाग खड़ा होना उसे कुछ जँचा नहीं। वह भी साहस बटोरकर पूरे वेग से झपटा। बकरी तो पहले से ही सावधान थी, वह कतराकर एक ओर हट गई और भेड़िये का सिर दरख्त से टकराकर लहूलुहान हो गया।

लहू को देखकर अब उसके लहू में भी उबाल आ गया। वह जी-जान से बकरी के ऊपर टूट पड़ा। अकेली बकरी उसका कब तक मुकाबला करती? वह उसके दाँव-पेंच देखने की लालसा और अपने अरमान पूरे कर चुकी थी। साथियों की अकर्मण्यता पर तरस खाती हुई बेचारी ढेर हो गई।

पेड़ पर बैठे हुए तोते ने मुसकराकर मैना से पूछा, "भेड़िये से भिड़कर भला बकरी को क्या मिला?"

मैना ने सगर्व उत्तर दिया, "वही जो अत्याचारी का सामना करने पर पीड़ितों को मिलता है। बकरी मर ज़रूर गई, परंतु भेड़िये को घायल करके मरी है। वह भी अब दूसरों पर अत्याचार करने के लिए जीवित नहीं रह सकेगा। सीने और मस्तक के घाव उसे सड़-सड़कर मरने को बाध्य करेंगे। काश, बकरी के अन्य साथियों ने उसकी भावनाओं को समझा होता। छिपने के बजाय एक साथ वार किया होता तो वे आज बाड़े में कैदी जीवन व्यतीत करने के बजाय पहाड़ पर निःशंक और स्वच्छंद विचरती होतीं!"

तोता अपना-सा मुँह लेकर चुपचाप शहीद बकरी की ओर देखने लगा।

— अयोध्याप्रसाद गोयलीय

प्रश्न-अभ्यास

बोध और विचार

(क) मौखिक

1. 'शहीद बकरी' पाठ का मुख्य संदेश है :
   (क) अपने से अधिक बलवान से नहीं भिड़ना चाहिए।
   (ख) अत्याचारी का सामना निडर और एकजुट होकर करना चाहिए।
   (ग) अपने साथियों की बात माननी चाहिए।
   (घ) कमज़ोरों को सिर नहीं उठाने देना चाहिए।
2. अन्य बकरियों की दृष्टि से युवा बकरी का विचार मूर्खतापूर्ण क्यों था?
3. एक दिन युवा बकरी बाड़े से क्यों निकल भागी?

4. युवा बकरी की प्रशंसा करने के पीछे भेड़िये का क्या उद्देश्य था?
5. बकरी के आक्रमण से भेड़िया भौंचक्का क्यों रह गया?

1. चरवाहे ने बकरियों को पहाड़ पर ले जाना क्यों छोड़ दिया? युवा बकरी पर इसकी क्या प्रतिक्रिया हुई?
2. "भोग्य सदैव से भोगने के लिए ही उत्पन्न होते रहे हैं" – आशय स्पष्ट कीजिए।
3. बकरी की मृत्यु पर मैना को क्यों गर्व हुआ?
4. "बकरी तो मर गई, परंतु अत्याचारी को सबक अवश्य सिखा गई।" कैसे?
5. बकरी के लिए प्रयुक्त 'शहीद' शब्द कहाँ तक उपयुक्त है? तर्क सहित स्पष्ट कीजिए।
6. क्या यह बोध कथा केवल भेड़िये और बकरी की कथा है? स्पष्ट कीजिए।
7. इस पाठ में बकरी, भेड़िया, तोता और मैना किस-किस का प्रतिनिधित्व करते हैं? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

1. निम्नलिखित शब्दों को बोलकर पढ़िए :

   रोज़, बाज़, भेड़िया, शुतुरमुर्ग, किंकर्तव्यविमूढ़, अकर्मण्यता, दरख्त, क्षत-विक्षत
2. निम्नलिखित शब्दों से उपसर्ग अलग कीजिए :

   विचरती, अकर्मण्यता, सगर्व, निःशंक, अनावश्यक

   कुछ विशेषणों में – 'ता', 'ई', 'पन', प्रत्यय लगाने से भाववाचक संज्ञाएँ बनती हैं। निम्नलिखित विशेषणों के साथ उपयुक्त प्रत्यय लगाइए :

   बीमार, वीर, उत्सुक, असावधान, अकेला, पागल
3. उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलिए :

   मुझे पता नहीं, वह क्यों नहीं आया ⟹ न जाने वह क्यों नहीं आया

   पता नहीं, वह चोटी पर कैसे चढ़ेगा ⟹

- यह समझ में नहीं आता, बकरी को बंधन पसंद क्यों नहीं आया ⟹
- हमें मालूम नहीं, कल क्या होगा ⟹
- हमें पता नहीं, उसे क्या रोग है ⟹

4. हिंदी शब्द-युग्मों में योजक चिह्न (-) का प्रयोग पाँच प्रकार से होता है :
   (क) दो शब्दों के बीच 'और' अथवा 'या' के स्थान पर; जैसे – हरे-भरे, खाना-पीना, दूसरे-तीसरे
   (ख) दो शब्दों के बीच 'का' के स्थान पर; जैसे – कैदी-जीवन
   (ग) पुनरुक्त शब्दों के बीच; जैसे – धीरे-धीरे, साथ-साथ, आँखों-आँखों में
   (घ) दो शब्दों के बीच में 'न' अथवा 'से' आने पर; जैसे – कोई-न-कोई, ऊँची-से-ऊँची
   (ङ) तुलना के लिए 'सा', 'सी', 'से' से पूर्व; जैसे – अपना-सा, फूल-सी, गंदे-से

   उपर्युक्त पाँचों प्रकार के दो-दो उदाहरण दीजिए।
5. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि अर्थ स्पष्ट हो जाए :
   आँखों-आँखों में समझाना, खून मुँह लगना, दबे पाँव आना, पाँव उखड़ना, लहू में उ्बाल आना

योग्यता-विस्तार

1. "अपने से बलवान भेड़िये से भिड़कर बकरी ने गलती की।" इस विषय के पक्ष-विपक्ष में कक्षा में विचार व्यक्त कीजिए।
2. अपने ऐसे अनुभवों का उल्लेख कीजिए जिनमें सामूहिक सहयोग से कोई अच्छा कार्य सिद्ध हुआ हो।

शब्दार्थ और टिप्पणी

धूर्तता - छल, चालाकी

जुगाली - गाय-बैल आदि पशुओं द्वारा चारे को धीरे-धीरे चबाना

बख्श देना - क्षमा करना
ओत-प्रोत - भरा हुआ
हसरत - चाह
भोग्य - भोगने योग्य
खून मुँह लगना - खून का मज़ा मिलना, चसका पड़ जाना
बाज़ आना - दूर रहना, त्यागना
करतब - कौशल, अचरज में डालने वाला काम
लालसा - किसी चीज़ की अत्यधिक इच्छा
बलवती - तीव्र
स्वच्छंद - मुक्त
कुलेल - मस्ती और उमंग भरा खेल
झुटपुटा - सुबह या शाम का वह समय जब कुछ अँधेरा और कुछ उजाला हो
बाध्य - विवश
दबे पाँव आना - चुपके से आना
रक्तरंजित - खून से सना
औंधे मुँह - उलटे मुँह
गार - गड्ढा
किंकर्तव्यविमूढ़ - क्या करें, क्या न करें की स्थिति
क्षत-विक्षत - बुरी तरह घायल
निरीह - निर्बल, असहाय
शुतुरमुर्ग - एक बड़ा पक्षी जिसकी गरदन ऊँट की गरदन की तरह टेढ़ी और लंबी होती है। यह पक्षी पंख होते हुए भी उड़ नहीं सकता
लहू में उबाल आना - क्रोध आना
अकर्मण्यता - निकम्मापन
ढेर हो जाना - मर जाना
पाँव उखड़ जाना - लड़ाई में ठहर न पाना

3. फिर-फिर उठती है माटी की लौ

(यह पाठ हमें आज के वैज्ञानिक युग में भी अपनी माटी में रची-बसी संस्कृति की अनुभूति कराता है। अनेक घरों में जलता माटी का छोटा-सा दीया, शिल्प-मेलों में रखीं माटी की आकर्षक कलात्मक, सज्जात्मक वस्तुएँ और शिल्पकला के अद्भुत नमूने इत्यादि कुंभकार द्वारा निर्मित माटी की वस्तुओं के साथ हमारे गहरे रिश्तों को उजागर करते हैं। अंत में, लेखक यह आशा करता है कि लोक-कलाकारों की कला के सौंदर्य की सराहना करने, उन्हें प्रोत्साहन देने और अनेक सांस्कृतिक अवसरों पर माटी का दीप प्रज्ज्वलित करने से भविष्य में भी माटी के साथ हमारे संबंध अक्षुण्ण रहेंगे।)

माटी के बरतनों और माटी की मूर्तियों की एक सुदीर्घ परंपरा हमारे देश में रही है। माटी का दीया तो सदियों से बहुतेरे घरों में जलता ही रहा है और आज भी जलता है। आधुनिक ज़माने में भी माटी की यह महिमा हमारे देश में कम नहीं हुई, इसे गनीमत ही समझिए। आधुनिक उपकरणों ने शहरी जीवन में माटी की जगह भले ही कुछ छीनी हो, लेकिन यहाँ भी कम से कम पानी से भरा मटका अभी भी बचा हुआ है, जिसका पानी पीना बहुतों को अच्छा लगता है। माटी के गमले भी क्या शहर-क्या गाँव, सब जगह दिखाई पड़ते हैं। दिल्ली जैसे शहर की ही बात करें तो हर गली-मुहल्ले में रेहड़ी पर भी मिट्टी के गमले बेचनेवाले मिल जाएँगे। माटी की सज्जात्मक वस्तुएँ भी शहरों में काफ़ी बिकने लगी हैं।

कई आधुनिक घरों में आपको माटी के बड़े-बड़े मटके भी सजे हुए मिलेंगे, जो कभी अन्न रखने के काम आया करते थे। लेकिन माटी की चीज़ों के इस प्रचलन से यह नहीं मान लेना चाहिए कि हमारे कुंभकार की हालत बेहतर हो गई है। वह तो लगभग जहाँ का तहाँ है। और कोई आँकड़े तो उपलब्ध नहीं हैं, लेकिन यह एक सच्चाई है कि अब कुंभकार के पेशे को स्वयं कुंभकारों की
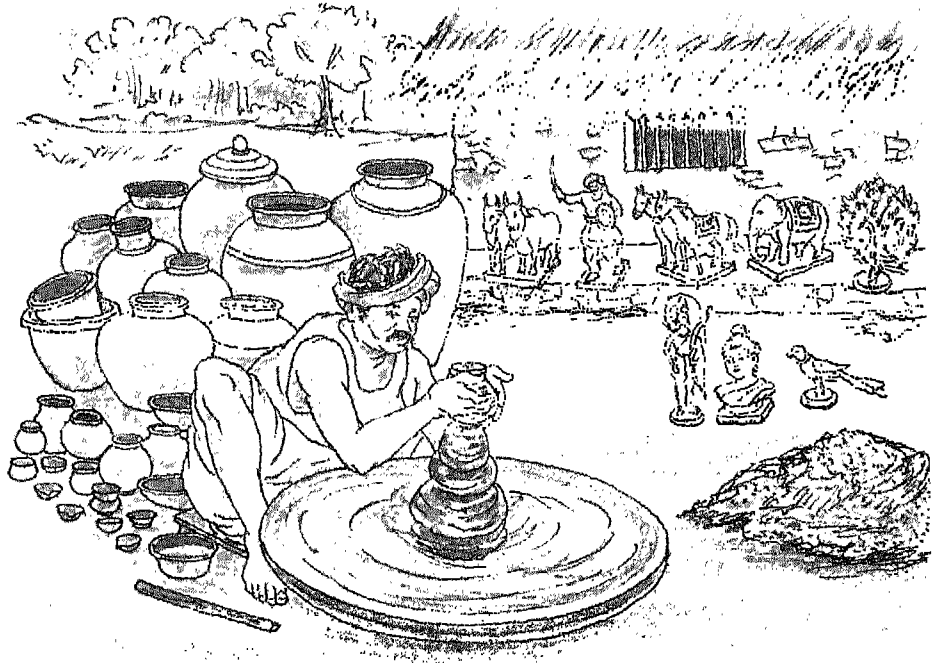
नई पीढ़ियाँ चाव से नहीं अपनाना चाहतीं। यह भी एक सच्चाई है कि और चीज़ों की कीमतें चाहे जितनी बढ़ी हों, लेकिन मिट्टी के बरतनों और मिट्टी से बनाई गई चीज़ों की कीमतें बढ़ी भी हैं तो बहुत ज़्यादा नहीं।

हम सबके मन में रहता है कि क्या हुआ, यह माटी का ही तो है। कुछ दिनों पहले मेरे एक मित्र अपने लिए माटी के कुछ गमले खरीद रहे थे और सात-आठ-दस रुपए के गमलों की कीमत भी वह आदतन कम करा रहे थे। इसपर उनकी बेटी ने धीरे से कहा, "इनकी कीमतें क्यों कम करा रहे हैं।" मुझे उसकी बात अच्छी लगी! आमतौर पर कुंभकार के हिस्से में सचमुच बहुत थोड़ी-सी ही राशि आती है। पर सच पूछिए तो बहुत ज़्यादा राशि की उम्मीद वह कभी करता भी नहीं रहा। हमारे देश-समाज में उसकी भूमिका सचमुच अद्‌भुत रही है। कबीर ने भले ही यह कहा हो —

माटी कहे कुम्हार से, तू क्या रौंदे मोय।
एक दिन ऐसा आएगा, मैं रौंदूँगी तोय।।

लेकिन कुम्हार ने माटी से अपना रिश्ता कभी अहंकारवाला बनाया ही नहीं। उसका रिश्ता तो इसके साथ एक बहुत गहरे लगाव और प्रेम का रहा है। बिना उस प्रेम और लगाव के माटी की मूरतें संभव ही कहाँ होतीं। कुंभकार की माटी ने इस देश में एक-से-एक चमत्कार प्रस्तुत किए हैं। बंगाल के विष्णुपुर के टेराकोटा के मंदिर हों या बाँकुड़ा के घोड़े या फिर दुर्गा और काली की प्रतिमाएँ — बहुत बड़े आकार में भी कुंभकारों और शिल्पियों ने अद्‌भुत चीज़ें माटी से बनाई हैं।

माटी से बरतन, मूर्तियाँ और सज्जात्मक वस्तुएँ ही नहीं बनती रही हैं, माटी के खिलौनों की भी एक बड़ी दुनिया रही है, और है। 'मृच्छकटिकम्' यानी मिट्‌टी की गाड़ी का वर्णन हमारे साहित्य और आख्यानों में तो रहा ही है, इसे गाँव में धूल से सने बच्चे सचमुच खींच कर खुश होते रहे हैं।

दीवाली आ रही है। बिजली के लट्टुओं और मोमबत्तियों की जगमगाहट के बीच अभी भी संभवतः माटी के दीये ही सबसे ज़्यादा दिखाई पड़ेंगे। चाहे धनी हो या निर्धन, माटी का दीया वह घर में रखना ही चाहता है। पता नहीं, ये दीये कितने लाख या करोड़ हर साल बनते होंगे। आधुनिक काल में अब कुछ नई चीज़ें भी माटी से बनने लगी हैं या बनवाई जाने लगी हैं। इसे भी शुभ लक्षण ही मानें, क्योंकि अगर ये किसी लहर के तहत भी बनवाई जा रही हों तो भी क्या हर्ज है। पिछले वर्ष एक परिवार ने हमारे घर दीवाली पर माटी की एक थाली में माटी के लक्ष्मी-गणेश और कुछ दीयों समेत खील-बताशे भेजे थे। माटी की यह थाली, उस पर लक्ष्मी-गणेश और कुछ दीये अपने आप में एक कलाकृति की तरह लग रहे थे। यह हमारे पास अभी भी सुरक्षित हैं। ऐसी ही और भी कितनी ही चीज़ें पर्व-त्योहारों और दीवाली पर बनने लगी हैं।
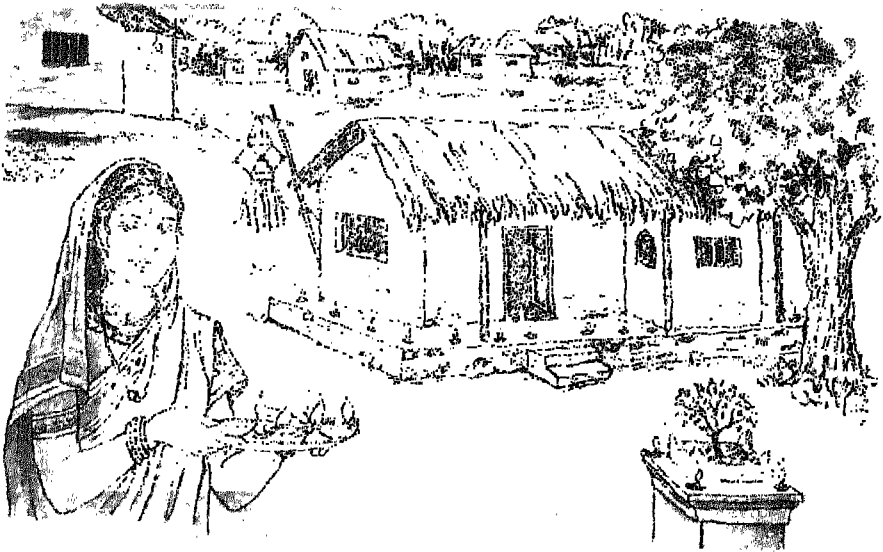
इस बीच दूर-दराज़ के आदिवासी और ग्रामीण इलाकों में उन कलाकारों की खोज-खबर भी काफ़ी ली गई है जो माटी के अप्रतिम काम करते रहे हैं। इनके बनाए अद्‌भुत चित्रों, भित्तिचित्रों और मूर्ति-शिल्पों की एक बहुत बड़ी दुनिया सामने आई है। यह दुनिया अपने रंग-रूप में ही नहीं बड़ी है, उस अद्‌भुत सौंदर्यबोध में भी बड़ी है जिसे हमारे लोक-मानस ने सदियों में अर्जित किया है। माटी की मूर्तियाँ बनानेवाले हमारे कई कलाकार भारत महोत्सवों में विदेश भी हो आए हैं और अपनी कला से उन्होंने विदेशी दर्शकों को भी चमत्कृत किया है। पर यह तो संयोग मात्र था। वे अपनी कला का सृजन किसी प्रलोभन में नहीं करते रहे हैं।

सच्चाई तो यह है कि वे स्वयं उसे कला भी नहीं मानते रहे हैं, अपने जीवन का ही एक अभिन्न अंग मानते रहे हैं। संग्रहालयों और एंपोरियमों में पहुँचकर वे भले थोड़ा-बहुत अलग ढंग से सोचने लगे हों, पर मूल रूप से तो उनमें माटी ही बसी है। उड़ीसा में बननेवाली खपरैलों में चिड़ियों की आकृतियाँ देखकर शहरी दर्शक भले ही चकित और विस्मित होते हों, पर जहाँ वे बनती हैं वहाँ बनाने की शुरुआत बड़ी सहजता से हुई थी। माटी की चीज़ों की यह एक विशेषता है कि वे अधिक दिनों तक नहीं टिकतीं। पर माटी की वे चीज़ें जो अच्छी तरह पका ली गई हों, वे तो सैकड़ों साल भी चल जाती हैं। सौंख की खुदाई में माटी की जो नन्हीं-नन्हीं मूर्तियाँ और सज्जात्मक चीजें मिली थीं,

वस्तुओं को प्रमुखता देते हैं। सूरजकुंड का मेला एक ऐसा ही मेला है जो प्रतिवर्ष दिल्ली के पास लगता है। दूसरा उदयपुर के शिल्पग्राम का वार्षिक मेला है। पर माटी की चीज़ें तो इस देश में सदियों से मेलों में बिकती रही हैं। कोई ऐसा मेला न होगा, जहाँ माटी से बने खिलौने या माटी से बनी मूर्तियाँ बिक्री के लिए न आती रही हों।

संभवतः देश में कोई ऐसा गाँव न होगा, जहाँ कुंभकारों का एक घर न रहा हो और उसके घर के पास ही एक आँवा न रहा हो। शहरों और कस्बों में भी कुंभकारों के घर रहे हैं और आज भी हैं। इनकी दुनिया कहीं-कहीं तो बढ़ी है और कहीं-कहीं बिलकुल सिमटती गई है।

माटी के कुल्हड़ों की जगह कागज़ के गिलास आ गए। पर बंगाल से लेकर देश के अनेक प्रदेशों में चाय की दुकानों पर आज भी छोटे-बड़े कुल्हड़ों में चाय मिलती है। कई स्टॉल ऐसे भी मिलेंगे जो काँच का गिलास भी रखते हैं और साथ ही कुल्हड़ भी। माटी के बरतनों के प्रति एक लगाव अभी भी बना हुआ है। सच पूछिए तो यह इस देश से जाएगा भी नहीं और उसे जाना चाहिए भी नहीं, क्योंकि फेंका हुआ माटी का कुल्हड़ अन्य चीज़ों की बनिस्बत कम गंदगी पैदा करता है। ज़्यादा-से-ज़्यादा वह टूट-फूटकर अपने कुछ टुकड़े रास्ते में छितरा देता है, जो अंततः माटी में ही मिल जाते हैं।

माटी को पकाने की तरह-तरह की विधियाँ रही हैं। अलग-अलग जगहों की माटी के गुण-दोष भी बहुत-से बताए गए हैं। कुछ इलाकों की काली मिट्टी से बननेवाले बरतनों का एक अपना ही स्वरूप है। बहुत परिष्कृत ढंग से पका ली गई चीज़ें सिरेमिक या 'स्टूडियो पॉटरी' के क्षेत्र में आ जाती हैं। पर अंततः हैं तो वे भी माटी की ही।

माटी से बननेवाली चीज़ों की यह महिमा अक्सर हमारी आँखों से ओझल रहती है, क्योंकि माटी की चीज़ें हैं ही इतनी सहज-सुलभ कि हम उनकी ओर आमतौर पर उतना ध्यान नहीं देते, जितना किसी धातु या प्लास्टिक आदि से बनी चीज़ों पर। दीवाली ज़रूर एक ऐसा त्योहार है जब माटी के दीये, माटी के लक्ष्मी-गणेश की मूर्तियाँ और सज्जा की तमाम दूसरी चीज़ों की ओर हमारा ध्यान जाता है और आग्रहपूर्वक ही हम माटी से बनाई गई ये चीज़ें खरीदते हैं। दीवाली से जुड़ी हुई और सब चीज़ों में मुझे यह पक्ष सबसे अधिक प्रिय लगता है। माटी के दीये की रोशनी पर भी एक अलग तरह से ध्यान जाता है। क्या यह सच नहीं है कि आज भी दीया या दीप कहते ही हमारे मन में माटी के ही दीये का चित्र उभरता है?

— प्रयाग शुक्ल

प्रश्न-अभ्यास

बोध और विचार

(क) मौखिक

1. कुंभकारों की नई पीढ़ी कुंभकार के पेशे को खुशी से क्यों नहीं अपनाना चाहती है?
2. मिट्टी के बरतनों की कीमतें बहुत ज़्यादा क्यों नहीं बढ़ पाईं?
3. कुंभकार ने माटी के साथ कैसा संबंध जोड़ना चाहा है?

4. लेखक ने माटी से नई-नई वस्तुओं के बनने को शुभ लक्षण क्यों कहा है?
5. माटी की वस्तुओं को किन-किन मेलों में प्रमुखता मिलने लगी है?
6. लेखक माटी के कुल्हड़ को अन्य चीज़ों से बेहतर क्यों मानता है?

(ख) लिखित

1. लेखक ने परंपरा और आधुनिकता, दोनों ही दृष्टियों से माटी के महत्त्व को उजागर किया है। टिप्पणी कीजिए।
2. लेखक कबीर के दोहे से सहमत क्यों नहीं है?
3. लेखक को अपने मित्र की बेटी की कौन-सी बात पसंद आई और क्यों?
4. माटी से कौन-कौन-सी अद्‌भुत रचनाएँ हुई हैं?
5. आशय स्पष्ट कीजिए :
   - बिना उस प्रेम और लगाव के माटी की मूरतें संभव ही कहाँ होती हैं।
   - इनके बनाए अद्‌भुत चित्रों, भित्तिचित्रों और मूर्ति-शिल्पों की एक बहुत बड़ी दुनिया सामने आई है।
6. हमारे लोक-कलाकार अपनी कृतियों को कला क्यों नहीं मानते हैं?
7. हम माटी से बननेवाली चीज़ों के महत्त्व पर क्यों ध्यान नहीं दे पाते हैं?
8. लेखक को दीवाली से संबंधित सजावट की वस्तुओं में से क्या अधिक प्रिय है और क्यों?
9. "फिर-फिर उठती है माटी की लौ" शीर्षक में 'माटी की लौ' से लेखक का क्या अभिप्राय है और यह लौ फिर-फिर क्यों उठती है?

भाषा-अध्ययन

1. निम्नलिखित शब्दों का शुद्‌ध उच्चारण कीजिए :
   कौशल, मूर्तियाँ, आदतन, लट्टुओं, महोत्सव, संग्रहालय, शिल्पग्राम, कुल्हड़, भित्तिचित्र खपरैल, दीवाली।
2. निम्नलिखित शब्दों में से जातिवाचक और भाववाचक संज्ञाएँ छाँटिए :
   परपंरा, बरतन, सच्चाई, माटी, आदत, चमत्कार, कुल्हड़, महिमा, संग्रहालय।

3. निम्नलिखित शब्दों के प्रत्यय और मूल शब्द उदाहरण के अनुसार अलग कीजिए :
उदाहरण : कुंभकार = कुंभ + कार, सज्जात्मक = सज्जा + आत्मक
फ़िल्मकार, भ्रमात्मक, विध्वंसात्मक, रचनात्मक, रचनाकार, चित्रकार।

4. निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए और समझिए :
(क) हर गली-मुहल्ले में रेहड़ी **पर** भी मिट्टी के गमले बेचने वाले मिल जाएँगे।
(ख) ऐसी ही और भी कितनी चीज़ें पर्व-त्योहारों और दीवाली **पर** बनने लगी हैं।
(ग) आमतौर **पर** कुंभकार के हिस्से में सचमुच बहुत थोड़ी-सी ही राशि आती है।
(घ) **पर** माटी की चीज़ें तो इस देश में सदियों से मेलों में बिकती रही हैं।
उपर्युक्त (क), (ख) और (ग) वाक्यों में वाक्य (क) में 'पर' का अर्थ 'के ऊपर' है, वाक्य (ख) में 'के समय' और वाक्य (ग) में 'से'। वाक्य (घ) में पर का अर्थ समुच्चयबोधक अव्यय 'किंतु' या 'लेकिन' के अर्थ में हुआ है। 'पर' का प्रयोग 'पंख' संज्ञा के अर्थ में भी होता है; जैसे – मोर के पर बहुत सुंदर हैं। 'पर' के इन चारों प्रकारों के दो-दो वाक्य बनाकर लिखिए।

5. निम्नलिखित वाक्यों को उदाहरण के अनुसार बदलिए :
उदाहरण : माटी की सज्जात्मक वस्तुएँ भी शहरों में काफ़ी बिकने लगी हैं।
⟹ माटी की सज्जात्मक वस्तुएँ भी शहरों में काफ़ी बिकती हैं।
(क) और भी कितनी ही चीज़ें पर्व-त्योहारों और दीवाली पर बनने लगी हैं।
(ख) माटी की वस्तुओं का कारोबार अब विदेशों में भी होने लगा है।
(ग) कुछ चीज़ें तो विदेश भी जाने लगी हैं।
(घ) हम माटी से बनाई गई कई चीज़ें खरीदने लगे हैं।
(ङ) कुंभकारों की दुनिया कहीं-कहीं तो बढ़ने और कहीं-कहीं सिमटने लगी है।

योग्यता-विस्तार

1. "मिट्टी के दीयों में हमारी संस्कृति सुरक्षित है।"– इस विषय पर कक्षा में चर्चा कीजिए।

2. हमें हिंदी भाषा में मिट्टी से संबंधित अनेक मुहावरे मिलते हैं; यथा — मिट्टी में मिलाना, मिट्टी कर देना। मिट्टी से जुड़े ऐसे कुछ अन्य उदाहरणों का संकलन कीजिए और उन्हें अर्थ सहित चार्ट पर प्रस्तुत कीजिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

माटी - मिट्टी
लौ - शिखा, लपट
गनीमत - संतोष की बात
सज्जात्मक वस्तुएँ - सजाने की वस्तुएँ
रौंदना - पैरों से कुचलना
मृच्छकटिकम् - महाकवि शूद्रक का प्रसिद्ध संस्कृत नाटक, जिसका अर्थ 'मिट्टी की गाड़ी' है
आख्यान - कथा-कहानी, पौराणिक कथा
कलाकृति - कलात्मक रचना
अप्रतिम - अनुपम, बेजोड़
भित्तिचित्र - दीवार पर बने हुए चित्र
सृजन - निर्माण करना, बनाना
प्रलोभन - लालच
आँवा - वह भट्ठी जिसमें कुम्हार मिट्टी के बरतन पकाते हैं
परिष्कृत - शुद्ध किया हुआ

4. प्राणी वही प्राणी है

(प्रस्तुत कविता में सच्चे प्राणी के कुछ लक्षणों का उल्लेख बड़े काव्यात्मक ढंग से हुआ है। कवि की दृष्टि में वही सच्चा प्राणी है जो दुख-दर्द में दूसरे प्राणी के काम आए, असहाय को सहारा दे, जीवन में आनेवाली विपत्तियों में टूटे नहीं, दूसरों को प्रसन्न करने के लिए लोभ के वशीभूत होकर मुँहदेखी बात न कहे, निर्भीकतापूर्वक सत्य-पथ पर चले और ठहरे हुए जीवन को आगे बढ़ाने में अपना योगदान करे।)

तापित को स्निग्ध करे
प्यासे को चैन दे,
सूखे हुए अधरों को
फिर से जो बैन दे,
ऐसा सभी पानी है।
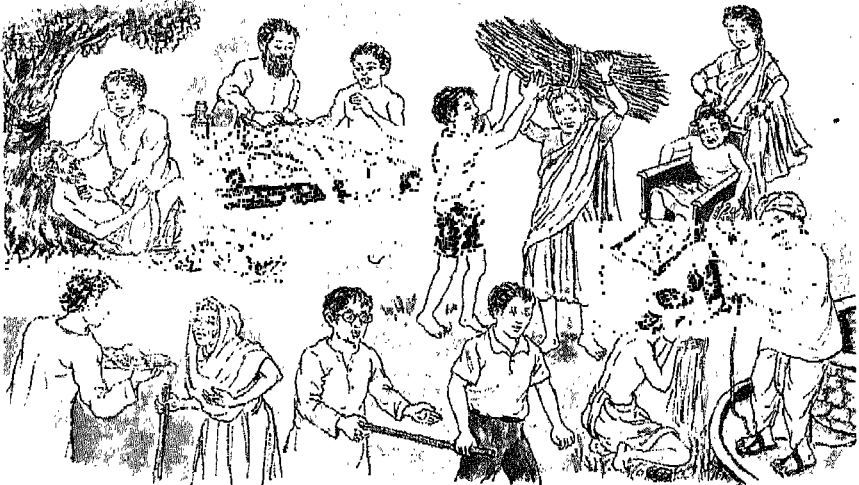
लहरों के आने पर
काई-सा फटे नहीं,
रोटी के लालच में
तोते-सा रटे नहीं,
प्राणी वही प्राणी है।

लँगड़े को पाँव और
लूले को हाथ दे,
रात की सँभार में
मरने तक साथ दे,
बोले तो हमेशा सच
सच से हटे नहीं,
झूठ के डराए से
हरगिज़ डरे नहीं,
सचमुच वही सच्चा है।

माथे को फूल जैसा
अपने चढ़ा दे जो,
रुकती-सी दुनिया को
आगे बढ़ा दे जो,
मरना वही अच्छा है।

प्राणी का वैसे और
दुनिया में टोटा नहीं,
कोई प्राणी बड़ा नहीं
कोई प्राणी छोटा नहीं।

— भवानी प्रसाद मिश्र

प्रश्न-अभ्यास

बोध और सराहना

(क) मौखिक

1. कविता की किन पंक्तियों में निम्नलिखित विचार व्यक्त हुए हैं —
   (क) सच्चा प्राणी वही है, जो जीवन में आने वाली विविध घटनाओं के उतार-चढ़ाव से टूटे-बिखरे नहीं।
   (ख) पद और पैसे आदि के लोभवश अपने दिल-दिमाग को गिरवी रख जो दूसरे की भाषा न बोले।
2. कवि के अनुसार रुकती-सी दुनिया को किस प्रकार आगे बढ़ाया जा सकता है?
3. "लँगड़े को पाँव और लूले को हाथ" देने से कवि का क्या आशय है?

(ख) लिखित

1. कवि की दृष्टि में पानी की सार्थकता क्या है? मनुष्य के संदर्भ में इस कथन का क्या आशय है?

2. "रात की सँभार में मरने तक साथ दे" का भाव स्पष्ट कीजिए।
3. "कोई प्राणी बड़ा नहीं, कोई प्राणी छोटा नहीं",
   कविता के आधार पर बताइए कि प्राणी कब छोटा और कब बड़ा बन जाता है?
4. कविता में सच्चे प्राणी के किन-किन लक्षणों का उल्लेख है?
5. भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए :
   (क) रोटी के लालच में तोते-सा रटे नहीं
   (ख) लहरों के आने पर काई-सा फटे नहीं
   (ग) माथे को फूल जैसा अपने चढ़ा दे जो

योग्यता-विस्तार

"वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे" – मैथिलीशरण गुप्त की इस कविता को कंठस्थ कीजिए और इसकी तुलना प्रस्तुत कविता से कीजिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

तापित - धूप में जलता हुआ, पीड़ित
स्निग्ध - शीतल, चिकना
अधर - ओठ
बैन - वाणी
रात की सँभार में मरने तक साथ दे - विपत्ति और निराशा में आजीवन साथ दे
रुकती-सी दुनिया - दुनिया की प्रगति जब थम रही हो
टोटा - कमी

5. भीखाईजी कामा

(प्रस्तुत पाठ में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अपूर्व योगदान देनेवाली अद्भुत साहसी महिला भीखाईजी कामा के जीवन का विवरण प्रस्तुत किया गया है। इस पाठ में लेखक भीखाईजी कामा के जीवन के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डालते हुए बताता है कि उन्होंने किस प्रकार सक्रिय राजनैतिक जीवन में प्रवेश किया, देशभक्ति और समाजसेवा के लिए सुख-सुविधा से भरीपूरी गृहस्थी का त्याग किया और सुदूर विदेश में भारतीय राष्ट्रवादियों के संपर्क में आकर मन के कोने में दबी हुई चिनगारी को स्वतंत्रता की मशाल में परिणत कर दिया। उन्होंने अपनी क्रांतिकारी गतिविधियों से ब्रिटिश सरकार की नींद हराम कर दी, भारत के नौजवानों को स्वतंत्रता के महायज्ञ में आहुति देने के लिए उत्प्रेरित किया और पहली बार अंतर्राष्ट्रीय मंच पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया।)

विदेश में रहकर भारत के स्वाधीनता संग्राम का बिगुल फूँकने और अंग्रेज़ी साम्राज्यवाद के विरुद्ध संघर्ष करनेवालों में श्रीमती भीखाईजी कामा का नाम कभी विस्मृत नहीं किया जा सकता। अंतर्राष्ट्रीय मंच पर पहली बार भारतीय ध्वज फहराने का श्रेय भीखाईजी कामा को है।

भीखाईजी का जन्म 24 सितंबर 1861 ई. को मुंबई के एक संपन्न व्यवसायी परिवार में हुआ। उनके पिता का नाम सोराबजी फ्रामजी पटेल और माँ का नाम जीजीबाई था। उन्होंने अपनी प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर की शिक्षा 'एलेक्जेंड्रा गर्ल्स एजुकेशन इंस्टीट्यूशन' में प्राप्त की। वे एक ऐसे प्रगतिशील परिवार और सामाजिक परिवेश में पली-बढ़ीं, जहाँ स्त्री-शिक्षा और राष्ट्र की स्वाधीनता के प्रति सम्मान का भाव था।

भीखाईजी के जन्म से केवल चार वर्ष पहले सन् 1857 के राष्ट्रीय स्वतंत्रता-संग्राम की ज्वाला जल चुकी थी और इसकी चिनगारी पूरे देश में फैल रही थी । देश में स्वाधीनता की नई चेतना अँगड़ाइयाँ ले रही थी। भारतवासियों पर अंग्रेज़ों का दमन-चक्र अधिक तेज़ गति से चलने लगा था। देश के विभिन्न भागों और विदेशों में भी, विशेषकर इंग्लैंड और फ्रांस में अंग्रेज़ों के विरुद्ध संघर्ष के लिए गुप्त संगठनों की स्थापना हो रही थी। वे इस क्रांतिकारी वातावरण से प्रभावित हुए बिना न रह सकीं और क्रांतिकारी गतिविधियों में सक्रियता से भाग लेने लगीं। इससे उनके जीवन की दिशा बदल गई।

भीखाईजी का विवाह 3 अगस्त 1885 ई. को रुस्तमजी कामा के साथ हुआ। वे बैरिस्टर थे और उनके परिवार की गिनती धनी-मानी परिवारों में होती थी। यहाँ उन्हें गृहस्थ जीवन की सारी सुख-सुविधाएँ उपलब्ध थीं, लेकिन गृहस्थी में उनका मन नहीं लगा। ब्रिटिश शासन के दमन-चक्र में पिस रहे देशवासियों की दशा उनसे देखी नहीं जाती थी। वे समाजसेवा की ओर उन्मुख हुईं।

1896 ई. में जब मुंबई में महामारी फैली, भीखाईजी घर की सारी सुख-सुविधाएँ छोड़कर प्लेग के शिकार गरीब लोगों की सेवा में जुट गईं। उनके इस निःस्वार्थ सेवाभाव की तुलना केवल फ्लोरेंस नाइटिंगेल के आत्मत्याग से की जा सकती है। लेकिन समाजसेवा का यह कार्य उनके पति एवं परिवार को स्वीकार नहीं था। उनके पति ब्रिटिश शासन के समर्थक थे। इस वैचारिक मतभेद का प्रभाव उनके पारिवारिक जीवन पर भी पड़ा। अंततः 1901 ई. में पति-पत्नी एक-दूसरे से अलग हो गए।

1902 ई. में भीखाईजी गंभीर रूप से बीमार पड़ीं। अपने इलाज के लिए उन्हें इंग्लैंड जाना पड़ा। 1902 ई. से 1907 ई. के अपने लंदन प्रवास के दौरान वे दादाभाई नौरोजी के संपर्क में आईं और उन्हीं की देखरेख में उनका राजनीतिक जीवन शुरू हुआ। आगे चलकर उनका कार्यक्षेत्र और व्यापक हुआ। वे प्रजातांत्रिक पार्टी की सदस्या भी बनीं।

1905 ई. में भीखाईजी महान क्रांतिकारी और देशभक्त श्यामकृष्ण वर्मा के संपर्क में आईं। वे श्री वर्मा द्वारा स्थापित 'इंडियन होम रूल सोसाइटी' की प्रवक्ता बनीं और उनके पत्र 'द इंडियन सोशियोलॉजिस्ट' से भी जुड़ गईं। वे भारतीय क्रांतिकारियों की मदद के लिए खिलौनों में छिपाकर पिस्तौल आदि हथियार भारत भेजने लगीं। लंदन में आयोजित सभाओं में वे भारत की स्वाधीनता के लिए हर संभव तरीके अपनाने की अपील करतीं। भारत की अखंडता की रक्षा के लिए उन्होंने हिंदू-मुस्लिम एकता पर ज़ोर दिया।

अंग्रेज़ भारत के स्वाधीनता संघर्ष को पूरी दुनिया में बदनाम करने में लगे हुए थे। इसका मुँहतोड़ उत्तर देने के लिए इंग्लैंड में भीखाईजी कामा, वीर सावरकर आदि के नेतृत्व में भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की अर्धशती मनाई गई। ब्रिटिश सरकार ने जब लाला लाजपतराय और सरदार अजीत सिंह को गिरफ़्तार कर उन्हें भारत से निष्कासित किया तो श्रीमती कामा ने भारत और विदेशों में रहनेवाले अपने देशवासियों के नाम एक भावपूर्ण अपील जारी की, जिसे दुनिया के विभिन्न देशों के अखबारों ने प्रकाशित किया। इस अपील का इतना गहरा असर हुआ कि उससे ब्रिटिश सरकार पूरी तरह हिल गई। गिरफ़्तारी के इस मामले को उसे ब्रिटिश संसद 'हाउस ऑफ़ कॉमन्स' के समक्ष रखने के लिए विवश होना पड़ा।

इंग्लैंड से भीखाईजी ने फ्रांस, जर्मनी, अमेरिका, स्विट्ज़रलैंड आदि देशों की यात्राएँ कीं और इन देशों के नेताओं से भेंट की। उन्होंने यूरोपीय देशों में भारत की स्वाधीनता की माँग को लेकर इंग्लैंड के खिलाफ़ जनमत तैयार करने की महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके क्रांतिकारी भाषणों से नाराज़ होकर ब्रिटिश सरकार ने उन पर और दूसरे क्रांतिकारियों पर अंकुश कड़ा कर दिया। जब उनका वहाँ काम करना मुश्किल हो गया और उन्हें अपनी गिरफ़्तारी की आशंका हो गई तो वे लंदन छोड़कर पेरिस आ गईं।

पेरिस उस समय भारतीय क्रांतिकारियों का गढ़ बन गया था । वहाँ आकर वे भारतीय राष्ट्रवादियों की नेता बन गईं। उन्हें लोग 'भारतीय क्रांति की जननी' कहते हैं। यहाँ उनके साथियों में लाला हरदयाल, वीर सावरकर और वीरेंद्र चट्टोपाध्याय जैसे क्रांतिकारी थे। इस बीच उनकी क्रांतिकारी गतिविधियों का विस्तार बर्लिन, न्यूयार्क और टोकियो तक हो गया।

अगस्त 1907 ई. में जर्मनी के स्तुतगार्त नगर में अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन का आयोजन हुआ। उस सम्मेलन में भीखाईजी कामा को भारत के प्रतिनिधि के रूप में आमंत्रित किया गया। इस सम्मेलन में 18 अगस्त 1907 ई. को उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय ध्वज फहराया। इस झंडे का डिज़ाइन उन्होंने वीर सावरकर के साथ मिलकर

तैयार किया था। बाद में इसी ध्वज में परिवर्तन करके भारत का राष्ट्रीय ध्वज बनाया गया। इस सम्मेलन में उन्होंने अत्यंत ओजस्वी भाषण दिया। श्रोताओं को लगा कि उनके माध्यम से पूरा भारत बोल रहा है। सम्मेलन को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा था – "यह भारत की स्वाधीनता का झंडा है। देखिए, इसने जन्म ले लिया है। शहीद भारतीय युवकों के रक्त से इसे पवित्र किया जा चुका है। मैं आप भद्रजनों का आह्वान करती हूँ कि आप खड़े होकर भारतीय स्वाधीनता की इस पताका को सलामी दें। इस झंडे के नाम पर मैं विश्वभर के स्वतंत्रता प्रेमियों से अपील करती हूँ कि वे संपूर्ण मानव जाति के पाँचवें हिस्से को स्वतंत्र कराने में सहयोग करें।"

इस सम्मेलन में उन्होंने भारत के लिए संपूर्ण स्वतंत्रता की माँग करते हुए एक प्रस्ताव भी प्रस्तुत किया।

अक्तूबर 1907 ई. में जब भीखाईजी न्यूयार्क गईं तो अमेरिकी अखबारों ने उन्हें 'भारत की जोन ऑफ़ आर्क' कहा। सितंबर 1909 ई. में भीखाईजी कामा ने विदेश में वंदेमातरम् का प्रकाशन भी साप्ताहिक समाचारपत्र के रूप में प्रारंभ कर दिया। इस समाचारपत्र में उन्होंने भारत के बारे में ब्रिटिश सरकार की नीतियों पर जमकर प्रहार किया और अंग्रेज़ों के अत्याचारों से संबंधित लेख प्रकाशित कर भारत की स्वाधीनता के पक्ष में विश्व जनमत तैयार किया।

1914 ई. में प्रथम विश्वयुद्ध आरंभ हुआ। उन्होंने अपने समाचारपत्र में भारतीय सैनिकों से अपील की कि वे इस युद्ध में शामिल न हों। उनकी इन गतिविधियों के कारण फ्रांस सरकार ने उन्हें नज़रबंद कर दिया। विश्वयुद्ध की समाप्ति पर 1918 ई. में उन्हें मुक्ति मिली। लंबे समय तक भारत की स्वतंत्रता

की लड़ाई लड़ते-लड़ते वे थक गई थीं। वे इन दिनों गंभीर रूप से अस्वस्थ भी हो गई थीं। ब्रिटिश सरकार उन्हें भारत आने की अनुमति नहीं दे रही थी। अंततः 1934 ई. में तिहत्तर वर्ष की उम्र में उन्हें भारत लौटने की अनुमति मिली। वे 1935 ई. में भारत आईं। दस महीने की लंबी बीमारी के बाद मुंबई में उनका निधन हो गया। भारतीय क्रांति की वह मशाल बुझ गई। अपनी अद्भुत संगठन शक्ति के बल पर ब्रिटिश सरकार की नींव हिला देनेवाली वह क्रांतिकारी वीरांगना चिरनिद्रा में सो गई, किंतु उनके देश-प्रेम, त्याग और बलिदान की अमर गाथा हमारे लिए सदा प्रेरणा का स्रोत बनी रहेगी।

प्रश्न-अभ्यास

बोध और विचार

(क) मौखिक

1. गृहस्थ जीवन में भीखाईजी कामा का मन क्यों नहीं लगा?
2. भीखाईजी कामा की किस विशेषता के कारण उनकी तुलना 'फ्लोरेंस नाइटिंगेल' से की गई है?
3. पेरिस में भीखाईजी कामा के कौन-कौन साथी थे?
4. भीखाईजी के राजनीतिक जीवन की शुरुआत कैसे हुई?
5. भीखाईजी को लंदन क्यों छोड़ना पड़ा?
6. फ्रांस सरकार ने भीखाईजी को नज़रबंद क्यों कर दिया?
7. भारतीय राष्ट्रीय ध्वज के निर्माण में भीखाईजी ने क्या भूमिका निभाई?

(ख) लिखित

1. हमारे स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में भीखाईजी कामा का नाम क्यों प्रसिद्ध है?
2. भीखाईजी कामा का पालन-पोषण किस प्रकार के परिवेश में हुआ?
3. ब्रिटिश सरकार को 'हाउस ऑफ़ कॉमन्स' में किस मामले को रखना पड़ गया और क्यों?
4. भीखाईजी ने 'वंदेमातरम्' नामक साप्ताहिक समाचारपत्र का प्रकाशन कब शुरू किया? इसका उद्देश्य क्या था?
5. टिप्पणी कीजिए कि अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन भीखाईजी के क्रांतिकारी जीवन का महत्त्वपूर्ण चरण था?
6. अमेरिकी अखबारों ने भीखाईजी कामा को 'भारत की जोन ऑफ़ आर्क' क्यों कहा?

भाषा-अध्ययन

1. निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए :
   स्वतंत्रता-संग्राम, स्वाधीनता-संघर्ष, प्रजातांत्रिक, कर्मक्षेत्र, क्रांतिकारी, गिरफ़्तारी, प्रतिनिधि, सम्मेलन।
2. यदि शब्द के प्रांरभ में 'अ' हो तो 'इक' प्रत्यय जुड़ने पर वह 'आ' हो जाता है; जैसे –
   प्रथम + इक = प्राथमिक, मध्यम + इक = माध्यमिक, सप्ताह + इक = साप्ताहिक। पाठ से 'इक' प्रत्यय वाले ऐसे शब्द छाँटकर लिखिए जिनमें 'इक' प्रत्यय जुड़ने पर 'अ' का 'आ' हो गया हो।
3. समस्त पद में यदि दो पदों के बीच किसी कारक चिह्न का लोप हो तो वहाँ तत्पुरुष समास होता है; जैसे :
   स्त्री-शिक्षा = स्त्रियों के लिए शिक्षा, स्वतंत्रता-संग्राम = स्वतंत्रता के लिए संग्राम, दमन-चक्र = दमन का चक्र
   निम्नलिखित समस्त पदों में से तत्पुरुष समास चुनिए :
   धनी-मानी, पशु-पक्षी, समाज-सेवा, लंदन-प्रवास, स्वतंत्रता-प्रेमी।

4. 'और' का प्रयोग विशेषण, क्रियाविशेषण और योजक के लिए होता है; जैसे :
   (क) मुझे **और** फल चाहिए।
   (ख) कुछ **और** पास आइए।
   (ग) क्रांतिकारी **और** देशभक्त श्यामकृष्ण वर्मा के संपर्क में आईं।
   (घ) वे दादाभाई नौरोजी के संपर्क में आईं **और** उन्हीं की देखरेख में उनका राजनीतिक जीवन शुरू हुआ।

   ध्यान दीजिए, वाक्य (क), (ख) तथा (ग) में 'और' शब्द का प्रयोग अलग-अलग रूप में हुआ है। वाक्य (क) में 'और' विशेषण के रूप में प्रयुक्त हुआ है। वाक्य (ख) में 'और' क्रियाविशेषण के रूप में प्रयुक्त हुआ है तथा वाक्य (ग) में 'और' शब्द दो पदों के बीच तथा वाक्य (घ) में दो उपवाक्यों के बीच योजक अव्यय का कार्य कर रहा है।

   पाठ से चारों प्रकार के 'और' के प्रयोग छाँटकर लिखिए।

5. निम्नलिखित वाक्यों को उदाहरण के अनुसार बदलिए :

   उदाहरण : उसे गिरफ़्तारी के इस मामले को ब्रिटिश संसद के समक्ष रखने के लिए विवश होना पड़ा।

   ⟹ वह गिरफ़्तारी के मामले को ब्रिटिश संसद के समक्ष रखने के लिए विवश हो गई।

   (क) उन्हें समाज सेवा की ओर उन्मुख होना पड़ा।
   (ख) उन्हें अपनी गिरफ़्तारी की आशंका से पेरिस आना पड़ा।
   (ग) इस क्रांतिकारी वातावरण से उन्हें प्रभावित होना पड़ा।

6. निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग अपने वाक्यों में कीजिए :

   व्यवसायी, समाजसेवा, देखरेख, अंकुश, ओजस्वी, लड़ते-लड़ते।

योग्यता-विस्तार

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एनीबेसेंट, सरोजिनी नायडू, कस्तूरबा गांधी आदि अनेक महिलाओं ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया है। ऐसी कुछ महिलाओं के कार्यों के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए और कक्षा की भित्तिपत्रिका पर प्रस्तुत कीजिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

बिगुल - युद्ध प्रारंभ होने से पहले बजनेवाला वाद्ययंत्र
विस्मृत - भुलाया
चेतना - जागृति
दमन-चक्र - विरोधियों को दबाने का प्रयत्न
उन्मुख होना - मुड़ना
सरोकार - लगाव, वास्ता, संबंध
अर्धशती - आधी शताब्दी, पचास वर्ष
निष्कासन - निकालना, बाहर करना
ओजस्वी - जोश पैदा करने वाला
भद्रजन - भला आदमी, शिष्टजन
आह्वान - बुलावा देना
फ्लोरेंस नाइटिंगेल - क्रीमिया के युद्ध में घायल सैनिकों की सेवा हेतु संगठित प्रयास करने वाली प्रसिद्ध अंग्रेज़ महिला जिसे 'लेडी विद द लैंप' कहा गया
जोन ऑफ़ आर्क - फ्रांस के एक किसान की पुत्री जिसकी वीरता से प्रेरित होकर फ्रांसीसियों ने अंग्रेज़ों को आर्लियस से मार भगाया। इस वीरांगना को 'मेड ऑफ़ आर्लियस' की उपाधि से सम्मानित किया गया

6. ऐसे थे गांधी

(अंग्रेज़ों की दासता से मुक्त होने के लिए गांधी जी के नेतृत्व में अनेक आंदोलन हुए। इसके कारण गांधी जी को कई बार जेल यात्राएँ करनी पड़ीं। ऐसी ही एक जेल-यात्रा में गांधी जी के साथ उनके एक अनुयायी श्री शंकरलाल बैंकर भी थे। इस संस्मरण में उन्होंने गांधी जी के जेल जीवन के कुछ प्रेरक प्रसंगों को प्रस्तुत किया है। इसमें गांधी जी के द्वारा अपने पर लगाए विविध प्रतिबंधों का सख्ती से पालन, सविनय अवज्ञा, गांधी जी की कार्य-शैली और उनके व्यक्तित्व के अनूठे पहलुओं का सजीव एवं प्रभावकारी वर्णन है। उनके अद्भुत व्यक्तित्व ने जेल के वार्डर और सुपरिंटेंडेंट पर किस प्रकार अपने स्नेह और सद्व्यवहार की अमिट छाप छोड़ दी, यही इस पाठ का प्रतिपाद्य विषय है।)

बारदोली में 1922 ई. में प्रारंभ किए गए सत्याग्रह के लिए ब्रिटिश सरकार ने गांधी जी को 6 वर्ष की सज़ा दी थी। उन्हें यरवदा जेल में रखा गया था। वहाँ जेल के अधिकारियों को आशंका रहती थी कि गांधी जी ने देश भर में सरकार के सामने जो बवंडर उठाया है, कहीं जेल में भी कुछ वैसा ही न करें। अतः डर के मारे उन लोगों ने उन्हें जेल के एक अलग हिस्से में रखा था। वह त्रिकोणाकार था। उस हिस्से के सारे कमरे खाली करा दिए गए थे। उसमें भी बीच का कमरा गांधी जी के उपयोग के लिए तथा एक मेरे उपयोग के लिए दिया गया था। दो तरफ़ से तो यह हिस्सा बंद था, किंतु एक तरफ़ से आँगन दिखाई देता था।

जेल के अन्य कैदियों के साथ गांधी जी का किसी भी प्रकार का संपर्क नहीं रहना चाहिए, ऐसा जेल के अधिकारियों का विश्वास था और गांधी जी के लिए जो वार्डर नियुक्त किया गया था, उसे इसकी खास हिदायत दी गई थी। पहले तो हिंदू या मुसलमान वार्डर रखे जाते थे किंतु वे देर-सवेर गांधी जी के प्रभाव में आ जाते। इस डर से उनकी चौकसी के लिए एक सोमाली वार्डर नियुक्त किया गया था। उसका नाम था आदम। उस समय अफ़्रीका के सोमालियों ने भी ब्रिटिश सरकार का विरोध किया था और ऐसा करने वालों की धर-पकड़ हुई थी, जिसमें आदम भी पकड़ा गया था। उसको हिंदुस्तान भेजकर यरवदा जेल में रखा गया था।

आरंभ में आदम ने खूब चौकसी रखी। यदि कोई कैदी आँगन से होकर जाता होता और गांधी जी बाहर घूमते होते तो वह स्वभावतः गांधी जी को प्रणाम करने के लिए प्रेरित होता। परंतु आदम किसी को ऐसा कुछ करते देखता तो उसका नाम लिखकर दफ़्तर में अधीक्षक (सुपरिंटेंडेंट) को सूचित कर देता। तीन दिनों तक तो वह अत्यंत सख्ती के साथ पहरा देता रहा, किंतु चौथे दिन वह मेरे पास आया और कहने लगा, "गांधी जी मज़हबी आदमी हैं। उनकी पहरेदारी क्या करनी। सुबह चार बजे उठकर प्रार्थना करते हैं और सारा दिन काम में ही बीत जाता है। उन्हें किसी से बोलने तक का अवकाश नहीं है। ऐसे मज़हबी आदमी की पहरेदारी क्या करूँ?" मैं उसकी बातों का तात्पर्य अच्छी तरह नहीं समझ सका। इतना तो समझ गया कि गांधी जी की दिनचर्या और कार्यक्रमों का प्रभाव उसपर भी पड़ रहा था। वह पहरेदारी की बात छोड़

किस प्रकार गांधी जी की मदद कर सके, यह मौका ढूँढ़ने लगा। उनका जो काम मैं करता था, उसके लिए वह मुझसे कहने लगा, "यह सब मैं करूँगा।"

कुछ दिनों बाद एक सुबह वह अखबार लेकर आया और मुझसे कहने लगा, "देखो, मैं क्या लाया हूँ। टाइम्स अखबार है। ताज़ा अखबार। गांधी जी के लिए लाया हूँ। तुम ले जाओ और गांधी जी को दे दो।"

उन दिनों सत्याग्रही बंदियों को समाचारपत्र नहीं मिलते थे। इस बात की सख्त मनाही थी। फिर भी बाहर की दुनिया में क्या होता है, यह जानने की इच्छा सत्याग्रही कैदियों को रहा करती थी, जो स्वाभाविक भी थी। अतः वे वार्डरों या बाहर जाते कैदियों द्वारा अखबार मँगवाते। आदम को भी इस बात की जानकारी होगी। उसे ऐसा लगा होगा कि गांधी जी को भी अखबार पढ़ने की इच्छा होती होगी, इस कारण कुछ व्यवस्था कर वह अखबार ले आया। परंतु गांधी जी के विचार तो दूसरे कैदियों से अलग ही थे। उनकी लड़ाई सत्याग्रह की थी और उसके अनुसार यदि कानून या नियमों को भंग भी करना था, तो सविनय। एक बार सज़ा होने के बाद जेल के नियमों को अच्छी तरह मानना चाहिए, ऐसा वे कहते थे। उनका कहना था कि यदि इन नियमों को नहीं मानना है तो स्पष्ट विरोध करना चाहिए। चोरी से, लुक-छिपकर कायदे-कानून का विरोध तो हो ही नहीं सकता। अतः आदम द्वारा लाया गया वह अखबार गांधी जी नहीं देखेंगे, यह मैं पहले ही जानता था। मैंने यह बात आदम को समझाई थी, परंतु यह बात उसके दिमाग में बैठी नहीं। कहने लगा, "तुम नहीं दे सकते, तो मैं ही दे दूँगा।" इतना कह कर वह सामने के कमरे में गया और गांधी जी के हाथ में अखबार दे दिया।

गांधी जी ने प्रश्नसूचक दृष्टि से उसकी ओर देखकर पूछा, "आदम! यह क्या है?"

आदम हँसकर कहने लगा, "महाराज, अखबार है, ताज़ा अखबार, तुम्हारे लिए लाया हूँ, देखो।"

गांधी जी ने तुरंत उत्तर दिया, "यह अखबार मैं नहीं देख सकता। यह बात कानून के खिलाफ़ है। तुम वापस ले जाओ।"

आदम उन्हें समझाने लगा, "ताज़ा अखबार है। सब लोग अखबार देखना चाहते हैं। आपके लिए बहुत मुश्किल से लाया हूँ।"

गांधी जी ने कहा, "यह सब मैं समझता हूँ। लेकिन कानून के खिलाफ़ है, इसलिए मैं नहीं देख सकता। तुम इसे ले जाओ, नहीं तो मुझे शिकायत करनी होगी।"
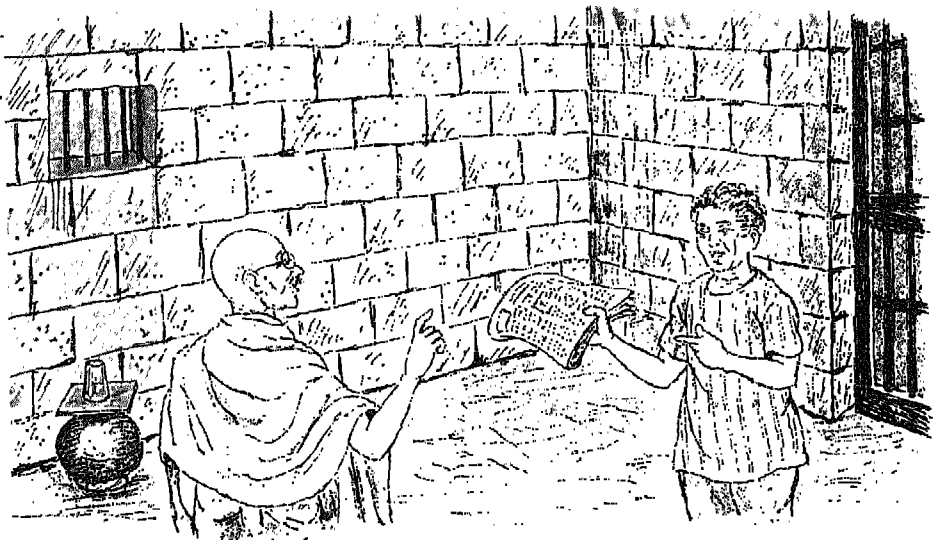
आदम निराश हो गया, कुछ घबराया भी। वह गांधी जी के पास से आकर मुझसे कहने लगा, "महाराज कहते हैं, कानून के खिलाफ़ है। किसका कानून? सरकार तो बुरी है। बुरी सरकार के कानून का ख्याल क्या करना? लेकिन गांधी जी मज़हबी आदमी हैं। वे हमारी बात नहीं सुनते हैं। आप उन्हें समझाएँ।"

मैंने कहा, "मुझसे यह काम नहीं हो सकेगा। गांधी जी ऐसी बातें कभी सुनेंगे भी नहीं। उलटे मुझसे भी नाराज़ होंगे।"

इससे वह दुखी हुआ। इतना अधिक जोखिम उठाकर लाया गया अखबार फाड़ डाला जाए या जला दिया जाए, यह उसे अच्छा नहीं लगा। किसी भी तरह गांधी जी वह अखबार देखें तो उसकी मेहनत, उसका साहस सफल हो। अतः वह मन-ही-मन विचार करने लगा। फिर कोई युक्ति सूझी, तो वह उठकर गांधी जी के पास गया और कहने लगा, "आप तो बहुत बड़े मज़हबी आदमी हैं, आप अखबार नहीं देखेंगे। लेकिन हमको यहाँ जेल में आए काफ़ी दिन गुज़र गए हैं। हमारे मुल्क का क्या समाचार है, यह देखो और हमको सुना दो।"

आदम की यह बात सुनकर गांधी जी को हँसी आई। वे समझ गए कि अखबार पढ़ाने की यह एक युक्ति है। लेकिन फिर सोचा कि इसका इतना अधिक आग्रह है, तो नाराज़ नहीं करना चाहिए। उन्होंने अखबार पढ़ा और सोमालीलैंड में जो लड़ाई चल रही थी, उस विषय का जो समाचार छपा था, उसे सुनाया। इससे आदम बहुत खुश हुआ और तुरंत बाहर आकर छोटे बालकों की तरह हँस-हँस कर कहने लगा, "देखा, गांधी जी ने अखबार पढ़ा। मैंने उन्हें कैसे मनाया!"

इसके बाद तो आदम की गांधी-भक्ति दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही गई। गांधी जी के छोटे-बड़े सभी काम आदम भक्ति के साथ करने लगा। सुबह बहुत जल्दी उठकर चार बजे गांधी जी के लिए गरम पानी भी तैयार कर देता। उसके बाद वह गांधी जी की प्रत्येक प्रवृत्ति में रस लेने लगा। गांधी जी का भी उसपर अब तक अत्यधिक प्रेम हो चुका था।

एक दिन गांधी जी ने सोचा कि यह हिंदुस्तान में रहता है तो इसे उर्दू सीख लेनी चाहिए। अतः उन्होंने उसे उर्दू सीखने के लिए कहा। आदम ने भी यह बात मान ली और गांधी जी से उर्दू सीखने लगा। गांधी जी भी उन दिनों उर्दू का अभ्यास कर रहे थे, अतः उन्हें भी इस कार्य में रस मिल रहा था।

थोड़े महीने इस प्रकार बीते। फिर सूत कातने के अधिक श्रम से गांधी जी की आँखें दुखने लगी थीं। डॉक्टर ने आराम करने के लिए कहा। सुबह जल्दी उठकर सारे दिन काम करने के बदले कम काम करने की सलाह दी। परंतु गांधी जी ने एक भी बात स्वीकार नहीं की। गांधी जी की आँखों में अत्यंत पीड़ा थी जिसका आदम को भी बहुत दुख था। अतः वह उन्हें कम काम करने के लिए समझाने लगा । गांधी जी ने भी उसकी बात सुनी और कहा, "देखो भाई आदम, यह सूरज अपना काम कभी छोड़ता नहीं, ठीक समय पर निकलता है और सारे संसार को रोशनी देता है, तो हम अपना काम कैसे छोड़ें?"

आदम बेचारा यह बात सुनकर चुप हो गया, क्योंकि वह स्वयं भी धर्मनिष्ठ था। नियमानुसार नमाज़ पढ़ता था। इस दलील का असर उस पर पड़ा। फिर भी वह सोचता था कि यदि गांधी जी काम कुछ कम कर दें तो अच्छा। थोड़े दिनों बाद तबीयत कुछ अधिक बिगड़ी तो गांधी जी ने खाना कम कर दिया।

वे रोज़ चार रोटियाँ लेते थे, तो अब उन्होंने दो ही देने को आदम से कहा। आदम उनको देखता ही रह गया और बोला, "महाराज! सूरज तो अपना कानून छोड़ता नहीं। तब आप रोटी कैसे कम कर सकते हैं?"

आदम की यह दलील सुनकर गांधी जी हँस पड़े। इस परदेसी को भी गांधी जी के प्रति कितनी श्रद्धा थी। आदम की सेवा से गांधी जी भी खुश थे और उसके प्रति वह क्या कर सकते हैं, यह सोचा करते थे। वे उसके विषय में जानना चाहते थे। उन्होंने सुपरिंटेंडेंट से बातें कीं। फलस्वरूप अल्प समय में ही आदम को छोड़ दिया गया और वह अपने देश को चला गया।

गांधी जी के परोपकारी और साधु जीवन का असर जैसा आदम पर हुआ, वैसा जेल के सुपरिंटेंडेंट पर भी होने लगा। हम लोग साबरमती जेल से यरवदा जेल में लाए गए थे। वहाँ कुछ महीनों के बाद जेल में नए सुपरिंटेंडेंट आए। ये स्वभाव के अतिशय कठोर और नियमों के पालन में बहुत कड़े हैं, ऐसी बात जेल में फैल चुकी थी। परंतु हमारे प्रति व्यवहार में वे अत्यंत मिलनसार स्वभाव के सरल और सज्जन लगे। गांधी जी को जिस हिस्से में और जिस कमरे में रखा गया था, वह उन्हें संतोषजनक नहीं लगा। उन्हें लगा कि यदि गांधी जी और अन्य राजनीतिक कैदियों को यूरोपियन कमरों में ले जाया जाए तो बहुत अच्छा हो।

सुपरिंटेंडेंट ने यह बात गांधी जी के आगे रखी। गांधी जी को यह विचार पसंद आया और उन्होंने उन कमरों में जाने की अनुमति दे दी। निश्चित दिन हम लोग अपना सामान लेकर इस नए वार्ड में आ गए।

साँझ को हम लोग एक साथ बैठे तो गांधी जी के मन में एकाएक कुछ विचार आया और वे मुझे कहने लगे, "शंकरलाल, हमने यहाँ आकर भूल की

है। हमें अपने पुराने ब्लाक में वापस जाना चाहिए। मुझे सुपरिंटेंडेंट से मिलकर बातें करनी हैं। आप उन्हें सूचित कर दें।"

गांधी जी की ये बातें सुनकर मुझे आश्चर्य हुआ और खेद भी। मैं कुछ समझ नहीं सका। अतः मैंने पूछा, "बापू! ऐसा क्यों कहते हैं? यहाँ रहने में क्या आपत्ति है?"

गांधी जी ने तुरंत जवाब दिया, "हमें यहाँ लाने में जेलर ने भारी भूल की है। सुपरिंटेंडेंट की हैसियत से यद्यपि उसे ऐसा करने का अधिकार है, परंतु वह सामान्य कैदियों के लिए है, मेरे लिए नहीं। मेरे लिए वह जगह स्वयं सरकार ने निश्चित की होगी और इस कारण बदली नहीं जा सकती।"

मैंने कहा, "ऐसा क़िसलिए मानते हैं? फिर इस सिलसिले में तो उसने भी विचार किया होगा। हमारे क़हने से तो हमें यहाँ लाया नहीं गया । फिर वापस जाने के लिए क्यों कहें?"

परंतु गांधी जी ने निश्चय कर लिया था, अतः वे मुझे समझाने लगे, "यह बात इतनी सरल नहीं है। उसने ज़रूर भूल की है और सरकार को इसका पता चल जाए तो उसे दंडित होना पड़ेगा। मेरा तो धर्म है उसे बचाना।"

इसके आगे तर्क करना व्यर्थ था। सुपरिंटेंडेंट को सूचना दी गई और दूसरे दिन सुबह ही वह मिलने आए।

गांधी जी ने अपने विचार उनके सामने रखे। लेकिन सुपरिंटेंडेंट को यह बात नहीं भाई। वे कहने लगे, "ऐसा विचार करने की कोई ज़रूरत नहीं। सरकार को यदि मेरा यह काम पसंद नहीं आएगा और वह विरोध करेगी तो मैं त्यागपत्र दे दूँगा।"

फिर भी गांधी जी अपने विचारों पर दृढ़ रहे। सरकार उनके लिए क्या सोचती है और क्या इच्छा रखती है, यह वे समझते थे। अतः उन्होंने कहा, "आप कहते हैं, वह अधिकार आपको भले ही प्राप्त हो, परंतु वह सामान्य कैदियों के लिए है, मेरे लिए नहीं। मैं इस विषय में अधिक समझता हूँ। अतः मेरी बात मानिए और हमें पुराने स्थान पर भेज दीजिए।"

गांधी जी ने देखा कि यह जेलर ज़िद्दी है और नहीं मानेगा। तब उन्होंने कहा, "आपका मेरे प्रति जो स्नेह है, वह मैं समझता हूँ, आभारी भी हूँ। आपके कथनानुसार मुझे कार्य करने की इच्छा भी है। पर सरकार की क्या इच्छा है, यह आप जान लें तो अच्छा हो। हमें अभी वापस जाने दें और फिर आप होम मेंबर के साथ बातचीत करें। उसके बाद यदि मुझे यूरोपियन कमरे में ले जाने की अनुमति मिले तो ले चलिएगा।"

गांधी जी की इस बात से जेलर राज़ी हो गया और हमें पुनः पुराने कमरों में ले आया।

इस बात के तीन-चार दिनों बाद सुपरिंटेंडेंट गांधी जी से मिलने आए तथा गांधी जी का आभार मानने लगे। उन्होंने कहा, "आपकी बात सत्य है। मैंने होम मेंबर से बातें की थीं। आपको इस स्थान पर रखने का निर्णय सरकार ने किया है और बिना सरकारी अनुमति के स्थान नहीं बदला जा सकता। स्थान बदलकर मैं अत्यंत कठिनाई में पड़ जाता। मैं भी हठी आदमी हूँ। आपको यूरोपियन कमरे में ले जाकर वापस लाने का समाचार सरकार तक पहुँचता तो मुझे त्यागपत्र देना ही पड़ता। आपने जो सलाह दी, वह उचित थी, अतः उसके लिए मैं आपका जितना भी आभार मानूँ, कम ही होगा।"

गांधी जी ने इस संबंध में पहले से ही यह सोच लिया था और उनका अनुमान सच निकला। यह देख उन्हें संतोष हुआ कि उन्होंने ठीक कदम उठाया था। पर उसके साथ ही वे सुपरिंटेंडेंट की सज्जनता की प्रशंसा किए बिना न रह सके। सुपरिंटेंडेंट के मन पर भी इस बात की गहरी छाप पड़ी और गांधी जी को वह अपना मित्र समझकर कैदी होने पर भी जेल के अटपटे प्रश्नों के संबंध में उनकी सलाह लेने लगा।

— शंकरलाल बैंकर

प्रश्न-अभ्यास

बोध और विचार

(क) मौखिक

1. यरवदा जेल में गांधी जी को जेल के अलग हिस्से में क्यों रखा गया था?
2. सोमाली वार्डर की नियुक्ति के पीछे क्या कारण था?
3. सत्याग्रही बंदियों को समाचारपत्र क्यों नहीं मिलते थे?
4 गांधी जी द्वारा कानून का सख्ती से पालन करना आदम को क्यों बुरा लगता था?
5. पुलिस सुपरिंटेंडेंट ने गांधी जी के प्रति आभार क्यों व्यक्त किया?

(ख) लिखित

1. आदम ने गांधी जी की पहरेदारी करना ज़रूरी क्यों नहीं समझा?
2. गांधी जी के आचरण ने आदम में क्या परिवर्तन ला दिया?
3. गांधी जी से अखबार पढ़वाने के लिए आदम ने क्या युक्ति अपनाई? उस युक्ति पर गांधी जी की क्या प्रतिक्रिया हुई?
4. "सूरज अपना काम कभी नहीं छोड़ता" — गांधी जी के इस कथन को आदम ने किस संदर्भ में दोहराया और क्यों?
5. गांधी जी का आदम को अखबार पढ़कर सुनाना गैरकानूनी था — इस कथन के पक्ष-विपक्ष में तर्क दीजिए।
6. गांधी जी ने पुनः पुराने ब्लाक में जाने का आग्रह क्यों किया था?
7. गांधी जी के व्यक्तित्त्व में ही कुछ ऐसा था कि जो कोई भी उनके संपर्क में आता था उनके प्रभाव से अछूता नहीं रहता था। टिप्पणी कीजिए।

भाषा-अध्ययन

1. निम्नलिखित शब्दों को बोलकर पढ़िए –
   दफ़्तर, अखबार, मज़हबी, खिलाफ़, मुल्क, नमाज़, ज़िद्दी, राज़ी।
   उपर्युक्त शब्द अरबी-फ़ारसी से हिंदी में आए हैं। इन शब्दों को लिखिए और उनके समानार्थी तत्सम शब्द भी लिखिए।
2. ईमानदारी, पहरेदारी, ठेकेदारी शब्दों में दो-दो प्रत्यय हैं; जैसे :
   ईमान + दार + ई = ईमानदारी, पहरा (पहरे) + दार + ई = पहरेदारी, ठेका (ठेके) + दार + ई = ठेकेदारी
   ध्यान दीजिए कि आकारांत शब्दों के साथ 'दार' प्रत्यय लगने से वे एकारांत हो जाते हैं; जैसे – पहरा-पहरे, ठेका-ठेके।
   इसी प्रकार के तीन शब्द बनाइए।
3. उपयुक्त प्रत्यय जोड़ते हुए निम्नलिखित शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाइए :
   सज्जन, अच्छा, घबराना, पढ़ना, मोटा, लड़का।
4. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द बनाइए :
   आदर, मान, गुण, साक्षर, जीवन, जड़, पाप, यश, उत्थान, विरोध।
5. निम्नलिखित वाक्यों को उदाहरण के अनुसार कर्तृवाच्य में बदलिए :
   उदाहरण : अंग्रेज़ों द्वारा गांधी जी को यरवदा जेल में रखा गया था।
   ⟹ अंग्रेज़ों ने गांधी जी को यरवदा जेल में रखा था।
   (क) अधिकारियों द्वारा गांधी जी के लिए एक वार्डर नियुक्त किया गया था।
   (ख) ब्रिटिश सरकार का विरोध करने पर पुलिस द्वारा आदम को पकड़ा गया।
   (ग) कुछ समय बाद सरकार द्वारा आदम को छोड़ दिया गया।
   (घ) मुझसे अंग्रेज़ी नहीं बोली जाती।
6. किसी एक ही बात को हम अलग-अलग ढंग से कह सकते हैं। इस ढंग या तरीके को 'शैली' कहते हैं।

उदाहरण : बारदोली में सन् 1922 में प्रारंभ किए गए सत्याग्रह के लिए ब्रिटिश सरकार ने गांधी जी को 6 वर्ष की सज़ा दी थी।

⟹ बारदोली में सन् 1922 में जो सत्याग्रह प्रारंभ किया गया था उसके लिए ब्रिटिश सरकार ने गांधी जी को 6 वर्ष की सज़ा दी थी।

उपर्युक्त उदाहरण के अनुसार निम्नलिखित वाक्यों की शैली में परिवर्तन कीजिए –

(क) आदम द्वारा लाया गया वह अखबार गांधी जी नहीं देखेंगे।

(ख) इतना अधिक जोखिम उठाकर लाया गया अखबार फाड़ डाला जाए या जला दिया जाए, यह उसे अच्छा नहीं लगा।

(ग) सोमालीलैंड में चल रही लड़ाई का समाचार गांधी जी ने आदम को सुनाया।

योग्यता-विस्तार

गांधी जी की आत्मकथा (सत्य के प्रयोग) पढ़िए और उनके जीवन के कुछ अन्य प्रेरक प्रसंगों पर कक्षा में चर्चा कीजिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

सत्याग्रह - सत्य आचरण के प्रति आग्रह, महात्मा गांधी ने स्वतंत्रता संघर्ष के लिए अहिंसात्मक सत्याग्रह को साधन बनाया

बवंडर - तूफ़ान

वार्डर - कैदियों में से चुना हुआ एक पहरेदार

हिदायत - निर्देश

मज़हबी - धार्मिक

जोखिम - खतरा

धर्मनिष्ठ - धर्म पर विश्वास रखने वाला

दलील - तर्क, प्रमाण

7. दोहा एकादश

(प्रस्तुत पाठ में संत कबीरदास और मलूकदास के भक्ति और नीति-विषयक कुछ दोहों का संकलन है। इनमें गुरु की महिमा, ईश्वर की सर्वव्यापकता, उसके वियोग में जीवात्मा की तड़पन, आडंबरों का विरोध, दया-प्रेम-मधुरवाणी जैसे उच्च जीवन-मूल्यों और मन पर नियंत्रण रखने की आवश्यकता आदि विषयों का चित्रण हुआ है।)

गुरु कुम्हार सिष कुंभ है, गढ़ि-गढ़ि काढ़ै खोट।
भीतर हाथ सहार दे, बाहर बाहै चोट।।

तूँ तूँ करता तू भया, मुझ में रही न हूँ।
बारी तेरे नाउँ परि, जित देखौं तित तूँ।।

बासुरि सुख ना रैनि सुख, ना सुख सपनै माहि।
कबीर बिछुड़ै राम सौ, ना सुख धूप न छाँहि।।

साँईं इतना दीजिए, जामें कुटुम समाय।
मैं भी भूखा ना रहूँ, साधु न भूखा जाय।।

माला फेरत जुग गया, फिरा न मन का फेर।
कर का मनका डारि दे, मन का मनका फेर।।

तिनका कबहुँ न निंदिए, जो पाँयन तर होय।
कबहूँ उड़ि आँखिन परे, पीर घनेरी होय।।

— कबीरदास

भेष फकीरी जे करैं, मन नहिं आवै हाथ।
दिल फकीर जे हो रहे, साहेब तिनके साथ।।

जो तेरे घर प्रेम है, तो कहि कहि न सुनाव।
अंतर्जामी जानिहै, अंतरगत का भाव।।

हरी डारि ना तोड़िए, लागै छूरा बान।
दास मलूका यों कहै, अपना-सा जिव जान।।

दया-धर्म हिरदै बसै, बोलै अमिरत बैन।
तेई ऊँचे जानिए, जिनके नीचे नैन।।

कोई जीति सकै नहीं, यह मन जैसे देव।
याके जीते जीत है, अब मैं पायो भेव।।

— मलूकदास

प्रश्न-अभ्यास

बोध और सराहना

(क) मौखिक

1. भक्त अपना सुख-चैन कब गँवा बैठता है?
   - (क) जब उसे किसी असाधु की संगति में रहना पड़ जाता है।
   - (ख) जब उसका मन ईश्वर की भक्ति से अलग हट जाता है।
   - (ग) जब वह किसी अंधविश्वास के चक्कर में पड़ जाता है।
   - (घ) जब वह असत्य आचरण करने लगता है।
2. ईश्वर की सर्वत्र विद्यमानता का अनुभव भक्त को कब हो पाता है?
3. मलूकदास पेड़ की हरी डाल को काटने की मनाही क्यों करते हैं?
4. मन के किस रहस्य को कवि ने जान लिया है?

(ख) लिखित

1. कबीर ने गुरु को कुम्हार और शिष्य को घड़ा क्यों कहा है?
2. धन-संग्रह के संबंध में कबीर के क्या विचार हैं? आप उनसे कहाँ तक सहमत हैं?
3. दिल को फकीर बनाने की प्रेरणा मलूकदास क्यों देते हैं?
4. निम्नलिखित का आशय समझाइए –
   - (क) फिरा न मन का फेर।
   - (ख) तेई ऊँचे जानिए, जिनके नीचे नैन।
5. "कर का मनका डारि दे, मन का मनका फेर" कथन का सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।
6. निम्नलिखित स्थितियों से संबंधित दोहे उद्धृत कीजिए :
   - (क) लोग व्यर्थ ही पेड़-पौधों को उजाड़ते हैं।

(ख) अपने प्रेम का ढोल पीटते रहते हैं।

(ग) स्वयं को ऊँचे कुल का कहकर अकड़ते फिरते हैं।

योग्यता-विस्तार

1. निम्नलिखित दोहों की तुलना पाठ में आए इसी भाव के दोहों से कीजिए।

   (क) रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि।
   जहाँ काम आवै सुई, कहा करै तरवारि।।

   (ख) नर की और नल नीर की, गति एकै कर जोय।
   जेतो नीचो ह्वै चलै, तेतो ऊँचो होय।।

2. "हरे-भरे पेड़ को कटने से बचाना आज के युग की आवश्यकता है।"
   उपर्युक्त विषय पर अपनी कक्षा में चर्चा कीजिए।

3. "मन के हारे हार है, मन के जीते जीत" — विषय पर एक छोटा-सा लेख लिखिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

सिष - शिष्य
गढ़ि-गढ़ि - बना-बनाकर
काढ़ै - निकालता है, दूर करता है
खोट - बुराइयाँ
सहार - सहारा
बाहै चोट - चोट करता है
बारी - न्योछावर
नाउँ - नाम
जित - जहाँ
तित - वहाँ
बासुरि - दिन

रैनि	-	रात
जामें	-	जिसमें
कुटुम समाय	-	पूरे परिवार का पालन-पोषण हो सके
मन का फेर	-	मन का भ्रम
कर का मनका	-	हाथ की माला के दाने
मन का मनका फेर	-	मन की माला के मनकों को फेरो, मानसिक जप करो
निंदिए	-	निंदा कीजिए
पाँयन तर	-	पैरों के नीचे
पीर	-	पीड़ा
घनेरी	-	बहुत
कहि-कहि न सुनाव	-	यहाँ-वहाँ शोर मचाकर मत सुनाओ, सबको बताते मत फिरो
अंतर्जामी	-	अंतर्यामी, जो सबके मन की जानता हो, ईश्वर
अंतरगत	-	हृदय का, मन में छिपा
डारि	-	डाली, टहनी
छूरा बान	-	छुरा और बाण, हथियार
बैन	-	वचन
तेई	-	वही
नैन	-	आँखें, दृष्टि
याके	-	इसके
भेव	-	भेद, रहस्य

8. तमिलनाडु की यात्रा

(इस यात्रा-विवरण में दक्षिण भारत की प्राकृतिक विशेषताओं के उल्लेख के साथ-साथ तमिलनाडु के भौगोलिक स्वरूप, दर्शनीय स्थल, शिल्प-सौंदर्य और वहाँ के निवासियों की जीवन-शैली का ज्ञानप्रद एवं रोचक वर्णन किया गया है। इससे एक ओर तो हम अपने देश की विविधता से परिचित होते हैं और दूसरी ओर इस विविधता के बीच सांस्कृतिक एकता के दर्शन भी पाते हैं।)

"मणी! मणी! कहाँ हो?"

"क्या बात है? आ रही हूँ।"

"दिल्ली से दिनेश का तार आया है।"

"अच्छा! उसने क्या लिखा है?"

"लिखा है कि वह दक्षिण भारत की यात्रा पर आ रहा है। उसकी यात्रा चेन्नई से प्रारंभ होगी। अब तुम भी जल्दी से तैयार हो जाओ। तमिलनाडु एक्सप्रेस से आज ही वह सपरिवार पहुँच रहा है। गाड़ी ठीक समय पर आनेवाली है।"

पति-पत्नी दोनों जल्दी से तैयार होकर स्टेशन गए और दिनेश को सपरिवार अपने घर ले आए।

कुशल-क्षेम के बाद तमिलनाडु की चर्चा प्रारंभ हुई। दिनेश खुद ही बताने लगा कि तमिलनाडु भारत के दक्षिणी सीमांत में तिकोनी आकृतिवाला प्रदेश है जिसे सदानीरा कावेरी दो भागों में बाँट देती है और अपनी नहरों के जाल और अपनी सहायक छोटी-छोटी नदियों से इसके बहुत बड़े भू-भाग को वर्ष

भर उपजाऊ बनाए रखती है। पोलयाची और पालघाट के बीच की उर्वरा वादियों और कंबन की उतनी ही उपजाऊ घाटियाँ अपने प्राकृतिक दृश्यों से पर्यटकों का मन मोह लेती हैं। साथ ही यह क्षेत्र धान की घनी पैदावार के लिए भी प्रसिद्ध है। जहाँ साल में धान की दो से तीन फ़सलें तक होती हैं।

पूर्वी घाट और पश्चिमी घाट की पहाड़ियों के दक्षिणी छोरों का मिलन तमिलनाडु में हुआ है। पर्वतीय सौंदर्य और समुद्री जलवायु के कारण प्रायः इसके सभी ज़िलों में कोई-न-कोई ग्रीष्मावास या समुद्रतटीय आरोग्य-स्थल है। उटकमंड (ऊटी) को तो 'पर्वतीय ग्रीष्मावासों की रानी' कहा जाता है। शांत और एकांतप्रिय लोगों के लिए कोडाइकनाल जैसा रमणीक स्थल है।

दिनेश जब एक ही साँस में तमिलनाडु के भौतिक स्वरूप और प्राकृतिक वैभव का वर्णन कर गया तो मेरी पत्नी गद्गद होकर बोली, "भाई साहब, अपने प्रदेश की ये विशेषताएँ तो हमें आज ही मालूम हुईं। आप इतना कुछ कैसे जानते हैं?"

"जानती नहीं हो, दिनेश पूरी तैयारी से यात्रा पर निकला है। इसकी कुछ बातें तो पुस्तकीय हैं और बहुत-सी बातें इसने अपने तमिल मित्रों से जानी-सुनी हैं । इस तरह जानकारी प्राप्त करके यात्रा करना अच्छी बात है।"

दूसरे दिन हम चेन्नई का समुद्र-तट देखने निकले। दिनेश, दिव्या और उसके बच्चे आश्चर्य से कण्णगी की मूर्ति की ओर देखने लगे। उसके क्रोधित रूप तथा हाथ में पकड़े नूपुर को देखकर उन सबके मन में तरह-तरह के भाव उठने लगे। तब मैंने बताया, तमिल का 'शिलप्पधिकारम्' नामक एक काव्य-ग्रंथ है। उस काव्य की नायिका है यह देवी कण्णगी। रानी का नूपुर खो जाने

पर राजा ने इसके पति को भ्रांतिवश चोर समझ कर मरवा डाला था, क्योंकि वह बाज़ार में एक नूपुर बेचने की कोशिश में था। जब इस देवी को यह पता चला तो क्रोध की मुद्रा में राजा के पास जाकर अपने पैर का वैसा ही नूपुर हाथ में लेकर दिखाते हुए कहने लगी कि दूसरा नूपुर भी मेरा ही है। मेरे पति चोर नहीं थे। वही क्रोध का भाव इस मूर्ति से प्रकट हो रहा है।

वहाँ से रेत पर चलते हुए हम लोग समुद्र तट की ओर बढ़ने लगे। दूर से ही हमें छोटी-बड़ी अनगिनत नावें दिखीं। पास जाने पर छोटी-बड़ी मछलियों का अंबार देखकर हमारी आँखें फटी-की-फटी रह गईं।

मछलियों को देखकर माया 'च्च-च्च' करती हुई बोली, "हाय-हाय! ये मछुआरे कितनी बेदर्दी से बेचारी मछलियों को मारते हैं। मछलियों ने इन मछुआरों का क्या बिगाड़ा था?"

जब तक मैं 'जीवो जीवस्य भोजनम्' आदि जीवसंघर्ष की बातें माया को समझाता तब तक आनंद पूछ बैठा, "चाचा जी, मछुआरों ने इन मछलियों को कब पकड़ा?"

मैंने बताया, "ये मछुआरे जोखिम भरा जीवन जीते हैं। रात में मछुआरे अपनी नावों को लेकर गहरे समुद्र में चले जाते हैं और मछलियों को पकड़कर

सुबह होने पर किनारे लौट आते हैं। माया बोल उठी, "सोती हुई मछलियों को छल से पकड़ते हैं मछुआरे!"

माया की भोली बातें सुनकर हँसते-हँसते हम सबके पेट में बल पड़ गए।

वहाँ से आगे प्रकाश-स्तंभ को देखकर हम लोग कपालेश्वर मंदिर जाने के लिए निकल पड़े।

गाइड ने इस मंदिर के बारे में बताया, कपालेश्वर प्रसिद्ध शिव मंदिर है। इसके गोपुरम् बहुत ऊँचे हैं।

"गोपुरम् किसे कहते हैं?" आनंद ने गाइड को टोककर पूछा।

गाइड ने बताया, "गोपुरम् तो एक प्रकार से मंदिर के मुख्य द्वार का दूसरा नाम है। दक्षिण भारत के सभी मंदिरों के सामने सुंदर तालाब होते हैं। तालाब के चारों तरफ़ सुंदर सीढ़ियाँ बनी होती हैं। मंदिर के चारों ओर प्राकार बने होते हैं। कपालेश्वर मंदिर के तीनों ओर प्रवेश-द्वार हैं। हर प्रवेश द्वार पर सुंदर-सुंदर गोपुरम् हैं। इस मंदिर में अद्वितीय आकर्षक शिल्पकला के नमूने देखने को मिलते हैं। कहते हैं कि इसी के आसपास कहीं पर प्रसिद्ध तमिल कवि तिरुवल्लुवर रहते थे।" कपालेश्वर मंदिर देखने के बाद हम लोग समुद्र तट पर स्थित महालक्ष्मी का मंदिर भी देखने गए।

दूसरे दिन सब लोग महाबलिपुरम् के लिए रवाना हुए। महाबलिपुरम् चेन्नई शहर से साठ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। पल्लव राजाओं के स्मारक के रूप में इसका एक विशिष्ट स्थान है। यहाँ के गुफ़ा-मंदिर, रथ और दीवार पर अंकित चित्र विशेष रूप से दर्शनीय हैं। यहाँ की शिल्पकला लगभग सातवीं सदी की है। समुद्र किनारे स्थित मंदिर का अधिक अंश जलमग्न हो गया है।
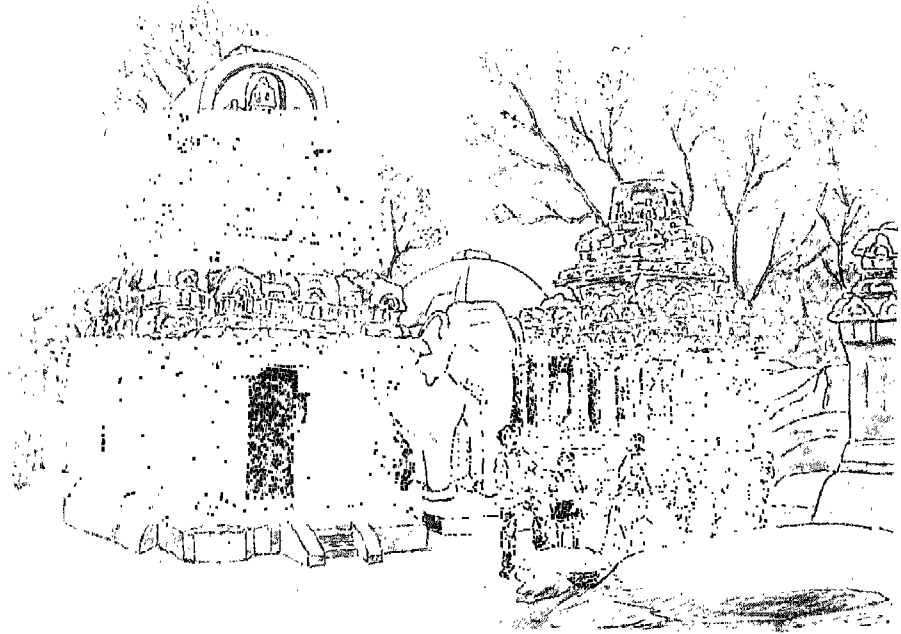
कहा जाता है कि यहाँ इसी प्रकार के कई मंदिर थे जिन्होंने समय के साथ जलसमाधि ले ली। अब एक ही मंदिर शेष है। यहाँ महिषासुर-मर्दन का दृश्य विशेष रूप से देखने लायक है। ये मंदिर पत्थरों को तराशकर रथ के आकार के बनाए गए हैं। इस प्रकार के कुल छह रथमंदिर हैं। इनमें पाँच पांडवों के नाम पर हैं और छठा द्रौपदी के नाम पर। कृष्ण-मंडप के सामने तपस्या करते हुए अर्जुन की प्रतिमा है। यह शिल्पकला की दृष्टि से अद्‌भुत है।

वहाँ से हम लोग पक्षीतीर्थ मंदिर देखने के लिए निकले। यह स्थान एक पहाड़ी पर लगभग पाँच सौ फुट की ऊँचाई पर स्थित है। कहते हैं, यहाँ रोज़ कहीं से दो श्वेत चीलें आती हैं। इनके बारे में एक दंतकथा प्रचलित है कि इन

चीलों के रूप में उड़ते हुए काशी से दो संत रामेश्वरम् जाते हैं। ये दोनों रास्ते में प्रतिदिन उतरकर वहाँ के पुरोहित के हाथों भोजन ग्रहण करके विश्राम करते हैं।

पूर्व निश्चित कार्यक्रम के अनुसार दूसरे दिन हम लोग बस में बैठकर तमिलनाडु के अन्य दर्शनीय स्थलों को देखने निकले। कांचीपुरम् पहुँचने पर गाइड सभी यात्रियों को समझाने लगा, "अयोध्या, मथुरा, मायापुरी, काशी, कांची, अवंती और द्वारिका -- ये भारत की सप्तपुरियाँ इतिहास-प्रसिद्ध हैं। छठी शताब्दी में पल्लव राजाओं ने कांचीपुरम् में अनेक बड़े-बड़े मंदिर बनवाए थे। आज इस नगर में 130 से भी अधिक मंदिर हैं। शंकराचार्य, रामानुजाचार्य आदि महापुरुषों का कार्यक्षेत्र यही भूमि रही है। संस्कृत के प्रसिद्ध कवि दंडी और भारवि पल्लव राजाओं के दरबार में ही थे।"

कांचीपुरम् रेशमी साड़ियों के लिए प्रसिद्ध है। रेशमी साड़ी पर की गई कारीगरी और जरी का काम अद्भुत होता है। इसीलिए पूरे देश में यहाँ की साड़ियाँ बिकती हैं। कांचीपुरम् के मंदिरों के दर्शन करने के बाद सभी चिदंबरम् पहुँचे। गाइड ने चिदंबरम् की विशेषता बतलाई, "तमिलनाडु के पवित्र स्थानों में चिदंबरम् का स्थान सर्वोपरि है। नटराज की प्रसिद्ध मूर्ति यहीं पर है। नटराज शिव की नृत्य-मुद्रा है। इस प्रकार की भव्य मूर्ति अन्यत्र नहीं मिलती। इस मंदिर का निर्माण छठी शताब्दी में हुआ था।" नटराज की मूर्ति और शिल्पकला को देखकर सब लोग चकित हो गए। मूर्ति, कलश और नृत्यशाला सभी कारीगरी के अद्भुत नमूने थे। वहाँ से सब लोग तंजाऊर आ पहुँचे। तंजाऊर के बारे में गाइड ने बतलाया, "तंजाऊर का बृहदीश्वर मंदिर कई दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है। यह शिवमंदिर है। राजराज चोल ने 1001 ई. में इसका निर्माण कराया था। यहाँ शिवलिंग की प्रमुखता है, जो तेरह फुट ऊँचा है। इस शहर में सरस्वती महाल नामक एक प्राचीन संग्रहालय भी है।"

त्रिचिरापल्ली में आकर हम लोगों ने श्रीरंगम् का प्रसिद्ध मंदिर देखा। श्रीरंगम् का मंदिर रंगनाथ के मंदिर के नाम से प्रसिद्ध है। इस मंदिर में कुल सात परकोटे हैं। यहाँ कावेरी नदी कई धाराओं में बँटकर एक छोटे टापू का निर्माण करती है। इसी छोटे टापू में यह नगर और मंदिर स्थित है। कहते हैं कि यह मंदिर 2000 वर्षों से भी अधिक पुराना है। मंदिर की लंबाई करीब 3000 फुट और चौड़ाई 2800 फुट है। ऐसा विशाल मंदिर भारत में और कहीं नहीं है। विशाल चहारदीवारी के बाहर नगर निर्माण हुआ है। चहारदीवारी को यहाँ 'प्राकार' कहा जाता है। श्री रंगनाथ के मंदिर में भगवान शेषशायी की भव्य मूर्ति

प्रतिष्ठित है। इस मंदिर के बारे में एक दंतकथा प्रचलित है कि लंका पर विजय प्राप्त कर लौटते समय श्री रामचंद्र ने विभीषण के माँगने पर उन्हें शेषशायी विष्णु की मूर्ति दी थी। वही मूर्ति इस मंदिर में स्थापित की गई है। इस मंदिर का जीर्णोद्धार कर इसका विस्तार किया गया है। इसकी सात मंज़िलों पर विशाल गोपुरम् निर्मित किए गए हैं।

वहाँ से हम सब प्रसिद्ध नगर मदुरै पहुँचे। यहाँ का मीनाक्षी मंदिर अपनी सुंदरता और भव्यता के लिए बहुत प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि मीनाक्षी देवी स्वयं पांड्य नरेश की पुत्री थीं। अपनी शक्ति के बल से उन्होंने शिवजी (सुंदरेश्वर) से विवाह किया था। एक तरफ़ मीनाक्षी का मंदिर है तो दूसरी ओर सुंदरेश्वर (शिवजी) का मंदिर है। इसके गगनचुंबी भव्य गोपुरम् विशेष रूप से दर्शनीय हैं। वास्तु-कला, मूर्ति-कला आदि के अनुपम नमूने मीनाक्षी मंदिर में देखे जा सकते हैं। हज़ार स्तंभों वाला मंडप और वहाँ की मूर्तियों में उत्कीर्ण शिल्प बहुत सुंदर है। इस मंदिर की चहारदीवारी बहुत लंबी-चौड़ी है । मंदिर के चारों ओर राजमार्ग है। प्रतिवर्ष चैत महीने में रथोत्सव का आयोजन इन्हीं राजमार्गों पर होता है। मंदिर के मंडप में खंभों को कहीं से भी क़िसी कोण से देखें, तो वे एक सीधी रेखा में दिखाई पड़ते हैं। यहाँ रति, अर्जुन, मोहिनी, कलिपुरुष और वीणापाणि की मूर्तियाँ देखने लायक हैं। भवन के अंतिम छोर पर एक अलग मंडप में नटराज की नृत्य करती भव्य मूर्ति स्थापित है।

संत कवि तिरुवल्लुवर द्वारा रचित तथा तमिल भाषा के वेद के रूप में मान्य कृति 'तिरुक्कुरल' का संबंध भी इसी नगर से जोड़ा जाता है। मदुरै शहर काफ़ी बड़ा है और तमिलनाडु में चेन्नई के बाद इसका दूसरा स्थान है।

मदुरै से हम लोग रामेश्वरम् आए। रामेश्वरम् के बारे में गाइड ने बताया, "इस मंदिर के चारों ओर विशाल गोपुरम् हैं। इस मंदिर का प्रांगण बहुत बड़ा है। मंदिर के स्तंभों पर की गई अद्‌भुत कारीगरी देखने लायक है। यहाँ मीठे पानी के बाईस कुंड हैं। यहाँ से श्रीलंका केवल 75 किलोमीटर की दूरी पर है।"

इसके बाद हम लोग रात्रि-बस द्‌वारा कन्याकुमारी पहुँचे। यह स्थान तीनों सागरों -- अरब सागर, हिंद महासागर, बंगाल की खाड़ी के संगम-स्थल पर है।
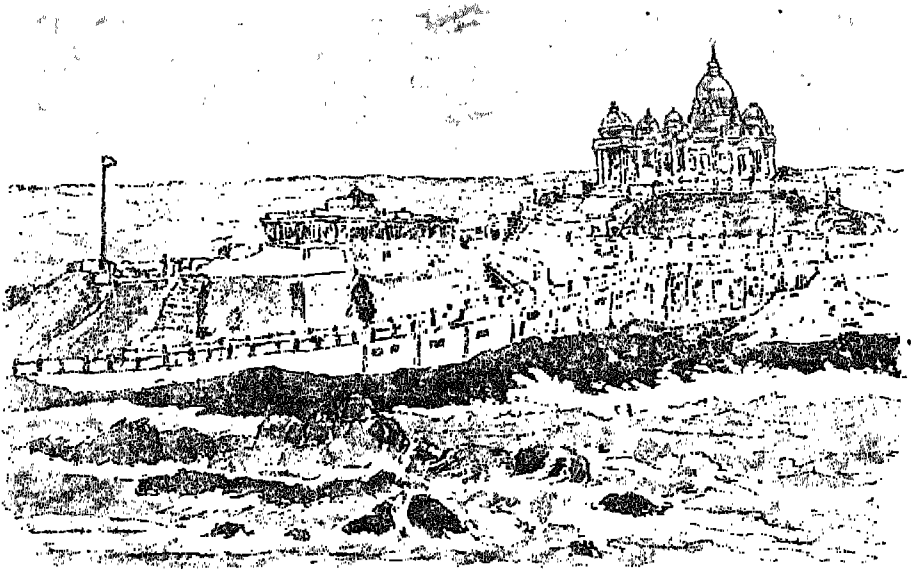
यहाँ समुद्र के किनारे पर विभिन्न रंगों की रेत मिलती है। विभिन्न रंगों की रेत के संबंध में भी एक दंतकथा प्रचलित है। किसी कारण शिवजी का विवाह कन्याकुमारी से नहीं हो पाया था। तब कन्याकुमारी ने गुस्से में आकर विवाह

के लिए एकत्र सारी मांगलिक सामग्री – कुंकुम, अक्षत, चंदन आदि को उठाकर जल में फेंक दिया। कहा जाता है कि इसी कारण यहाँ की रेत अलग-अलग रंगों की दिखाई देती है।

हम सभी यात्री विवेकानंद स्मारक देखने गए। स्वामी विवेकानंद अमेरिका जाने से पहले इसी स्थान पर समुद्र के बीच एक चट्टान पर ध्यानमग्न हुए थे। इसी चट्टान पर संगमरमर का भव्य विवेकानंद स्मारक निर्मित हुआ है।

कन्याकुमारी में सूर्योदय और सूर्यास्त के सुंदर दृश्य देखने के लिए हमें एक दिन रुकना पड़ा। दिव्या ने अपने प्रियज़नों को भेंट करने के लिए शंख और सीपी की बनी चीज़ें खरीदीं। अगले दिन प्रातः हम लोग रेल द्वारा तिरुवनंतपुरम् पहुँचे। अब लोगों की विदाई की घड़ी आ गई थी। दिनेश और उसके परिवार को तिरुपति के लिए रवाना करते हुए मैंने कहा, "हम लोगों की यह यात्रा चिरस्मरणीय रहेगी।"

दिनेश बोला, "निश्चित रूप से अविस्मरणीय रहेगी।"

– एन. सुंदरम्

प्रश्न-अभ्यास

बोध और विचार

(क) मौखिक

1. तमिलनाडु देखे बिना तमिलनाडु के विषय में दिनेश के द्वारा जानकारी देना प्रकट करता है:
   (क) दिनेश का बड़बोलापन
   (ख) ज्ञान का प्रदर्शन

(ग) यात्रा की पूर्व तैयारी

(घ) यात्रा के बारे में उत्सुकता

2. चेन्नई के समुद्र-तट पर बनी कण्णगी की मूर्ति की क्रोधित मुद्रा के पीछे क्या रहस्य है?
3. समुद्र तट पर मछलियों का अंबार क्यों लगा हुआ था?
4. माया की बातों को सुनकर लोगों की हँसी क्यों फूट पड़ी?
5. तमिलनाडु के पवित्र स्थानों में चिदंबरम् को सर्वोपरि क्यों माना है?

(ख) लिखित

1. दक्षिण भारत के मंदिरों की शिल्पकला की कुछ विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
2. महाबलिपुरम् अपनी किन विशेषताओं के कारण दर्शनीय है?
3. तमिलनाडु के निम्नलिखित स्थलों में से किस स्थल के वर्णन ने आपको सर्वाधिक प्रभावित किया और क्यों?
   कांचीपुरम्, तंजाऊर, रामेश्वरम्
4. मीनाक्षी मंदिर की भव्यता अद्‌वितीय है – कारण बताते हुए इस कथन की पुष्टि कीजिए।
5. कन्याकुमारी से जुड़े पौराणिक एवं आधुनिक प्रसंगों का उल्लेख कीजिए।

भाषा-अध्ययन

1. निम्नलिखित उदाहरण पढ़िए :

रामानुजाचार्य = रामानुज + आचार्य

कपालेश्वर = कपाल + ईश्वर

जीर्णोद्‌धार = जीर्ण + उद्‌धार

उपर्युक्त शब्द स्वर संधि के उदाहरण हैं। इनमें क्रमशः अ + आ = 'आ', अ + ई = 'ए', अ + उ = 'ओ' रूप बने हैं। नीचे लिखे शब्दों का संधि विच्छेद कीजिए और यह भी बताइए कि किन-किन स्वरों में संधि हुई है :

ग्रीष्मावास, सुंदरेश्वर, सर्वोपरि

2. निम्नलिखित शब्दों के लिंग बताइए :
   यात्रा, प्रदेश, गाड़ी, धान, समुद्र, मंदिर, तालाब, कारीगरी
3. निम्नलिखित शब्दों को पढ़िए :
   (क) निर्मित = निर्माण + इत
   (ख) स्थापित = स्थापना + इत
   (ग) क्रोधित = क्रोध + इत

   उपर्युक्त शब्दों में 'निर्मित' और 'स्थापित' क्रमशः मूल शब्द 'निर्माण' तथा 'स्थापना' और 'इत' प्रत्यय के योग से बने हैं। इन मूल शब्दों में 'इत' प्रत्यय जुड़ने से 'ण', 'ना', आदि का लोप हो गया है जबकि 'क्रोध' जैसे शब्दों में ऐसा नहीं होता।

   नीचे दिए शब्दों में मूल शब्द और प्रत्यय अलग-अलग कीजिए :

   रचित आधारित
   कथित आनंदित
   पोषित प्रस्तावित
4. निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए :
   (क) तमिलनाडु भारत के दक्षिणी सीमांत में तिकोनी आकृतिवाला प्रदेश है।
   (ख) पूर्वी घाट और पश्चिमी घाट की पहाड़ियों के दक्षिणी छोरों का मिलन तमिलनाडु में हुआ।

   उपर्युक्त वाक्यों में प्रयुक्त 'दक्षिणी', 'पूर्वी', 'पश्चिमी' शब्द दिशाओं का बोध करानेवाले विशेषण हैं। इसी प्रकार 'उत्तरी', 'उत्तर-पूर्वी', 'उत्तर-पश्चिमी' आदि भी दिशाबोधक विशेषण हैं। इन शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए।
5. निम्नलिखित वाक्यों में उदाहरण के अनुसार परिवर्तन कीजिए :

   उदाहरण : गाड़ी ठीक समय पर आने वाली है।
   ⟹ गाड़ी ठीक समय पर आएगी।

   (क) दिनेश पूरी तैयारी से यात्रा पर निकलने वाला है।
   (ख) दूसरे दिन सभी लोग महाबलिपुरम् के लिए रवाना होने वाले हैं।
   (ग) कांचीपुरम् के मंदिरों के दर्शन के बाद सभी चिदंबरम् पहुँचने वाले हैं।
   (घ) हम सभी यात्री कल विवेकानंद स्मारक देखने जाने वाले हैं।

योग्यता-विस्तार

1. अपने राज्य के प्रमुख दर्शनीय स्थलों की सूची बनाइए और उनका संक्षिप्त परिचय लिखिए।
2. इस पाठ के लेखक की यात्रा-वर्णन शैली को ध्यान में रखते हुए अपने किसी दक्षिण भारतीय मित्र को उत्तर भारत के कुछ दर्शनीय स्थलों के बारे में पत्र लिखिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

कुशल-क्षेम - सुख-स्वास्थ्य की जानकारी, खैरियत

सीमांत - सीमावर्ती स्थान, हद

सदानीरा - वह नदी जिसमें हमेशा जल की धारा प्रवाहित होती रहे

वैभव - ऐश्वर्य

गद्‌गद होना - अत्यंत प्रसन्न होना, पुलकित होना

भ्रांतिवश - भ्रम के कारण

आँखें फटी-की-फटी रह जाना - आश्चर्यचकित हो जाना

जीवो जीवस्य भोजनम् - जीव ही जीव का भोजन है

जोखिम भरा - खतरे से भरा

प्रकाश-स्तंभ - समुद्र तट पर बनाया गया ऊँचा स्तंभ, जिसपर रात में जहाज़ों को चट्टानों या अन्य खतरों से बचाने या दिशा-ज्ञान के लिए रोशनी की जाती है, लाइट हाउस

प्राकार - नगर, किले या मंदिर के चारों ओर बनाई गई चहारदीवारी, परकोटा

जल-समाधि लेना - जल में डूब जाना

महिषासुर - एक असुर जो देवी दुर्गा के हाथों मारा गया था

मर्दन - नाश

दंतकथा - लोक प्रचलित कथा, जनश्रुति

मायापुरी - वर्तमान हरिद्वार – एक तीर्थ स्थल

अवंती - वर्तमान उज्जैन

जीर्णोद्धार - जीर्ण + उद्धार, पुराने टूटे-फूटे मंदिर, किले, भवन आदि का फिर से निर्माण करना

उत्कीर्ण - खुदा हुआ, अंकित

मांगलिक - शुभ कार्य संबंधी

आत्मीय - अपने लोग, स्वजन

चिरस्मरणीय - बहुत समय तक याद रखने योग्य

अविस्मरणीय - न भुलाया जा सकने वाला

चोल और पल्लव - दक्षिण के दो प्रसिद्ध राजवंश

शिलप्पधिकारम् - शिलप्पु (शिलंबु) = नूपुर, अधिकारम् (अदिकारम्) = अध्याय; तमिल भाषा का एक प्रसिद्ध काव्य जो नूपुर से संबंधित कथा पर आधारित है

9. वैद्यराज जीवक

(प्रस्तुत पाठ में प्राचीन भारत के प्रसिद्ध आयुर्वेदाचार्य जीवक के जीवन और चिकित्सा के क्षेत्र में उनकी उपलब्धियों का उल्लेख है। प्राचीन भारतीय चिकित्साशास्त्रियों के ज्ञान की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए जीवक ने अपनी असाधारण प्रतिभा के बल पर विविध औषधियों का निर्माण कर असाध्य रोगों पर विजय प्राप्त की। जीवक ने महात्मा बुद्ध के प्रति अगाध भक्तिभाव रखते हुए भी उनके साथ रहने की इच्छा को दबा दिया और चिकित्सक के स्वधर्म को संपूर्ण निष्ठा से निभाकर संसार के समक्ष कर्तव्य के प्रति प्रतिबद्धता का अपूर्व उदाहरण प्रस्तुत किया।)

कई दिनों तक परिश्रमपूर्वक खोजने के बाद भी जीवक को ऐसी कोई वनस्पति प्राप्त नहीं हुई जिसमें औषधीय गुण न हों। वह तक्षशिला विश्वविद्यालय के विशाल परिसर के बाहर दूर-दूर तक जाकर ढूँढ़ चुका था, अनेक अज्ञात वनस्पतियों का परीक्षण भी कर चुका था पर उसे सफलता हाथ नहीं लगी। अंततः उसे खाली हाथ आचार्य के पास लौटना पड़ा। लौटते हुए वह विचार कर रहा था – आचार्य से अपनी असफलता बताकर क्या उत्तीर्ण हुआ जा सकता है? नहीं। उसे अभी और परिश्रम करना पड़ेगा। उसकी शिक्षा अधूरी है। उसने धरती माता के वात्सल्य का अनुभव किया था। प्राणियों के पोषण और रक्षण के लिए प्रकृति द्वारा दिए गए वरदानों से वह परिचित हुआ था। उसके मन में यह बात कचोट रही थी कि प्रकृति से इतनी अमूल्य जैव-संपदा पाकर हम कृतज्ञ क्यों नहीं होते? कितने जड़मति हैं वे लोग, जो इसे नष्ट करते हैं।

जीवक सूर्यास्त होने के पूर्व तक्षशिला विश्वविद्यालय के सिंहद्वार पर पहुँचा। आकाश में सावन के घने काले बादलों के छा जाने से संध्या का आभास हो रहा था। बूँदा-बाँदी भी शुरू हो गई थी। उसने एक पल सावन के बादलों से भरे-पूरे आकाश को देखा और दूसरे पल उसकी आँखें हरी-भरी धरती पर आ टिकीं। आचार्य के निवास तक जानेवाली पगडंडी घास से पट चुकी थी, पर जीवक के कदम सही दिशा में बढ़ते चले गए।

जब जीवक आचार्य के कक्ष में पहुँचा, दीपधरों पर घृत के दीपक जल चुके थे। आचार्य को सामने देख जीवक ने साष्टांग प्रणाम किया। आचार्य ने आशीर्वाद दिया और पूछा, "वत्स जीवक, तुम खाली हाथ आए हो?"

जीवक एक क्षण संकोच में पड़ा, फिर वह विनीत स्वर में बोला – "हाँ आचार्यवर, मैं असफल रहा, औषधीय गुणों से हीन वनस्पति खोजने में।"

लेकिन आचार्य ने प्रसन्न होकर कहा, "वत्स, यह तुम्हारी अंतिम परीक्षा थी, तुम उत्तीर्ण हो गए। वास्तव में धरती पर ऐसी कोई वनस्पति है ही नहीं जो औषधीय गुण से रहित हो। ऋग्वेद में बताए गए रोगों और उपचारों के ज्ञान को जिन ऋषियों ने और आगे बढ़ाया, उनमें भारद्वाज और आत्रेय का नाम पहले आता है, इनके बाद धन्वंतरि, चरक, सुश्रुत आदि का। इनमें से सबने सभी वनस्पतियों को धरोहर माना और उन्हें प्राणियों के समान सजीव कहा। इनकी खोजों का लाभ हम सभी को प्राप्त हुआ है। वत्स जीवक! तुम इन्हें अवश्य याद रखना। इससे तुम कभी भ्रमित नहीं हो सकोगे, इनके परोपकारी कार्यों को और आगे बढ़ाते रहोगे।"

आचार्य एक क्षण के लिए मौन होकर जीवक को देखने लगे। जीवक की प्रसन्नता की कोई सीमा नहीं थी। आचार्य ने स्नेह से कहा, "वत्स, तुम कल प्रातः अपने नगर राजगृह के लिए प्रस्थान कर सकते हो।"

अगले दिन चलते समय जीवक को आचार्य मार्गव्यय और पाथेय देकर विदा करने लगे। जीवक की आँखों से आँसू बह रहे थे। आचार्य बार-बार अपनी डबडबाई हुई आँखें उत्तरीय से पोंछ रहे थे। जीवक आचार्य के चरण छूकर विदा हुए।

जीवक को याद आ रहा था – जिस दिन उसे ज्ञात हुआ कि वह एक अनाथ बालक है, उसे बहुत कष्ट हुआ था। सम्राट बिंबसार के पुत्र राजकुमार अभय ने उसे नवजात अवस्था में मिट्टी के एक ढेर पर पाया था। चूँकि वह

प्रतिकूल परिस्थिति में भी जीवित रहा, उसका नाम 'जीवक' रखा गया और उसका लालन-पालन राजकुमार ने करवाया था, इसलिए उसे कौमारभृत्य कहा जाने लगा। इस तरह उसका पूरा नाम जीवक कौमारभृत्य पड़ा। जीवक ने संकल्प लिया था कि मैं किसी पर निर्भर नहीं रहूँगा, कठोर परिश्रम और तप से योग्यता प्राप्त करूँगा और अपने पूरे सामर्थ्य से असहायों का सहायक बनूँगा। इसी संकल्प से प्रेरित होकर वे एक दिन आयुर्वेद पढ़ने के लिए तक्षशिला विश्वविद्यालय आए। उनकी कामना पूरी हुई। वे अपने को ऋषियों के अर्जित ज्ञान का उत्तराधिकारी पाकर धन्य हो गए थे। वे रोग-शोक मिटानेवाले एक कुशल वैद्य बन चुके थे।

जीवक तक्षशिला से चलकर अयोध्या नगरी पहुँचे। उन्हें सरयू नदी के तट पर बसी इस सुप्रसिद्ध नगरी को देखने की इच्छा थी। भव्य मंदिरों और सुंदर भवनों वाली इस नगरी के मार्ग पर जाते हुए उन्होंने सोचा – क्यों न यहाँ के प्रसिद्ध वैद्यों से मिला जाए और यहाँ की चिकित्सा-व्यवस्था के विषय में जानकारी प्राप्त की जाए। उन्हें अपने आचार्य से यह ज्ञात हुआ था कि उनके सहपाठी आचार्य देवदत्त अयोध्या नगरी के विख्यात वैद्य हैं। वे वैद्यराज देवदत्त से मिलने गए। जीवक का परिचय पाकर देवदत्त बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा, "वत्स, नगर सेठ की पत्नी के सिर में पिछले सात वर्षों से तीव्र पीड़ा है। मैं उसके उपचार में अब तक सफल नहीं हो पाया हूँ। मैं चाहता हूँ कि तुम नगर सेठ की पत्नी का उपचार करो। तुम शल्य-क्रिया में भी कुशल हो। आवश्यक हो तो उसके मस्तिष्क की शल्य-क्रिया भी कर सकते हो।" जीवक ने इस चुनौती को स्वीकार किया।

काफ़ी समय से बीमार होने के कारण नगर सेठ की पत्नी निराश हो चुकी थी। वह सोचने लगी थी, उसका रोग अब मरने के बाद ही छूटेगा। उसने जब युवा वैद्य जीवक को देखा तो बोली "वृद्ध वैद्य ही अनुभवी होते हैं। बेटे, तुम

क्या कर पाओगे?" जीवक ने विनम्रता से उसका धीरज बँधाया और गहराई से परीक्षण किया। उन्होंने शल्य-क्रिया की आवश्यकता नहीं समझी। उन्होंने गाय के पुराने घी से औषध तैयार की और नगर सेठ की पत्नी की नाक के छिद्र से औषध डाली। वह औषध सेठानी के मुँह से जैसे-जैसे बाहर निकलने लगी, उसका सिरदर्द कम होने लगा। अंततः वह स्वस्थ हो गई। जीवक की यह पहली सफलता थी। अयोध्या नगरी के वैद्यों ने जीवक का सम्मान किया। उन्हें नगर सेठ ने कई सहस्र स्वर्ण मुद्राएँ पुरस्कार के रूप में दीं।

राजगृह पहुँचकर उन्होंने अपने प्रतिपालक राजकुमार अभय से भेंट की और सारी स्वर्ण मुद्राएँ उन्हें देकर कृतज्ञता व्यक्त की। राजकुमार अभय ने अपने महल में ही उनके रहने की व्यवस्था कर दी।

राजगृह पहुँचने के कुछ ही दिनों के भीतर उन्होंने शल्य-क्रिया से दो असाध्य रोगियों को रोग मुक्त किया। उन्होंने एक युवक रोगी के पेट को खोलकर उसकी उलझी हुई आँतों की गाँठें खोलीं और पुनः सिलाई कर औषध का लेप लगा उसे स्वस्थ कर दिया। दूसरी शल्य-क्रिया उन्हें एक सेठ के मस्तिष्क की करनी पड़ी। सेठ को अन्य वैद्यों ने बता दिया था कि वह पाँच दिन से अधिक जीवित नहीं रह सकता। जब वह रोगी जीवक के पास आया तो उन्होंने एक शर्त रखी –

"तुम्हें इक्कीस माह तक बिस्तर पर लेटना पड़ेगा, सात माह दाएँ, सात माह बाएँ और सात माह सीधे।"

मरता क्या न करता, रोगी ने शर्त मान ली। उसकी खोपड़ी खोली गई, शल्य-क्रिया पूरी हुई। बिस्तर पर लेटने की बारी आई। अभी सात दिन ही बीते थे कि वह रो पड़ा, कहने लगा –

"वैद्यराज! मैं मर जाना चाहता हूँ, पर इस कष्ट में रहना नहीं चाहता।"

जीवक ने कहा –

"बाईं करवट से न सही, पर तुम्हें दाईं करवट तो सात माह लेटना ही होगा।"

रोगी ने स्वीकार किया। लेकिन, फिर सात दिन बाद वह चिल्ला पड़ा –

"वैद्यराज! मुझे कष्ट से उबारिए, मैं मरा जा रहा हूँ।"

जीवक ने फिर कहा –

"दाईं करवट से न सही, पर तुम्हें सीधे लेटकर सात माह तो बिताने ही होंगे।" रोगी ने राहत की साँस ली और वैद्यराज का आदेश मान लिया। लेकिन सात दिन बाद वह फिर कराह उठा –

"मुक्ति दीजिए वैद्यराज, मेरे प्राण निकल रहे हैं।"

जीवक ने कहा –

"अब आप उठिए और घर जाइए।" रोगी डर गया। जीवक ने उसे समझाया–

"अब आप रोगी नहीं रहे, आप स्वस्थ हैं, आपको मैं केवल इक्कीस दिन ही विश्राम देना चाहता था, लेकिन आप में धैर्य की कमी देख, मैंने इक्कीस दिनों को इक्कीस माह बताया था।"

सेठ स्वस्थ होकर विदा हुआ।

उन्हीं दिनों मगध के सम्राट बिंबसार अस्वस्थ हो गए। उनका निदान जीवक ने चुटकी बजाते ही कर दिया। सम्राट बिंबसार ने जीवक को मगध राज्य के श्रेष्ठ अलंकरण से सम्मानित किया और उन्हें अपना मुख्य चिकित्सक नियुक्त किया।

एक बार बिंबसार के मित्र अवंती नरेश चंडप्रद्योत पीलिया से पीड़ित हो गए। बिंबसार ने जीवक को अवंती भेजा। परंतु वैद्यराज जीवक के सामने एक विचित्र समस्या आ खड़ी हुई। अवंती नरेश को घी से बड़ी घृणा थी। उन्हें घी देखते ही उलटी आ जाती थी और जीवक की अधिकांश प्रभावकारी औषधियों का अनुपान गाय का घी ही होता था। यदि घी के साथ औषध न दी जाए तो चंडप्रद्योत का पीलिया न छूटे, पीलिया न छूटे तो बिंबसार का कोप हो,

जीवक का अपमान भी और यदि घी के साथ औषध दी जाए तो चंडप्रद्योत की उलटी शुरू हो और वह दंड का भागी बने। इसी ऊहापोह में पड़े जीवक ने निर्णय लिया कि चंडप्रद्योत को रोग मुक्त करना पहला लक्ष्य होना चाहिए और अपने प्राणों की रक्षा करना दूसरा।

जीवक ने चंडप्रद्योत से कहा "महाराज, निर्धारित तिथि और नक्षत्र में मुझे विशेष जड़ी-बूटियों को लाने के लिए घने वन में जाना होगा, मुझे तीव्रगति से चलनेवाला हाथी चाहिए और मैं चाहता हूँ कि राजप्रासाद से किसी भी समय मुझे निकलते हुए कोई रक्षक रोके नहीं।" जीवक के लिए अनुकूल व्यवस्था हो गई। जीवक ने अवंती नरेश चंडप्रद्योत को घी के साथ औषध देने का ऐसा समय बताया जब वे अवंती राज्य की सीमा पार कर मगध की सीमा में पहुँच जाएँ। वे तेज़ दौड़ने वाले हाथी पर सवार होकर भाग निकले। औषध खाकर अवंती नरेश चंडप्रद्योत को कष्ट तो हुआ, पर वह शीघ्र ही स्वस्थ हो गए। उन्होंने जीवक के सम्मान में बहुमूल्य वस्त्र राजगृह भेजे।
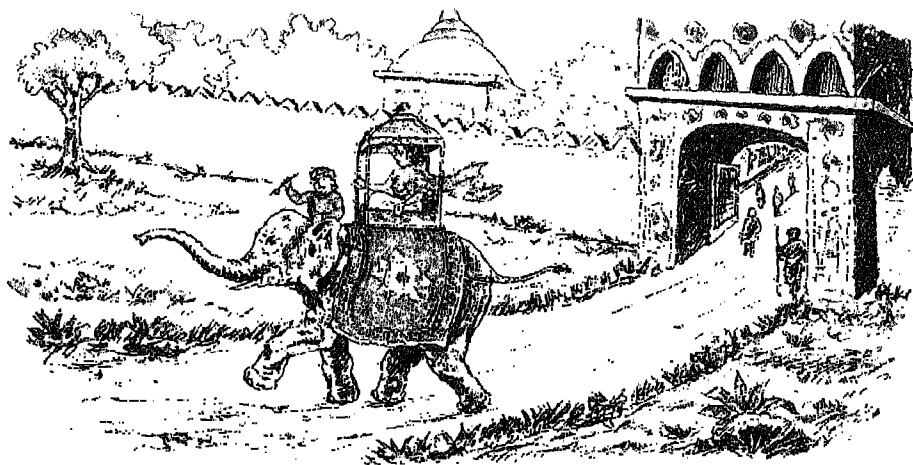
आयुर्वेद के ज्ञान से जीवक की सारी कामनाएँ धीरे-धीरे पूरी हो गई थीं। उन्हें धर्म, अर्थ और काम रूपी तीन पुरुषार्थ प्राप्त हो गए थे, अब वे मोक्ष के विषय में सोचने लगे। वे अपने युग के महान धर्मप्रवर्तक भगवान बुद्ध के दर्शन की इच्छा करने लगे। एक बार उन्हें भगवान बुद्ध की चिकित्सा का अवसर मिल गया। भगवान बुद्ध के पाँव में धारदार पत्थर से चोट लग गई थी। उनके पाँव से खून बहने लगा। जीवक ने उनके पाँव में शीघ्रता से रक्त-स्राव रोकनेवाली औषधियों का लेप लगाया और पट्टी बाँध दी। इसी बीच चिकित्सा-कार्य से उन्हें नगर के बाहर जाना पड़ा। वे भूल गए कि रक्त-स्राव के बंद हो जाने पर भगवान बुद्ध के पाँव से पट्टी को खोल देना चाहिए। कार्य से अवकाश मिलने पर जब वे लौटे तब तक इतनी रात हो गई थी कि

नगर का सिंहद्वार बंद हो चुका था। जीवक को यह सोच कर रातभर नींद नहीं आई कि भगवान बुद्ध को उस पट्टी से कितनी पीड़ा हो रही होगी। प्रातःकाल जब वे भगवान बुद्ध से मिलने गए, उन्होंने देखा कि भगवान बुद्ध के पाँव से पट्टी खुली हुई है। उनके पाँव की चोट ठीक हो गई है। भगवान बुद्ध उनके मन की बात समझ गए। उन्होंने कहा, "जीवक, जब तुम पट्टी खोलने के लिए चिंतित हो रहे थे, तभी मैंने पट्टी खोल दी थी।" जीवक ने आश्चर्य से भगवान बुद्ध की ओर देखा और उनके चरणों में नतमस्तक हो गए। उन्हें यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि भगवान बुद्ध ने उनके मन को अपने मन से जोड़ लिया है। वे उनके कृपापात्र बन चुके हैं।

जीवक को जन-जन की सेवा कर सम्मान पाने का अवसर मिला, उन्हें राज-वैभव भी प्राप्त हुआ और इन सब से उत्तम, सर्वपूज्य भगवान बुद्ध की असीम कृपा भी। उन्हें याद आ रहा था – तक्षशिला विश्वविद्यालय का वह अंतिम दिन, जब आचार्य ने उनसे कहा था – "आयुर्वेद के ज्ञान और अभ्यास से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष सब कुछ मिल जाता है।"

जीवक भगवान बुद्ध के शिष्यों के स्वास्थ्य की देखभाल करते थे। वे हमेशा भगवान बुद्ध के साथ रहना चाहते थे। लेकिन जन-जन को रोग-मुक्त रखने की तपस्या ही एक चिकित्सक का स्वधर्म है। अतः वे इस कल्याणकारी कार्य को नहीं छोड़ सके।

कौमारभृत्य जीवक वस्तुतः एक असाधारण वैद्य थे। इसलिए आयुर्वेद की परंपरा के पोषक और उन्नायक के रूप में चरक एवं सुश्रुत के साथ उन्हें भी याद किया जाता है।

– घनश्याम ओझा

प्रश्न-अभ्यास

बोध और विचार

(क) मौखिक

1. जीवक के खाली हाथ लौटने पर भी आचार्य ने उसे परीक्षा में उत्तीर्ण क्यों कहा?
2. लेखक ने आयुर्वेद के ज्ञान-भंडार को समृद्‌ध बनाने में किन-किन के योगदान को महत्त्वपूर्ण माना है?
3. कौमारभृत्य जीवक के नामकरण का क्या कारण था?
4. जीवक ने राजकुमार अभय के प्रति अपनी कृतज्ञता कैसे व्यक्त की?
5. जीवक ने अवंती नरेश चंडप्रद्‌योत से तेज़ चलने वाला हाथी क्यों माँगा?
6. जीवक के मन में भगवान बुद्‌ध के दर्शन की इच्छा क्यों उठी?

(ख) लिखित

1. आचार्य ने जीवक को विदा करते समय क्या-क्या सीख दी?
2. सेठ के मस्तिष्क की शल्य-क्रिया करने से पूर्व जीवक ने क्या शर्त रखी थी?
3. जीवक को ऐसा क्यों लगा कि वे भगवान बुद्‌ध के कृपा-पात्र बन गए हैं?
4. जीवक भगवान बुद्‌ध के साथ रहना चाहते हुए भी उनके साथ क्यों न रह सके?
5. सोदाहरण स्पष्ट कीजिए कि जीवक एक असाधारण वैद्‌य थे।
6. "असफलता बताकर क्या उत्तीर्ण हुआ जा सकता है?" — आशय स्पष्ट कीजिए।

भाषा अध्ययन

1. 'न' और 'ण' ध्वनि के उच्चारण के अंतर को समझते हुए नीचे लिखे शब्दों का शुद्‌ध उच्चारण कीजिए :

   गुण परीक्षण

   लगन ज्ञान

पोषण	रक्षण
चरण	अनुपान
परिमाण	प्रणाम

2. नीचे लिखे शब्दों से प्रत्यय अलग कीजिए :
औषधीय, परोपकारी, सिलाई, धारदार, भ्रमित, भारतीय।
3. निम्नलिखित समस्त पदों का विग्रह कीजिए और समास का नाम बताइए :
जैव-संपदा, सिंहद्वार, राजगृह, चिकित्सा-व्यवस्था, रक्त-स्राव, रोगमुक्त।
4. उदाहरण के अनुसार वाक्यों को बदलिए –
उदाहरण : वे गाय के पुराने घी से औषध तैयार कर चुके थे।
⟹ उन्होंने गाय के पुराने घी से औषध तैयार की।
(क) वह तक्षशिला विश्वविद्यालय के विशाल परिसर के बाहर जाकर ढूँढ़ चुका था।
(ख) वह अनेक अज्ञात वनस्पतियों का परीक्षण भी कर चुका था।
(ग) जीवक शल्य-क्रिया से दो असाध्य रोगियों को रोग-मुक्त कर चुका था।
5. निम्नलिखित वाक्यों में से सरल वाक्य, संयुक्त वाक्य और मिश्र वाक्य छाँटिए।
(क) जीवक का परिचय पाकर देवदत्त बहुत प्रसन्न हुए।
(ख) कितने जड़मति हैं वे लोग, जो इसे नष्ट करते हैं।
(ग) उसने गाय के पुराने घी से औषध तैयार की और नगर सेठ की पत्नी की नाक के छिद्र से औषध डाली।
(घ) वे भूल गए कि रक्त स्राव बंद हो जाने पर भगवान बुद्ध के पाँव से पट्टी को खोल देनी चाहिए।
(ङ) निर्धारित तिथि और नक्षत्र में मुझे विशेष जड़ी-बूटियों को लाने के लिए घने वन में जाना होगा।

योग्यता-विस्तार

प्राचीन भारत में अनेक महान चिकित्सक हुए हैं। प्रस्तुत पाठ में उनमें से कुछ के नाम का उल्लेख भी है, जिनमें से सुश्रुत के संबंध में आप कक्षा छह की हिंदी की पाठ्यपुस्तक भारती-भाग 1 में पढ़

चुके हैं। पुस्तकालय तथा अन्य स्रोतों से अन्य प्राचीन महान चिकित्सकों, विशेषतः धन्वंतरि और चरक के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए और कक्षा में उस जानकारी का आदान-प्रदान कीजिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

ओषधि - वह वनस्पति या जड़ी-बूटी जो दवा बनाने के काम आती है

औषध - दवाई

औषधीय - दवा से संबंधित

परिसर - भवन के आस-पास की भूमि, अहाता

वात्सल्य - मातृ-पितृवत् स्नेह

जड़मति - मूर्ख

सिंहद्वार - मुख्य द्वार

दीपधर - जिस पर दीपक रखा जाता है

साष्टांग प्रणाम - आठ अंगों से किया जाने वाला प्रणाम

धन्वंतरि - 1. पुराण के अनुसार समुद्र-मंथन से निकले हुए
2. धन्व के पुत्र और काशी के राजा दिवोदास जो धन्वंतरि संहिता के रचयिता तथा आयुर्वेद के जनक माने जाते हैं

चरक - आयुर्वेद के प्रसिद्ध प्राचीन आचार्य एवं चरक संहिता के रचयिता

सुश्रुत - प्रसिद्ध प्राचीन कालीन शल्यक्रिया विशेषज्ञ, सुश्रुत संहिता के रचयिता

पाथेय - यात्री द्वारा पथ में खाने के लिए ले जाया गया खाद्य पदार्थ

उत्तरीय - ऊपर का वस्त्र, गमछा, दुपट्टा

निदान - रोग की पहचान करना, रोग का मूल कारण जानना

शल्यक्रिया - चीर-फाड़ द्वारा इलाज करना

असाध्य रोग - वह रोग जिसका निदान कठिन हो, लाइलाज

अलंकरण - उपाधि से विभूषित करना, सम्मान

राजप्रासाद - राजमहल

नतमस्तक - सिर झुकाना

निर्मित - बना हुआ

10. पथिक से

(प्रस्तुत कविता में कवि ने जीवन-पथ के पथिक को हर स्थिति में पथ पर निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी है। जीवन में दुख, निराशा और अनेक बाधाओं की भाँति ही सौंदर्य की अमिट प्यास, प्रेम और जीने की चाह भी कर्तव्य-पथ से विचलित कर सकती है, किंतु इन सबका साहस और विवेकपूर्वक सामना करते हुए मनुष्य को अपने कर्तव्य-पथ को नहीं भुलाना चाहिए।)

पथ भूल न जाना पथिक कहीं।

पथ में काँटे तो होंगे ही,
दूर्वादल-सरिता, सर होंगे।
सुंदर गिरि-वन-वापी होंगी,
सुंदर-सुंदर निर्झर होंगे।
सुंदरता की मृग-तृष्णा में,
पथ भूल न जाना पथिक कहीं।।

जब कठिन कर्म-पगडंडी पर,
राही का मन उन्मुख होगा।
जब सपने सब मिट जाएँगे,
कर्तव्य मार्ग सम्मुख होगा।
तब अपनी प्रथम विफलता में,

अपने भी विमुख-पराए बन,
आँखों के सम्मुख आएँगे।
पग-पग पर घोर निराशा के,
काले बादल छा जाएँगे।
तब अपने एकाकीपन में,
पथ भूल न जाना पथिक कहीं ।।

रणभेरी सुन, कह 'विदा, विदा',
जब सैनिक पुलक रहे होंगे।
हाथों में कुंकुम थाल लिए,
कुछ जलकण ढुलक रहे होंगे।

कर्तव्य प्रेम की उलझन में
पथ भूल न जाना पथिक कहीं।।

कुछ मस्तक कम पड़ते होंगे,
जब महाकाल की माला में।
माँ माँग रही होगी आहुति,
जब स्वतंत्रता की ज्वाला में।
पल भर भी पड़ असमंजस में,
पथ भूल न जाना पथिक कहीं।।

— शिवमंगल सिंह 'सुमन'

प्रश्न-अभ्यास

बोध और सराहना

(क) मौखिक

1. कवि किस पथ को न भूलने की बात कर रहा है?
2. कवि ने काँटे शब्द का प्रयोग किसके लिए किया है?
3. "स्वतंत्रता की ज्वाला में आहुति" माँगने वाली माँ कौन है?

(ख) लिखित

1. सुंदरता को मृगतृष्णा क्यों कहा गया है?
2. कवि के अनुसार मनुष्य-जीवन की पहली विफलता कौन-सी होगी?
3. कर्तव्य और प्रेम की उलझन को स्पष्ट कीजिए।
4. कवि को किन-किन स्थितियों में पथिक के पथ भूलने की आशंका है?
5. राही एकाकीपन का अनुभव कब करता है?

योग्यता-विस्तार

गोपाल प्रसाद व्यास की 'खूनी हस्ताक्षर' और सुभद्राकुमारी चौहान की 'वीरों का कैसा हो वसंत' कविताएँ खोजकर पढ़िए और उनकी तुलना प्रस्तुत कविता से कीजिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

पथिक - राही, जीवन-पथ का राही, मनुष्य
वापी - छोटा तालाब, बावड़ी
मृगतृष्णा - भ्रम, धूप के समय मरुभूमि में वायु में प्रकाश की किरणों के परावर्तन के कारण ऐसा जान पड़ता है मानो सामने जलाशय है। इसी दृष्टि-भ्रम को मृगतृष्णा कहते हैं।
एकाकीपन - अकेलापन
रणभेरी - युद्ध के समय बजाया जानेवाला नगाड़ा
पुलक - खुशी, प्रसन्नता से भरा रोमांच
असमंजस - दुविधा
आहुति - हवन, बलिदान
कुंकुम - रोली
महाकाल - कालों का काल, काल प्रवर्तक, महादेव

11. बाढ़ का बेटा

(इस ललित निबंध का प्रमुख पात्र बिसेसर बचपन से ही बाढ़ से खेलता आया है। बाढ़ औरों के लिए भले ही विनाशकारी होगी, प्रलयंकर होगी, पर बिसेसर तो बाढ़ देखते-देखते पला-बढ़ा है। वह तो बाढ़ का बेटा है। उसके दादा ने उसे बाढ़ के प्रकोप से जूझने के सारे गुर सिखाए हैं। उसे अपने सामर्थ्य, अपनी बाहों की शक्ति पर अपार विश्वास है। बाढ़ पीड़ितों को दी गई 'रिलीफ़' उसे भीख लगती है। वह आकाश की ओर नहीं देखता, उसके पैर तो मज़बूती से धरती पर टिके हैं। वह तो बाढ़ को भी जीवन का यथार्थ मानता है। बाढ़ तो आती ही रहेगी, नाश भी करेगी, पर बाढ़ संहारक ही नहीं वरदायक भी है। विनाश के बाद नवनिर्माण होगा। बिसेसर की आँखों के सुनहले स्वप्न हम सभी को यही प्रेरणा देते हैं।)

"बाढ़ आ रही है"

सुकिया ने कहा। बिसेसर ने ज़रा सिर उठाकर उसकी ओर देखा और फिर अपने जाल की मरम्मत में लगा।

बाढ़ आ रही है — क्या बिसेसर यह नहीं जानता? आज चार दिनों से जो उमस-उमस रही उत्तर ओर, हिमालय की तराई में जो लगातार बिजली चमकती रही, बादल गरजते रहे, वे क्या यह सूचना नहीं देते थे कि बाढ़ आएगी ही।

बाढ़ उसके लिए कोई नई चीज़ है?

बचपन से ही वह बाढ़ देखता आया है! देखता आया है, उससे खेलता आया है। बीच चौर में है उसका यह गाँव। चार महीने तक तो यह एक टापू ही बना रहता है।

बिसेसर को अपने बचपन की याद आ रही है और याद आ रहे हैं उसके दादा प्रयाग सहनी।

बूढ़े प्रयाग सहनी इसी तरह एक दिन जाल बिछाकर बैठे थे कि उन्होंने बिसेसर को पुचकारकर बुलाया –

"आओ बेटे, एक नया खेल सिखला दें तुम्हें।"

और सचमुच खेल-खेल में ही उन्होंने बिसेसर को क्या-क्या नहीं सिखला दिया।

जाल की मरम्मत करना, नया जाल बनाना। जाल का तागा कैसा होना चाहिए, जाल को तैयार कैसे करना चाहिए। जाल को कैसे सँभालना चाहिए,

कैसे फेंकना चाहिए। सिर के चारों ओर घुमाकर फेंकते ही वह एक बड़ा-सा वृत्त बनाता पानी में इस तरह गिरे कि उस वृत्त के दायरे की मछलियों को निकल भागने का मौका ही नहीं मिले! प्रयाग सहनी ने मछली मारने के सारे गुर बिसेसर को बता दिए थे।

जब बाढ़ अपने ओज पर होती, वह बिसेसर को नाव पर बिठाकर चल पड़ते, चौर की ओर, दिन में ही नहीं; अँधेरी रात को भी। "डरना मत बेटे, बाढ़ में देवी-देवता होते हैं, भूत-पिशाच नहीं।"

जब नाव बीच चौर में पहुँचती, बूढ़ा पतवार चलाना छोड़ देता, नाव को स्थिर कर देता और उसकी माँगी पर जाल लिए खड़ा होकर पानी की ओर एकटक घूरता। बिसेसर को याद नहीं कि कभी उसके दादा का निशाना चूक गया हो!

प्रयाग सहनी ने बिसेसर को नाव के बारे में भी बहुत कुछ शिक्षा दे दी थी — किस लकड़ी की नाव अच्छी होती है, से लेकर जब नाव भँवर में पड़ जाए, तो उसे कैसे निकालना चाहिए, वहाँ तक।

बाढ़ आ रही है, तो आए, प्रयाग सहनी कहा करते — "बेटे, बाढ़ से मत घबराना, भगवान खुश होते हैं, तो पानी देते हैं! बाढ़ नहीं आए, तो मछली कहाँ से आएगी। और अपनी दो बीघा ज़मीन से ही जो परिवार-भर की गुजर चल जाती है, क्या उसमें बाढ़ की देन नहीं है!"

दो बीघा ज़मीन और परिवार-भर की गुज़र। बिसेसर को कभी अनाज नहीं खरीदना होता । हर साल बाढ़ आती है और कुछ नई, कुँआरी मिट्टी खेतों में डाल जाती है । वह नई, कुँआरी मिट्टी — न्यूनी-सी चिकनी, सोने के रंगवाली। ज्यों ही उसमें धान रोपिए, देखते ही देखते वह छाती-भर बढ़ जाएगा।
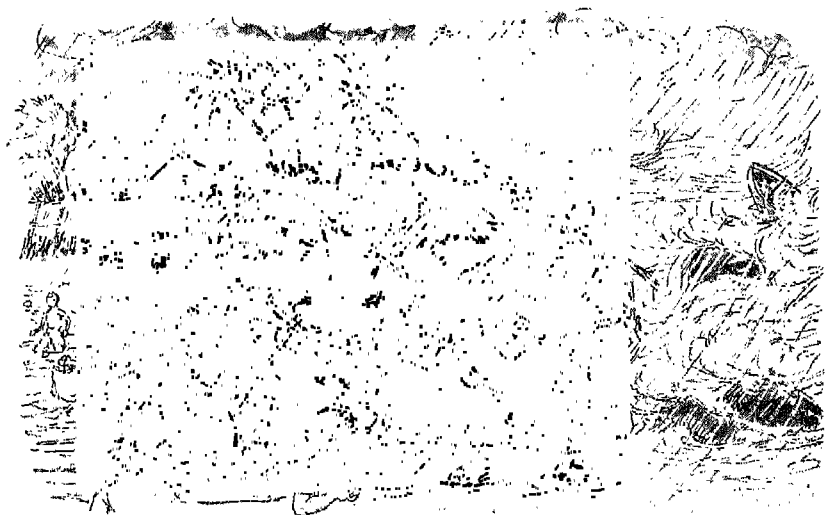
मेड़ ऊँची करो, कुदाल मज़बूती से पकड़ो, समय पर खेती करो, बाढ़ आती है तो आने दो! लगा, जैसे प्रयाग सहनी आज भी बिसेसर को उपदेश नहीं, आदेश दे रहे हों!

और सचमुच बाढ़ आ गई!

किंतु इस साल की बाढ़ को क्या सिर्फ़ बाढ़ कहा जा सकता है?

यह बाढ़ नहीं आई, जैसे जंगल का बाघ आया – उछलता-कूदता, गरजता-तरजता।

लोगों ने अलग से देखा तीन हाथ ऊँची पानी की दीवार जैसे दौड़ती हुई चली आ रही हो – खेतों को, खड्डों को, मेड़ों को, बाँधों को डुबोती, पाटती, तोड़ती!

लोग भगे! हलवाहे हल-बैल लेकर भगे, चरवाहे गाय-भेड़ लेकर भगे। जो जहाँ था, सिर पर पैर रखकर भागा।

पानी गाँव में घुस गया, अब घरों में घुस रहा है। पहले सारा गाँव टापू लगता था, अब हर घर टापू लग रहा है।

बिसेसर दरवाज़े की चीज़ों को सहेज रहा था, ढोरों को सँभालता था, चारे को सँभालता था, ईंधन को सँभालता था, नाव को सँभालता था, जाल को सँभालता था, कुदाल को सँभालता था, पतवार को सँभालता था और एक को सँभालता होता कि दूसरे को संकट में देखता।

उधर आँगन में सुकिया परेशान है, अंत में वह चिल्ला उठी – "पानी चूल्हे तक चढ़ आया; दौड़ो हो!"

बिसेसर कहाँ-कहाँ दौड़े, क्या-क्या बचाए? पानी बढ़ता गया, बढ़ता गया। बाहर की सारी चीज़ें भीग गईं, भीतर की भीग रही हैं – कपड़े और अन्न तक को नहीं बचा सका वह। अंत में तो ऐसा लगा कि उसकी यह झोंपड़ी भी कहीं बह न जाए। जो कुछ संभव हुआ, लेकर वह पहुँचा गाँव के नुनफर पर।

गाँव का यह नुनफर आज गाँव का गोवर्धन बन गया है। बाल-बच्चे, माल-गोरू, अन्न-धन, चारा-ईंधन लेकर लोगों ने इस नुनफर की शरण ली है।

"अरे! कलछी तो घर में ही छूट गई।" सुकिया की बात सुनकर बिसेसर झल्लाया।

जहाँ पहले हाहाकार था, वहाँ अब चीत्कार है, आर्तनाद है। लेकिन रोने-धोने से होता है क्या, लोग धीरे-धीरे शांत हो रहे हैं।

प्रयाग सहनी कहा करते थे, जो बाढ़ जितनी तेज़ी से आती है, वह उसी तेज़ी से भागती भी है। दूसरे ही दिन से पानी घटने लगा था, तो भी गाँव से निकलते-निकलते सात दिन लग ही गए।

उफ़, इन सात दिनों में गाँव की कैसी दुर्गत हो गई है।

लगता है, गाँव में किसी ने बमबारी की हो। ज्यों ही पानी घटने लगा, कच्ची मिट्टी की दीवारें, जो भीग गई थीं, धड़ाधड़ गिरने लगीं । चारों ओर ढूह ही ढूह, मलबा ही मलबा दिखाई पड़ता है।

खेत की फ़सल गई, घर का अन्न भी सड़ गया – अगले दिन कैसे कटेंगे, सारे गाँव में मायूसी है। सुकिया उदास है, बिसेसर की आँखों में नींद नहीं आ रही है! बाढ़ आती थी, जाती थी, यह क्या बाढ़ आई थी? नहीं-नहीं –

नहीं-नहीं – बिसेसर इस तरह बैठा-बैठा झींखता नहीं रहेगा।

उसके दादा कहा करते थे, "बेटा, जो मालिक लेता है, वही देता है, बशर्ते कि आदमी जाँगर चलावे!"

बिसेसर जाँगर चलाएगा, हाथ-पैर से काम लेगा, ये पुट्ठे किस काम के – यदि ये संकट में काम नहीं आए।

बिसेसर ने कुदाल उठाई, घर में, दरवाज़े पर जहाँ-जहाँ कीचड़ जम गई थी, साफ़ कर दिया। फिर उसी कुदाल से सारी सड़ी-गली चीज़ों को बटोरकर एक खड्डे में डाल दिया–खाद भी बनेगी यह! जहाँ-जहाँ गंदगी थी, उसकी कुदाल वहाँ-वहाँ पहुँची! दो दिन में ही उसके घर-बार फिर चमकने लगे।

सुकिया ने इस काम में कम मदद नहीं की।

फिर बिसेसर कुदाल उठाकर अपने खेत पहुँचा। मेड़ों को दुरुस्त किया, खड्डों को भरा। वह खेत में फिर धान रोपेगा; जाँगर नहीं चलाएगा, तो गुजर कैसे होगी?

दिन-भर वह कुदाल चलाता है, रात में जाल उठाता है और चल पड़ता है

चौर में मछली मारने। अजीब रही इस साल की बाढ़! लगता है, सारी मछलियों को भी वह बटोरकर ले गई है। लेकिन बिसेसर हार नहीं मानेगा!

दिन-भर खेत में, रात-भर चौर में -- बिसेसर ने इस दानवी बाढ़ की चुनौती स्वीकार कर ली है।

एक दिन सुकिया ने कहा – "रिलीफ़ आई है, चावल बँट रहे हैं, कपड़े बँट रहे हैं।"

"फिर रिलीफ़ आई है! भूकंप के साल भी आई थी! रिलीफ़ का क्या मानी होता है, तू समझती है।"

"मैं क्या जानूँ, गाँव के कई लोग रिलीफ़ लेने गए हैं।"

जो जाते हैं, जाने दे! रिलीफ़ मानी भीख। दादा ने मरते समय कहा था, "बेटा, भूखों मर जाना, भीख मत माँगना! लोगों को भीख माँगने दे, तू इस कुदाल और जाल-पतवार की खैर मना।"

बोरे के बोरे चावल, गड्डे के गड्डे नोट बँट रहे हैं, लेकिन बिसेसर अचल, अडिग अपने काम में जुटा है।

"अब पानी कम हो रहा है; अपनी हँसुली दे, बंधक रखकर कुछ पैसे ले आऊँ और बीज खरीदकर धान रोप दूँ।"

सुकिया कुछ उज्र कर सकती थी? उसने हँसकर हँसुली उतार दी । हँसुली हाथ में रखते ही बिसेसर की आँखें छलछला आईं – यह पहली बार है जब उसे बीवी का गहना बंधक रखना पड़ रहा है! लेकिन वह तुरंत और हँसकर बोला – "भगवान मालिक हैं सुक्कोरानी, फ़सल आएगी और हँसुली के साथ सूद में करनफूल भी लाएगी!"

यहाँ से बीस मील पर बीज मिलता है। दूसरे दिन थोड़ी रात रहते बिसेसर यहाँ से चला और आधी रात को नाव पर बीज लादकर पहुँचा।

आज भोर से ही वह खेत में धान रोप रहा है! उसकी बगल में सुकिया है। सुकिया यों तो घर-आँगन के ही काम में लगी रहती थी, लेकिन बाढ़ के पानी का क्या भरोसा? और खेत सूख गया तो फिर धान में हरियरी आने में ही पखवाड़ा लग जाएगा। अतः वह भी जुटी है, डटी है।

हरे-हरे धान के बीज – ज़मीन पाते ही जैसे सिर उठाने लगते हों। बिसेसर खेत रोप रहा है और उसके रोम-रोम पुलकित हो रहे हैं।

बाढ़ आती है, बाढ़ जाती है। समय पर यदि खेती हो गई, तो सारी क्षति-पूर्ति हो जाती है।

उसकी आँखों में वह दृश्य नाच रहा है, जब ये बीज लहलहा उठेंगे, बढ़ने लगेंगे, फैलने लगेंगे। कातिक में छाती-भर धान आ जाएगा और माघ आते ही इन खेतों में सरसों का पीला समुद्र लहराने लगेगा।

उसी समय आकाश में एक हवाई जहाज़ जा रहा था – इधर बाढ़ क्या आई, हवाई जहाज़ की भरमार हुई। नेता जा रहे हैं, अफ़सर आ रहे हैं, इंजीनियर आ रहे हैं। सभी देखते-फिरते हैं, इस प्रलय-कांड से लोगों को त्राण कैसे मिले!

सुकिया का ध्यान ऊपर गया। वह बोली – "वह हवाई जहाज़ जा रहा है।"

बिसेसर अपनी उँगलियों से बीजों को छिटकाते और रोपते हुए बोला –

"हवा में मत देख, हमारा काम ज़मीन देखना है, हम ज़मीन देखें। वे अपना काम कर रहे हैं, हम अपना काम करें।"

और सचमुच उसकी नज़र ऊपर नहीं गई। वह उसी लगन से, तल्लीनता से अपना खेत रोपता रहा, रोपता रहा!

– रामवृक्ष बेनीपुरी

प्रश्न-अभ्यास

बोध और विचार

(क) मौखिक

1. सुकिया द्वारा बाढ़ की सूचना दिए जाने पर बिसेसर ने कोई प्रतिक्रिया क्यों नहीं की?
2. बिसेसर को बाढ़ के आने का अनुमान पहले से ही कैसे हो गया था?
3. गाँव के नुनफर को गाँव का गोवर्धन क्यों कहा गया है?
4. "जो मालिक लेता है, वही देता है।" – इस कथन की पुष्टि में बिसेसर के दादा ने क्या शर्त रखी?
5. सुकिया की हँसुली हाथ में लेते ही बिसेसर की आँखें क्यों छलछला गईं?
6. सुकिया भी खेती के काम में बिसेसर के साथ क्यों जुट गई?

(ख) लिखित

1. प्रयाग सहनी ने खेल-खेल में बिसेसर को क्या-क्या सिखा दिया था?
2. प्रयाग सहनी बाढ़ आने को भी भगवान की खुशी कहते हैं। क्यों?
3. "किंतु इस साल की बाढ़ को क्या सिर्फ़ बाढ़ कहा जा सकता है।" लेखक ने ऐसा क्यों कहा?

4. सात दिन रही बाढ़ ने गाँव की क्या दुर्दशा कर दी थी?
5. बाढ़ के कारण बिसेसर को किन-किन संकटों से गुज़रना पड़ा?
6. बिसेसर की दृष्टि में 'रिलीफ़' का क्या अर्थ है और क्यों?
7. बाढ़ के कारण उत्पन्न स्थिति को सुधारने के लिए बिसेसर ने क्या-क्या किया?
8. खेत रोपते समय बिसेसर के मन में क्या-क्या कल्पनाएँ उठ रही थीं?
9. सुकिया द्वारा हवाई जहाज़ की बात सुनकर भी बिसेसर तल्लीन होकर खेत क्यों रोपता रहा?
10. "हमारा काम ज़मीन देखना है।" — इस कथन में 'ज़मीन देखने' से क्या आशय है?

भाषा-अध्ययन

1. निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए :

बाढ़	बिसेसर	खड्ड	हलवाहा	ईंधन	झोंपड़ी
चीत्कार	आर्तनाद	ढूह	धड़ाधड़	झींखता	पखवाड़ा

2. निम्नलिखित शब्दों में से पुनरुक्त शब्द युग्म छाँटिए :

उमस-उमस	उछलता-कूदता	नहीं-नहीं	जहाँ-वहाँ
घर-बार	निकलते-निकलते	रोने-धोने	रोम-रोम

3. निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए :

(क) चारों ओर ढूह ही ढूह, मलबा ही मलबा दिखाई पड़ता है।

(ख) चार महीने तक तो यह एक टापू ही बना रहता है।

(ग) वे क्या यह सूचना नहीं देते थे कि बाढ़ आएगी ही।

आपने उपर्युक्त तीनों वाक्यों में 'ही' निपात पढ़ा है। वाक्य में निपात का प्रयोग कहीं भी किया जा सकता है और वह जिस पद के साथ लगता है उस पर बल देता है। वाक्य (क) में 'ही' के प्रयोग से ढूह और मलबा की अधिकता और विशालता का अर्थ निकलता है। वाक्य (ख) में 'ही' निपात मात्र टापू के होने और किसी अन्य के न होने का द्योतन करता है। वाक्य (ग) में 'ही' बाढ़ के अवश्यंभावी होने का संकेत करता है। इस प्रकार के अन्य तीन उदाहरण ढूँढ़ कर लिखिए।

4. निम्नलिखित वाक्यों को उदाहरण के अनुसार संयुक्त वाक्यों में बदलिए :

उदाहरण : बिसेसर ने ज़रा सिर उठाकर उसकी ओर देखा।

⟹ बिसेसर ने ज़रा सिर उठाया और उसकी ओर देखा।

(क) बिसेसर ने कुदाल से सारी सड़ी-गली चीज़ों को बटोर एक खड्डे में डाल दिया।

(ख) बूढ़ा उसकी माँगी पर जाल लिए खड़ा हो कर पानी की ओर एकटक घूरता।

(ग) वह बिसेसर को नाव पर बिठाकर चौर की ओर चल पड़ते।

(घ) बिसेसर ने दरवाज़े की चीज़ों को सहेजकर ढोरों को सँभाला।

(ङ) जो कुछ संभव हुआ, वह लेकर गाँव के नुनफर पर पहुँचा।

5. निम्नलिखित वाक्यों में उपयुक्त विराम-चिह्न लगाइए :

(क) लोग भगे-हलवाहे हल बैल लेकर भगे चरवाहे गाय भेड़ लेकर भगे

(ख) उधर आँगन में सुकिया परेशान है अंत में वह चिल्ला उठी पानी चूल्हे तक चढ़ आया दौड़ो हो

(ग) बिसेसर कहाँ कहाँ दौड़े क्या क्या बचाए

(घ) बेटा भूखों मर जाना भीख मत माँगना लोगों को भीख माँगने दो तू इस कुदाल और जाल पतवार की खैर मना

योग्यता-विस्तार

1. "बिसेसर बाढ़ का सच्चा बेटा है।" इस विषय पर कक्षा में चर्चा कीजिए।
2. "विपत्ति में धैर्य की परीक्षा होती है।" – इस कथन को पुष्ट करने वाली कुछ अन्य घटनाओं/कहानियों का संकलन कीजिए और कक्षा में सुनाइए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

तराई - पहाड़ के नीचे का मैदान या प्रदेश

चौर - ताल, जहाँ वर्षा और बाढ़ से गहरा पानी एकत्र हो जाता है

बाढ़ का ओज - बाढ़ का ज़ोर

नाव की माँगी	-	नाव का वह सिरा जहाँ बैठकर नाविक नाव चलाता है
कुँआरी मिट्टी	-	नई मिट्टी
न्यूनी-सी चिकनी	-	मक्खन-सी चिकनी
नुनफर	-	ऊँची और ऊसर ज़मीन
आर्तनाद	-	दुख भरी आवाज़
ढूह	-	किसी वस्तु का ढेर
झींखता	-	दुखी होता
जाँगर	-	शरीर का बल
हँसुली	-	गले में पहनने का आभूषण
उज्र	-	किसी कार्य या बात का विरोध करना/आपत्ति करना
बंधक	-	गिरवी रखना
करनफूल	-	कान में पहना जाने वाला गहना
त्राण	-	मुक्ति या छुटकारा

12. प्रदूषण

(प्रस्तुत पाठ में प्रदूषण के दुष्प्रभाव के कारण पर्यावरण में होने वाले परिवर्तन और असंतुलन पर विस्तृत चर्चा की गई है। साथ ही इसमें यह चेतावनी भी दी गई है कि यदि बढ़ते हुए प्रदूषण पर समय रहते नियंत्रण नहीं किया गया तो हमारी पृथ्वी एक दिन जीवन रहित हो जाएगी। इस संकट से बचने के लिए आवश्यक है कि हम प्रकृति से तालमेल बनाए रखें और प्रकृति-प्रेम संबंधी प्राचीन भारतीय संस्कारों को न भूलें। इस दिशा में विद्‌यार्थी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।)

हम सभी जानते हैं कि धरती पर जीवन प्रकृति-संतुलन से ही संभव हो सका है। धरती वनस्पतियों से पूरी तरह ढक न जाए इसलिए घास खानेवाले जानवर पर्याप्त संख्या में थे और इन जानवरों की संख्या अधिक न हो जाए इसलिए हिंस्र जंतु भी थे। इस प्रकार प्रकृति में वनस्पति, जीव-जंतु आदि का अनुपात संतुलित और नियंत्रित बना रहता था। इससे पर्यावरण स्वच्छ और जीवन के अनुकूल बना रहता था। परंतु आज मनुष्य ने अवांछित कार्यों से प्रकृति का संतुलन बिगाड़ दिया है। वैज्ञानिक आविष्कारों के कारण बड़े पैमाने पर उद्‌योग-धंधे तो पनपे हैं ही, जनसंख्या का भयंकर विस्फोट भी हुआ।

इस बढ़ती हुई आबादी को खिलाने के लिए उसी मात्रा में अन्न, सब्ज़ी, फल आदि चाहिए, रहने के लिए घर चाहिए, पहनने के लिए कपड़े चाहिए और इसी प्रकार की अन्य ज़रूरतों की पूर्ति के लिए विविध प्रकार की सामग्री चाहिए। खेती करने के लिए, घर बनाने के लिए, कल-कारखाने लगाने के

लिए, सड़कें और रेल पटरियाँ बिछाने के लिए धरती चाहिए। इसलिए बड़े पैमाने पर जंगल काटे गए। इसके अलावा हमारे कल-कारखाने कच्चे माल के लिए जंगलों पर ही निर्भर हैं। इसलिए पिछले वर्षों में जिस गति से जंगलों का सफ़ाया हुआ है, वैसा कभी नहीं हुआ था। नई तकनीकों से पेड़ काटने की गति तो खूब बढ़ी किंतु उतनी ही गति से कटे हुए पेड़ों की जगह नए पेड़ उगाने का प्रयत्न नहीं किया गया। बढ़ती हुई आबादी को खिलाने के लिए खेतों को रासायनिक उर्वरक चाहिए और पौधों को कीटाणु हानि न पहुँचाएँ इसलिए कीटनाशी दवाइयाँ चाहिए। इन उर्वरकों और कीटनाशी दवाइयों के कारण मिट्टी प्रदूषित होती जा रही है।

बड़े-बड़े उद्योग-धंधों और बढ़ते हुए शहरीकरण के कारण बड़े-बड़े नगर बस गए। इन नगरों से निकलने वाला कूड़ा-कचरा तथा कारखानों से निकलनेवाले अपशिष्ट पदार्थ अंत में नदियों या जलाशयों में ही गिरते हैं। इस कारण नदियों और जलाशयों का जल प्रदूषित होता जा रहा है। खुली भूमि में भी कूड़ा-कचरा
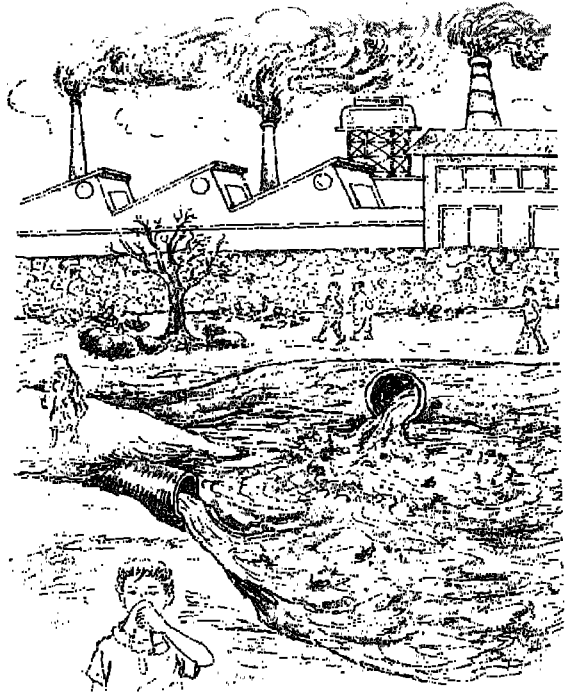
डाला जाता है। इन कचरों में बहुत तरह के ज़हरीले रसायन होते हैं। बड़े-बड़े कल-कारखाने, वाहन, बिजली तापघर आदि बहुत अधिक धुआँ उगलते हैं। धुएँ में धूलकण, कार्बनकण, सल्फर डाइऑक्साइड, नाइट्रोजन डाइऑक्साइड, कार्बन मोनोऑक्साइड आदि होने के कारण वायु दूषित हो जाती है। इस प्रकार आज भूमि, पानी और हवा तीनों ही प्रदूषित होते जा रहे हैं।

इतना ही नहीं, आज थल, जल और नभ तीनों में वैज्ञानिक आविष्कारों के फलस्वरूप विभिन्न प्रकार के तेज़-से तेज़ चलनेवाले यान बन गए हैं। इससे यातायात में बड़ी सुविधा हुई है। दुनिया छोटी हो गई है और लोग एक स्थान से दूसरे स्थान तक शीघ्रता और सुगमता से आने-जाने लगे हैं। ये अनवरत दौड़ती हुई रेलगाड़ियाँ, बसें, बड़े-बड़े जलपोत और विमान लगातार धुआँ तो उगलते ही हैं, शोर भी पैदा करते हैं। इससे वायु-प्रदूषण के साथ-साथ ध्वनि-प्रदूषण भी बढ़ता जा रहा है। आज रॉकेट के द्वारा अनेक प्रकार के अंतरिक्षयान अंतरिक्ष में छोड़े जा रहे हैं। इनसे हमारी पृथ्वी का ओज़ोन मंडल प्रभावित हो रहा है। इस मंडल में ओज़ोन की जो मोटी परत है, वही सूर्य की पराबैंगनी किरणों

के दुष्प्रभाव से पृथ्वी के जीव-जंतुओं और वनस्पतियों की तथा हमारी रक्षा करती है। वैज्ञानिकों का कहना है कि जब तक पृथ्वी के चारों ओर ओज़ोन की परत नहीं थी तब तक धरती पर जीवन प्रारंभ नहीं हुआ था। औद्योगिक विकास ने जहाँ हमें अनेक प्रकार की सुख-सुविधाओं की भौतिक चीज़ें उपलब्ध कराई हैं, वहीं उसने वायुमंडल में क्लोरो-फ्लोरो कार्बन नामक गैस की मात्रा भी बढ़ा दी है। इससे ओज़ोन परत में छेद हो जाता है। इसके कुप्रभाव से ओज़ोन की मात्रा में कमी हो रही है। यदि ओज़ोन गैस की परत और भी पतली हो गई तो फिर सूर्य से आ रही पराबैंगनी किरणों से बचाव कैसे होगा? यदि यही रफ़्तार रही तो पृथ्वी की परिस्थितियाँ और अधिक बिगड़ती चली जाएँगी। बहुत संभव है कि वातावरण का औसत ताप 1.5° सेल्सियस से 4.5° सेल्सियस तक बढ़ जाए। ध्रुवों पर जमी बर्फ़ पिघल जाए और हमारी धरती जलमग्न हो जाए। तब यह भी संभव है कि ध्रुव प्रदेश हमारे निवास के योग्य बन जाए और जहाँ आबादी है वह स्थान समुद्र के गर्भ में समा जाए।

आज चारों प्रकार के प्रदूषण — भूमि-प्रदूषण, जल-प्रदूषण, वायु-प्रदूषण, ध्वनि-प्रदूषण फैल रहे हैं। भविष्य में इनका दुष्प्रभाव कितना फैलेगा, बताना मुश्किल है। हम जानते हैं कि प्रायः सभी जीवधारियों के लिए प्राणवायु (ऑक्सीजन) आवश्यक है। यदि प्राणवायु दूषित हो जाएगी तो जीवधारियों को जान के लाले पड़ जाएँगे। हवा के बाद हमारी दूसरी आवश्यकता है पानी। पानी भी अब शुद्ध नहीं मिलता, जबकि सभी जीव-जंतु और पेड़-पौधों को शुद्ध पानी ही चाहिए। यह सभी जानते हैं कि नदी में यदि एक स्थान का पानी दूषित हो जाता है तो पूरी नदी का पानी प्रदूषित हो जाता है।

आज हमारा मौसम-चक्र बहुत कुछ बदल गया है बल्कि अनिश्चित-सा हो गया है। अब कहीं अतिवृष्टि होती है, कहीं अल्पवृष्टि तो कहीं अनावृष्टि। कहीं इतनी वर्षा होती है कि बाढ़ के कारण जन और धन की अपार हानि होती है, तो कहीं बिलकुल वर्षा नहीं होती, जिससे खेत में खड़ी फ़सलें नष्ट हो जाती हैं। कभी-कभी जब फ़सल पक जाती है तब मूसलाधार वर्षा हो जाती है, जिससे अनाज को घर तक लाना असंभव हो जाता है। अधिक गरमी पड़ने तथा समय से मानसून न आने को भी प्रदूषण से जोड़ा जा रहा है। ये प्राकृतिक विपदाएँ इस कारण बढ़ती जा रही हैं कि हमारा पर्यावरण प्रदूषित होता जा रहा है और प्राकृतिक संतुलन भी बिगड़ता जा रहा है। मौसम में इस तरह के बदलाव से सामान्य जन तो पीड़ित हैं ही, वैज्ञानिक भी चिंतित हैं।
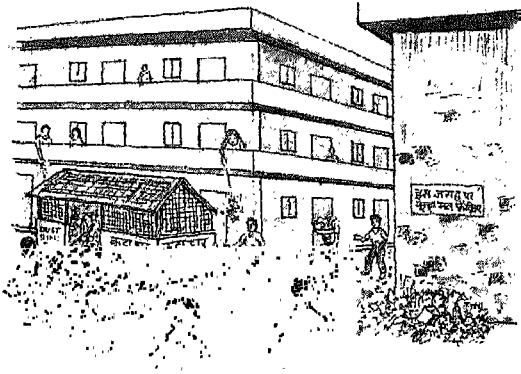
हम जानते हैं कि साँस की अधिकतर बीमारियाँ हवा की गंदगी के कारण होती हैं और पेट की बीमारियाँ गंदे जल के कारण। जीवन को स्वस्थ बनाए रखने के लिए साँस लेने योग्य वायु और पीने योग्य पानी दोनों ही अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। हमारे कल-कारखाने और तेज़ चलनेवाले वाहन भी भीषण शोर करते हैं, उन्हें भी नियंत्रित करने की आवश्यकता है, क्योंकि इनके बीच रहने से मानसिक तनाव बढ़ता है, हृदय की धड़कनें तेज़ हो जाती हैं।

कभी-कभी भीषण आवाज़ या चीत्कार सुनकर हृदय धक-सा रह जाता है। यहाँ तक कि कभी-कभी हृदय-गति बंद होने से मृत्यु तक हो जाती है।

मौसम में बदलाव और भीषण बीमारियों के फैलने से वैज्ञानिकों ने चिंतित होकर खोज की तो उन्हें प्रदूषण ही उसका एकमात्र कारण ज्ञात हुआ। प्रदूषण की यह समस्या विश्वव्यापी है। विकसित देशों में बड़े पैमाने पर कल-कारखाने और तेज़ वाहनों के कारण प्रदूषण बहुत बढ़ गया है। इसी प्रकार, विकासशील देशों में भी नित्यप्रति नए-नए कारखानों और वाहनों के कारण प्रदूषण बढ़ता जा रहा है। इसलिए विश्व के सभी देश मिल-जुल कर प्रयत्न कर रहे हैं कि जितनी जल्दी हो सके प्रदूषण को नियंत्रित किया जाए। जोहान्सबर्ग में 2002 ई. के अगस्त माह में धरती को प्रदूषणों से बचाने के लिए जिस पृथ्वी सम्मेलन का आयोजन हुआ, उसमें प्रदूषण की समस्या पर चिंता व्यक्त की गई। प्रदूषण की मात्रा यदि इसी गति से बढ़ती रही तो वह दिन दूर नहीं जब हमारी सुंदर सलोनी धरती से जीवन ही लुप्त हो जाएगा।

बढ़ते हुए प्रदूषण पर नियंत्रण पाने का मतलब यह कदापि नहीं है कि हम कल-कारखानों को बंद कर दें, यातायात के साधनों का उपयोग न करें और पाषाण युग में लौट जाएँ, विज्ञान के चमत्कारों और प्रौद्योगिकी की करामातों को ताक पर रख दें। वास्तव में समस्या का हल निरंतर हो रहे विकास को रोकने में नहीं है, बल्कि युक्तिसंगत समाधान खोजने में है।

इसके लिए हम प्रकृति से तालमेल रखें। अपनी धरती को हरा-भरा बनाए रखें। यह प्रयास करें कि प्रकृति का भंडार भरा रहे। धरती ऐसी बनी रहे जिस पर –

फुलहिं फलहिं बिटप बिधि नाना। मंजु बलित बर बेलि बिताना।।
गुंज मंजुतर मधुकर श्रेनी। त्रिविध बयारि बहइ सुख देनी।।
ऋतु बसंत बह त्रिविध बयारी। सब कहँ सुलभ पदारथ चारी।।

हमारा पर्यावरण हमारा रक्षा-कवच है। यह हमें प्रकृति से विरासत में मिला है। यह हम सबका पालनकर्ता और जीवनाधार है। वस्तुतः पर्यावरण-रक्षण भारतीय संस्कृति से जुड़ा है। पेड़-पौधे और जानवर हमारे मित्र हैं। बड़े-बड़े बाग-बगीचों और पार्कों को 'शहर का फेफड़ा' कहा जाता है। हमारी संस्कृति में पेड़ लगाना पुण्य-कार्य माना जाता है। पीपल, बरगद, आम, नीम, जामुन, आँवला जैसे उपयोगी वृक्षों के रोपण को महान धार्मिक कृत्य माना गया है। ये कार्य प्रकृति एवं पर्यावरण के प्रति हमारी आस्था प्रकट करते हैं। इन कार्यों से

हम में अच्छे संस्कार आते हैं। शिक्षा का सही लाभ तभी होगा जब हम अच्छे संस्कारों को बनाए रखें।

पर्यावरण प्रदूषण को रोकने के लिए सबसे अधिक आवश्यकता इस बात की है कि प्रदूषक कार्यों को रोका जाए। सरकारी स्तर पर इस दिशा में अनेक कदम उठाए जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त पर्यावरण-प्रदूषण को रोकने में हम स्वयं भी सहयोग दे सकते हैं। हम गंदगी न फैलाएँ और दूसरा यह कि जहाँ गंदगी हो उसे साफ़ करने में सहयोग दें। अपने घर, पास-पड़ोस और विद्यालय के परिवेश को साफ़-सुथरा रखें। जहाँ-तहाँ कूड़ा-कचरा आदि न फेंकें। वृक्षों की टहनियों को न तोड़ें। साथ ही अधिक-से-अधिक वृक्ष लगाएँ। इससे वृक्षों की संख्या भी बढ़ेगी और वन-महोत्सव के उद्देश्य भी पूरे होंगे – एक पंथ कई काज। इसी उद्देश्य से हम संकल्प कर लें कि अपने जन्म दिन पर अथवा अन्य किसी शुभ अवसर पर वृक्ष ज़रूर लगाएँगे।

– हरचरण लाल शर्मा

प्रश्न-अभ्यास

बोध और विचार

(क) मौखिक

1. प्रकृति-संतुलन से क्या तात्पर्य है?
2. मनुष्य को जंगल काटने की आवश्यकता क्यों पड़ी?

3. नदियों का जल क्यों प्रदूषित हो रहा है?
4. रासायनिक उर्वरक से क्या लाभ और हानियाँ हैं?
5. ओज़ोन परत का हमारे लिए क्या महत्त्व है?
6. वायु और जल के प्रदूषण के कारण हमें किस-किस प्रकार की बीमारियाँ हो सकती हैं?

(ख) लिखित

1. उद्योग धंधे और शहरीकरण प्रदूषण के कारण कैसे बन गए?
2. मौसम-चक्र में आए परिवर्तन का क्या कारण है? इसका क्या परिणाम हुआ?
3. उद्योगीकरण का ओज़ोन परत पर क्या प्रभाव पड़ा?
4. प्रदूषण के चारों प्रकार एक-दूसरे से संबंधित हैं। सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
5. यातायात के आधुनिक साधनों ने हमें सुविधाएँ तो दी हैं, पर साथ में समस्याएँ भी। कैसे?
6. समस्या का हल वापस लौटने में नहीं है, बल्कि उसका युक्तिसंगत समाधान खोजने में है – इस कथन पर टिप्पणी कीजिए।
7. लेखक कैसी धरती की कामना करता है?
8. आपकी दृष्टि में प्रदूषण-नियंत्रण का सर्वाधिक प्रभावी उपाय क्या हो सकता है?
9. पर्यावरण-रक्षण में हमारी संस्कृति किस प्रकार सहायता कर सकती है?
10. विद्यार्थी के नाते आप पर्यावरण-प्रदूषण रोकने में किस प्रकार योगदान कर सकते हैं?
11. आशय स्पष्ट कीजिए :
    – पर्यावरण हमारा रक्षा कवच है ।
    – हमारे धार्मिक कृत्य प्रकृति एवं पर्यावरण के प्रति हमारी आस्था प्रकट करते हैं।

भाषा-अध्ययन

1. 'प्रदूषण' में 'प्र' उपसर्ग लगने से 'दूषण' शब्द के अर्थ में विशेषता आ गई है और अर्थ भी बदल गया है। इसी प्रकार 'प्रकोप'(प्र+कोप) का अर्थ है – अत्यधिक क्रोध। 'प्र' उपसर्ग से बननेवाले पाँच शब्द लिखिए।

2. निम्नलिखित वाक्य पढ़िए :

   (क) हवा के बाद हमारी दूसरी आवश्यकता है पानी।

   (ख) वैज्ञानिक खोजों से पता चला है कि मौसम-परिवर्तन और जन-जीवन में रोगों का मुख्य कारण प्रकृति में असंतुलन।

   इन वाक्यों में 'पानी' और 'प्रकृति में असंतुलन' पद क्रिया के बाद आए हैं। इसका अर्थ यह है कि लेखक इन पदों पर बल देना चाहता है। इस प्रकार के तीन वाक्य अपनी पुस्तक से ढूँढ़िए।

3. नीचे लिखे समस्त पदों का विग्रह करते हुए समास बताइए :

   उद्योग-धंधे, मल-निकासी, जीव-जंतु, जल-प्रदूषण, मौसम-चक्र, स्वतंत्रता-प्राप्ति, अंतरिक्षयान।

4. निम्नलिखित वाक्यों में से उदाहरण के अनुसार क्रियाविशेषण ढूँढ़िए :

   उदाहरण : जंगल बड़े पैमाने पर काटे गए। ⟹ (बड़े पैमाने पर)

   (क) पिछले वर्षों में जंगलों का जिस गति से सफ़ाया हुआ है, वैसा कभी नहीं हुआ था।

   (ख) आज हमारा मौसम-चक्र बहुत कुछ बदल गया है।

   (ग) कभी-कभी जब फ़सल पक जाती है तब मूसलाधार वर्षा हो जाती है।

   (घ) विश्व के सभी देश मिल-जुलकर प्रयत्न कर रहे हैं।

5. निम्नलिखित वाक्यों से उदाहरण के अनुसार परिवर्तन कीजिए :

   उदाहरण : आबादी को खिलाने के लिए उसी मात्रा में अन्न, सब्ज़ी, फल आदि चाहिए।

   ⟹ आबादी को खिलाने के लिए उसी मात्रा में अन्न, सब्ज़ी, फल आदि की आवश्यकता है।

   (क) अन्य ज़रूरतों की पूर्ति के लिए विविध प्रकार की सामग्री चाहिए।

   (ख) सड़कें बनाने और रेल की पटरियाँ बिछाने के लिए धरती चाहिए।

   (ग) पौधों को कीटाणु हानि न पहुँचाएँ, इसलिए कीटनाशी दवाइयाँ चाहिए।

   (घ) पहनने के लिए कपड़े चाहिए।

योग्यता-विस्तार

समाचारपत्रों, पत्रिकाओं आदि में प्रकाशित लेखों से विश्व में पर्यावरण-रक्षण के लिए किए जा रहे प्रयासों एवं कार्यक्रमों के संबंध में जानकारी संकलित कीजिए। प्राप्त जानकारी को भित्ति-पत्रिका के रूप में प्रस्तुत कीजिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

जलपोत	-	जल-मार्ग से चलने वाले बड़े-बड़े जहाज़
संतुलन	-	किसी गुण, अवस्था या दशा में उचित अनुपात की स्थिति
अतिवृष्टि	-	अधिक वर्षा
अल्पवृष्टि	-	कम वर्षा
अनावृष्टि	-	वर्षा का अभाव, सूखा पड़ना
हिंस्त्र	-	हिंसक, खूँखार, मारने वाला, हिंसा करने वाला
जनसंख्या का विस्फोट	-	आबादी में अत्यधिक वृद्धि
जल मग्न हो गए	-	पानी में डूब गए
उर्वरक	-	उपज बढ़ानेवाले रसायन, रासायनिक खाद
कीटनाशी	-	कीड़े-मकोड़ों को नष्ट करनेवाली दवा
बेशुमार	-	अत्यधिक, अपार
सलोनी	-	प्यारी, लावण्यमयी, सुंदर
पराबैंगनी किरणें	-	प्रकाश में लाल, नारंगी, पीला, हरा, आसमानी, नीला और बैंगनी रंगों के बाद सूर्य से निकलने वाली हानिकारक किरणें
एक पंथ कई काज	-	एक कार्य करने से अनेक कार्य हो जाना
जीवनाधार	-	जीवन का सहारा
विरासत	-	उत्तराधिकार में मिली सामग्री, संपत्ति
पाषाण युग	-	वह ऐतिहासिक काल जब मनुष्य पत्थर के बने औज़ारों का प्रयोग करता था

प्रौद्योगिकी	-	उद्योगों को अधिक उन्नत करने वाली विद्या
युक्तिसंगत	-	उचित, तर्कयुक्त
तालमेल रखना	-	संगति बनाए रखना
विटप	-	वृक्ष
मंजु	-	सुंदर
बलित	-	लिपटी हुई
बिताना	-	फैली हुई
बर	-	श्रेष्ठ, वर
पदारथ चारी	-	चारों पदार्थ – धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। इन्हें पुरुषार्थ भी कहा गया है
मधुकर श्रेनी	-	भौंरों की कतार या पंक्ति
त्रिविध बयारि	-	मंद, शीतल और सुगंधित हवा

13. भक्ति पदावली

(मीरा कृष्ण की अनन्य भक्त थीं। इन पदों में कृष्णभक्ति में उनकी तल्लीनता, लोक-लाज का त्याग, कृष्ण पर उनका एकाधिकार और सतगुरु के महत्त्व का चित्रण हुआ है।)

मैं तो साँवरे के रंग राची।
साजि सिंगार बाँधि पग घुंघरू, लोक-लाज तजि नाची।।
गई कुमति लई साधु की संगति, भगत रूप भई साची।
गाय-गाय हरि के गुण निसदिन, काल ब्याल सूँ बाची।।
उण बिन सब जग खारो लागत, और बात सब काची।
मीरा श्री गिरधरन लाल सूँ, भगति रसीली जाची।।

माई री मैं तो लियो गोविंदो मोल।
कोई कहै छाने कोई कहै चुपके, लियो री बजंता ढोल।।
कोई कहै मुँहघो कोई कहै सुँहघो, लियो री तराजू तोल।
कोई कहै कारो कहै गोरो, लियो री अमोलक मोल।।
याही कूँ सब जाणत हैं, लियो री आँखी खोल।
मीरा कूँ प्रभु दरसण दीन्यौ, पूरब जनम कौ कौल।।

पायो जी म्हैं तो राम रतन धन पायो।
वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरु, किरपा कर अपनायो।।
जनम-जनम की पूँजी पाई, जग में सभी खोवायो।
खरचैं नहिं कोइ चोर न लेवै, दिन-दिन बढ़त सवायो।।
सत की नाव खेवटिया सतगुरु, भव-सागर तर आयो।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरख-हरख जस गायो।।

— **मीराबाई**

प्रश्न-अभ्यास

बोध और सराहना

(क) मौखिक

1. साँवरे के रंग में रँगने से मीरा का क्या आशय है?
2. कृष्ण-भक्ति पाने के लिए मीरा ने क्या-क्या किया?

3. मीरा ने गिरधर लाल से क्या याचना की?
4. मीरा ने भवसागर से पार पाना कैसे सीख लिया?

(ख) लिखित

1. कृष्ण-भक्ति में लीन होने का मीरा पर क्या प्रभाव पड़ा?
2. निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए –
   (क) काल ब्याल सूँ बाची
   (ख) लियो री तराजू तोल
   (ग) खरचैं नहिं कोई चोर न लेवै, दिन-दिन बढ़त सवायो
3. सतगुरु की कृपा से मीरा को कौन-सा अमूल्य उपहार प्राप्त हुआ? उसकी और क्या-क्या विशेषताएँ हैं?
4. इस पाठ में दिए गए पदों के आधार पर मीरा की भक्ति की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

योग्यता-विस्तार

मीरा के कुछ अन्य पदों का संकलन कीजिए और अपने संगीत शिक्षक की सहायता से उन्हें अपनी प्रार्थना सभा में उचित लय में प्रस्तुत कीजिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

साँवरे - साँवले श्रीकृष्ण
रंग राची - रंग में रँग गई, भक्ति में डूब गई
साजि सिंगार - साज-श्रृंगार, सज-सँवरकर
बाँधि - बाँधकर
लोक-लाज तजि नाची - लोक-मर्यादा छोड़कर कृष्ण की भक्ति में नाचने लगी
गई कुमति - दुर्बुद्धि नष्ट हो गई
भगत रूप भई साची - सच्ची भक्त बन गई

गाय-गाय	-	गा-गाकर
काल ब्याल सूँ बाची	-	काल रूपी सर्प से बच गई अर्थात जीवन-मरण के बंधन से मुक्त हो गई
उण बिन	-	उनके बिना, कृष्ण के बिना
खारो	-	खारा, अप्रिय, अरुचिकर
काची	-	कच्ची, अर्थहीन
भगति रसीली	-	माधुर्यभाव की भक्ति, प्रेम प्रधान भक्ति
छाने	-	छिप कर
बजंता ढोल	-	ढोल बजाकर, खुलकर, सबके सामने
मुँहघो	-	मँहगा
सुँहघो	-	सस्ता
तराजू तोल	-	नाप-तोलकर, अच्छी तरह परखकर
याही कूँ	-	इसी को
जाणत	-	जानते
दरसण	-	दर्शन
म्हैं	-	मैंने
दीन्यौ	-	दिया
पूरब जनम	-	पूर्व जन्म
कौल	-	वचन, वादा
अमोलक	-	अनमोल, अमूल्य
खरचैं नहिं कोइ चोर न लेवै, दिन-दिन बढ़त सवायो	-	साधारण धन तो धीरे-धीरे खर्च हो जाता है। उसे कोई चोर भी चुरा सकता है। उसका जितना प्रयोग करो वह घटता चला जाता है, परंतु प्रभु का नाम रूपी धन ऐसा है जो न तो खर्च होता है, न ही उसे कोई चुरा सकता है। प्रभु के नाम का जितना जाप करो, उतना ही उसका प्रभाव बढ़ता जाता है

खेबटिया	-	केवट, नाव खेने वाला
भव-सागर	-	संसार रूपी सागर
तर आयो	-	पार कर लिया
हरख-हरख	-	हर्ष से, प्रसन्नता से
जस	-	यश, कीर्ति

14. विक्रम साराभाई

(प्रस्तुत पाठ हमें विक्रम साराभाई जैसे अद्‌भुत व्यक्तित्व से परिचित कराता है जिसने विज्ञान, प्रौद्‌योगिकी, शिक्षा, उद्‌योग, वाणिज्य, व्यवसाय-प्रबंध आदि अनेक क्षेत्रों में देश की प्रगति के लिए उल्लेखनीय कार्य किए। अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान करनेवाले विक्रम साराभाई का आग्रह था कि हम अंतरिक्ष प्रौद्‌योगिकी का प्रयोग मानवीय विकास के लिए करें, विनाश के लिए नहीं। प्रयोग और अनुभव-आधारित शिक्षा तथा सहयोग वृत्ति पर उनका विशेष बल था। उनका कहना था कि प्रकृति और पर्यावरण की प्रयोगशाला में विज्ञान की शिक्षा देकर ही हम गांधी जी के शिक्षा संबंधी विचारों को सार्थक कर सकते हैं।)

आधुनिक भारत के प्रमुख वैज्ञानिकों में डॉ. विक्रम साराभाई का महत्त्वपूर्ण स्थान है। वे बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्ति थे। वे उच्चकोटि के वैज्ञानिक और कुशल प्रशासक थे। उन्होंने प्रौद्‌योगिकी और शिक्षा के क्षेत्र में भी महत्त्वपूर्ण कार्य किए।

अपनी इस बहुमुखी प्रतिभा के कारण विक्रम साराभाई अनेक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं से जुड़े रहे। वे अनेक उच्च पदों का दायित्व बड़ी कुशलता से निभाते रहे।

विक्रम साराभाई का कार्यक्षेत्र केवल विज्ञान और प्रौद्‌योगिकी तक ही सीमित
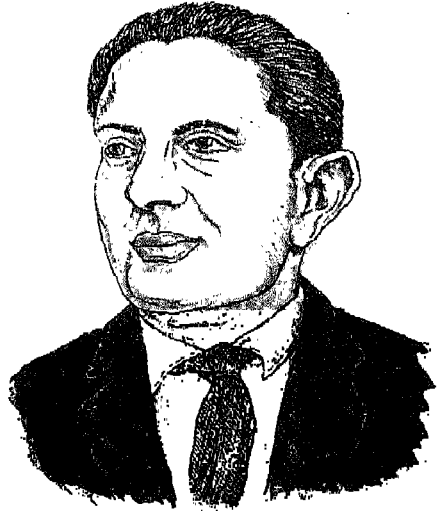
नहीं था, वरन शिक्षा और उद्योग तक भी व्याप्त था। उनमें एक महान शिक्षाविद् और शिक्षक के गुण विद्यमान थे। विज्ञान की शिक्षा में नवीनीकरण तथा नए प्रयोगों के लिए वे सतत प्रयत्नशील रहे।

विक्रम साराभाई का जन्म गुजरात प्रदेश के अहमदाबाद में सन 1919 में हुआ था। उनके पिता का नाम श्री अंबालाल साराभाई था। वे एक महान उद्योगपति थे, जिनके पास अपार धन-संपत्ति थी। उनकी मान्यता थी कि अपने बच्चों को सर्वोत्तम शिक्षा प्रदान करना माता-पिता का सबसे बड़ा कर्तव्य है। तत्कालीन विद्यालयों की शिक्षा से वे संतुष्ट नहीं थे। अतः उन्होंने अपने भवन के परिसर में ही अपने परिवार के बच्चों के लिए एक विद्यालय की स्थापना की। उन्होंने बड़े ही योग्य शिक्षकों को नियुक्त किया। इस विद्यालय में विज्ञान, गणित, भाषा, इतिहास, भूगोल, इंजीनियरिंग, कला, शिल्प, संगीत, नृत्य आदि विषयों की शिक्षा की व्यवस्था थी।

इसी विद्यालय में बालक विक्रम की शिक्षा हुई। इस विद्यालय में बच्चों को अपनी रचनात्मक प्रतिभा को पूर्ण रूप से विकसित करने का अवसर प्रदान किया जाता था। व्यावहारिक प्रशिक्षण को शिक्षा का आधार माना जाता था। बच्चों को समस्या के प्रति जागरूक बनाने और स्वयं विचार करके उसका हल ढूँढ़ने के लिए प्रेरित किया जाता था। यहाँ विक्रम ने अपने हाथ से सारा काम स्वयं करने का प्रशिक्षण प्राप्त किया। दसवीं की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद विक्रम साराभाई ने अहमदाबाद के गुजरात महाविद्यालय में प्रवेश लिया। यहाँ से बारहवीं की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वे उच्च शिक्षा के लिए इंग्लैंड चले गए। वहाँ उन्होंने सेंट जॉन कॉलेज, केंब्रिज से सन 1939 में भौतिकी और

गणित में बी.एससी. की डिग्री प्राप्त की। इसके बाद उन्होंने अनुसंधान कार्य प्रारंभ किया, किंतु द्वितीय विश्वयुद्ध छिड़ जाने के कारण उन्हें भारत वापस आना पड़ा।

भारत आकर उन्होंने भारतीय विज्ञान संस्थान, बंगलौर में कॉस्मिक किरणों पर अनुसंधान शुरू किया। प्रसिद्ध वैज्ञानिक प्रो. चंद्रशेखर वेंकटरमन उनके निदेशक थे। भारतीय विज्ञान संस्थान, बंगलौर में ही विक्रम साराभाई एक दूसरे महान वैज्ञानिक डॉ. होमी जहाँगीर भाभा के संपर्क में आए। डॉ. भाभा उस समय इस संस्थान में प्रोफ़ेसर थे।

यह वही डॉ. होमी भाभा थे जिन्होंने केवल दस वर्षों (1954-64) में परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में अपने असाधारण कार्य से भारत को इतना आगे बढ़ा दिया था कि सारा संसार आश्चर्यचकित हो गया। उनके शोधकार्यों को देखते हुए भारत सरकार ने उन्हें भारतीय परमाणु ऊर्जा आयोग का अध्यक्ष नियुक्त किया। अपने इस नए और अत्यंत महत्त्वपूर्ण पद पर डॉ. भाभा ने बड़ी ही लगन और सूझ-बूझ के साथ काम किया। उनकी अध्यक्षता में परमाणु ऊर्जा के संबंध में अनेकानेक प्रयोग किए गए, जिनमें परमाणु ऊर्जा का शांतिपूर्ण कार्यों के लिए उपयोग विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उनके इस कार्य को डॉ. साराभाई ने और आगे बढ़ाया।

द्वितीय विश्वयुद्ध समाप्त होने पर विक्रम साराभाई पुनः इंग्लैंड चले गए। उन्होंने वहाँ कॉस्मिक किरणों में अपने शोध कार्य को आगे बढ़ाया। 1947 ई. में उन्हें केंब्रिज विश्वविद्यालय से डॉक्टरेट की उपाधि मिली। फिर वे भारत लौट आए। यहाँ आते ही वे मुख्यतः अपने ही साधनों से अहमदाबाद में भौतिकी

अनुसंधान प्रयोगशाला की स्थापना में लग गए तथा यहीं वे प्रोफ़ेसर के पद पर कार्य करने लगे ।

विक्रम साराभाई स्वभाव से ही क्रियाशील व्यक्ति थे। हर समय विज्ञान और प्रौद्योगिकी से संबंधित किसी-न-किसी काम में लगे रहना और नई-नई योजनाएँ बनाते रहना उनका स्वभाव बन गया था। वे अपनी धुन के पक्के थे और क्षणभर भी निष्क्रिय नहीं बैठ सकते थे। सारे सुख-साधन सुलभ रहने पर भी वे विश्राम करना नहीं जानते थे।

विक्रम साराभाई भारत में अंतरिक्ष अनुसंधान के जनक माने जाते हैं। श्रीहरिकोटा में राष्ट्रीय अंतरिक्ष केंद्र की स्थापना का श्रेय भी उन्हीं को है। अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन का अध्यक्ष चुने जाते ही उन्होंने तिरुवनंतपुरम् से दस किलोमीटर दूर थुंबा में रॉकेट प्रक्षेपण केंद्र की स्थापना की। यहाँ देश-विदेश के अनेक वैज्ञानिकों द्वारा अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में अनुसंधान और प्रयोग होते रहे किंतु विक्रम साराभाई ने इस बात पर बार-बार बल दिया कि परमाणु ऊर्जा का प्रयोग शांतिपूर्ण कार्यों और मानव-कल्याण के लिए होना चाहिए। विज्ञान निर्माण और उत्थान का साधन है, विनाश और पतन का नहीं। विश्व के सभी देशों को इसी दिशा में काम करना चाहिए।

डॉ. साराभाई विज्ञान की शिक्षा में सुधार लाने के लिए भी सक्रिय रहे। प्रारंभ से ही वे अहमदाबाद की शिक्षा संस्थाओं से जुड़े थे। राष्ट्रीय विज्ञान परिषद् की स्थापना में उनका विशेष हाथ था। उनका जीवन एक वैज्ञानिक और विज्ञान-शिक्षक के रूप में प्रारंभ हुआ था। उनका मूल स्वभाव शिक्षक का था। विद्यालय तथा विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षा की वर्तमान स्थिति से वे चिंतित

रहते थे। उनका कहना था कि हमारी शिक्षा प्रणाली प्रभावहीन हो गई है। इसमें आमूल परिवर्तन की आवश्यकता है। उनके विचार में शिक्षा में नवीनीकरण और नवाचार के साथ-साथ नए प्रयोगों की नितांत आवश्यकता है।

इन विचारों को कार्य रूप में परिणत करने के लिए उन्होंने अहमदाबाद में सामुदायिक विकास केंद्र की स्थापना की। इस केंद्र के दो उद्देश्य थे – (1) शिक्षार्थियों, शिक्षकों तथा जन-सामान्य में विज्ञान के प्रति रुचि पैदा करना और उनके लिए समुचित कार्यक्रम विकसित करना, (2) सभी शैक्षिक स्तरों पर विज्ञान और गणित की शिक्षा में सुधार लाना।

विक्रम साराभाई विज्ञान की शिक्षा का संबंध नैतिक मूल्यों से जोड़ते थे। उनका कहना था कि लोगों को विज्ञान की शिक्षा द्वारा ऐसे अनुभव प्रदान किए जाने चाहिए जिनसे नैतिक मूल्य व्यक्ति के जीवन और स्वभाव के अभिन्न अंग बन जाएँ। व्यक्ति में यह चेतना उत्पन्न हो जानी चाहिए कि वह विज्ञान और प्रौद्योगिकी द्वारा मानव-जीवन में होनेवाले परिवर्तनों को स्वीकार करे और उनके अनुसार अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन करे। दूसरे शब्दों में, हर व्यक्ति में वैज्ञानिक दृष्टि का विकास होना चाहिए। वे चाहते थे कि बच्चा जिज्ञासु बने और प्रश्न करे, उसमें खोज की प्रवृत्ति पैदा हो, चिंतन की क्षमता का विकास हो। साराभाई महात्मा गांधी की बुनियादी शिक्षा के तरीकों को अमल में लाना चाहते थे। वे परिवेश से ही संबंधित हस्तशिल्प और उद्योग के माध्यम से शिक्षा देना चाहते थे।

साराभाई शिक्षा में सहयोग-वृत्ति पर भी बल देते थे। उनका कहना था कि साधन और सुविधाओं की दृष्टि से किसी भी शिक्षा-संस्था का परिपूर्ण होना

कठिन है। कोई-न-कोई अभाव बना रहेगा। अतः सहयोग और संयुक्त प्रयास द्वारा उस अभाव को पूरा करना चाहिए। आसपास की शिक्षा-संस्थाओं को मिलकर संयुक्त प्रयोगशालाएँ स्थापित करनी चाहिए और सभी को उनका लाभ उठाना चाहिए।

साराभाई में अपने विचारों को क्रियान्वित करने की अद्भुत क्षमता थी। किंतु हमारा दुर्भाग्य कि विज्ञान जगत का यह चमकता सितारा अल्पायु में ही तिरोहित हो गया। 30 दिसंबर, 1971 को तिरुवनंतपुरम् के निकट कोवलम में उनका निधन हुआ।

आज जब हमारा देश आर्थिक, वैज्ञानिक और प्रौद्योगिक क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने के प्रयास में लगा हुआ है, डॉ. साराभाई जैसी विलक्षण प्रतिभा का अभाव हमें सदैव महसूस होता रहेगा।

— निरंजन कुमार सिंह

प्रश्न-अभ्यास

बोध और विचार

(क) मौखिक

1. विक्रम साराभाई ने किन-किन क्षेत्रों में कार्य किया?
2. श्री अंबालाल साराभाई ने अपने भवन के परिसर में विद्यालय क्यों स्थापित किया?

3. विक्रम साराभाई के पिता द्वारा स्थापित विद्यालय में किन-किन विषयों की शिक्षा दी जाती थी?
4. विक्रम साराभाई का भारतीय विज्ञान संस्थान, बंगलौर में किन-किन वैज्ञानिकों से संपर्क हुआ?
5. विक्रम साराभाई को भारत में अंतरिक्ष अनुसंधान का जनक क्यों माना जाता है?
6. डॉ. साराभाई ने शिक्षा प्रणाली को प्रभावी बनाने के लिए क्या सुझाव दिए?
7. आप वैज्ञानिक दृष्टि से क्या समझते हैं?
8. शिक्षा में सहयोग-वृत्ति क्यों आवश्यक है?

(ख) लिखित

1. विक्रम साराभाई के पिता द्वारा स्थापित विद्यालय की शिक्षा पद्धति की क्या विशेषताएँ थीं?
2. परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में डॉ. होमी भाभा के कार्यों को असाधारण क्यों माना गया है?
3. विक्रम साराभाई के स्वभाव की क्या विशेषताएँ थीं?
4. परमाणु ऊर्जा के प्रयोग के संबंध में डॉ. साराभाई के क्या विचार थे?
5. डॉ. विक्रम साराभाई ने शिक्षा संबंधी अपने विचारों को किस प्रकार कार्यरूप देना चाहा?
6. विक्रम साराभाई की विज्ञान शिक्षा से क्या-क्या अपेक्षाएँ थीं?
7. सोदाहरण सिद्ध कीजिए कि डॉ. विक्रम साराभाई की प्रतिभा बहुमुखी थी।

भाषा-अध्ययन

1. नीचे लिखे शब्दों में से वर्तनी की दृष्टि से कुछ शब्द शुद्ध हैं और कुछ शब्द अशुद्ध। अशुद्ध शब्दों को छाँटकर उनकी वर्तनी शुद्ध कीजिए :
   विद्यालय, स्थापना, नियुक्त, व्यावहारिक, निष्क्रिय, राष्ट्रिय, उत्थान, संमेलन, परमाणू, अल्पायु।

2. नीचे समश्रुतिभिन्नार्थक शब्द दिए गए हैं। इनको वाक्य में प्रयोग कर इनके अर्थ में अंतर स्पष्ट कीजिए :

   पथ्य-पथ, पत्ता-पता, धन्य-धान्य, उदार-उद्धार, सूत-सुत।

3. निम्नलिखित शब्दों के विलोम बताइए :

   सक्रिय, पतन, कुशल, विदेश, कठिन, अल्पायु, निर्गुण, असाधारण।

4. दिए गए उदाहरण के अनुसार निम्नलिखित शब्दों से प्रत्यय अलग कीजिए :

   उदाहरण : वैज्ञानिक = विज्ञान + इक

   व्यावहारिक, नैतिक, आर्थिक, औद्योगिक, नागरिक

टिप्पणी : ध्यान दीजिए कि 'इक' प्रत्यय लगने में शब्द के प्रारंभिक स्वर में परिवर्तन होता है; जैसे —

मूल स्वर	*परिवर्तित स्वर*	*प्रत्यय युक्त शब्द*
अ/आ	आ	समाज + इक = सामाजिक
इ/ई/ए	ऐ	नीति + इक = नैतिक
		वेद + इक = वैदिक
उ/ऊ/ओ	औ	उद्योग + इक = औद्योगिक
		भूगोल + इक = भौगोलिक
		लोक + इक = लौकिक

5. नीचे दिए गए उदाहरण के अनुसार निम्नलिखित वाक्यों का रूपांतरण कीजिए।

   उदाहरण : वे चाहते हैं कि बच्चों में खोज की प्रवृत्ति पैदा हो।

   ⟹ उनकी इच्छा है कि बच्चों में खोज की प्रवृत्ति पैदा हो।

   (क) वे चाहते हैं कि बच्चों में चिंतन की क्षमता का विकास हो।

   (ख) वे चाहते थे कि सहयोग और संयुक्त प्रयास से वह अभाव पूरा हो।

   (ग) वे चाहते थे कि आसपास की शिक्षा संस्थाओं को मिलाकर संयुक्त प्रयोगशालाओं की स्थापना हो।

   (घ) वे चाहते थे कि उन प्रयोगशालाओं का लाभ सभी उठाएँ।

   (ङ) वे चाहते थे कि बच्चा जिज्ञासु बने और प्रश्न करे।

योग्यता-विस्तार

1. पुस्तकालय या अन्य स्रोतों से विक्रम साराभाई जैसे बहुमुखी प्रतिभासंपन्न कुछ अन्य महापुरुषों के विषय में जानकारी प्राप्त कीजिए।
2. "विज्ञान निर्माण का साधन है, विनाश का नहीं" विषय पर कक्षा में परिचर्चा कीजिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

बहुमुखी प्रतिभा - अनेक क्षेत्रों में कार्य करने की बौद्धिक क्षमता
प्रौद्योगिकी - वैज्ञानिक सिद्धांतों को व्यावहारिक रूप देने की विधि, टैक्नोलॉजी
व्याप्त - फैला हुआ
शिक्षाविद - शिक्षाशास्त्र के ज्ञाता
नवीनीकरण - नया करना
परिसर - भवन के आसपास की भूमि, अहाता
विलक्षण - अनोखा
अनुसंधान - खोज
कॉस्मिक किरण - बाहरी अंतरिक्ष (सौर-मंडल से परे) से आने वाली उच्च भेदन क्षमता के विकिरण
क्रियाशील - कार्य में लगा, सक्रिय
परमाणु ऊर्जा - परमाणु में संचित ऊर्जा जो नाभिकीय विखंडन अथवा संलयन से उत्पन्न होती है
नवाचार - नए प्रयोग
जिज्ञासु - जानने की इच्छा रखने वाला
परिवेश - आसपास का वातावरण
हस्तशिल्प - हाथ की कारीगरी

15. समय-समय की हवा

(इस कहानी में लेखक ने किसान और ज़मींदार की तीन पीढ़ियों के संबंध और संघर्ष के माध्यम से पीढ़ियों के दृष्टिकोण और विचारधारा के अंतर को उभारा है। समय बदलने के साथ-साथ माहौल बदलता है, सोच में परिवर्तन आता है और जीवन-मूल्य भी बदल जाते हैं। यह बदलाव आखिर हमें किस ओर ले जाएगा? पीढ़ियों के अंतराल से संबंधों और मूल्यों में ह्रास की स्थिति को देखते हुए यह प्रश्न लेखक को कचोटता है कि क्या यह मात्र विचार परिवर्तन है या अधोगति?)

समय की बात – समय के हाथ – कि किसी समय की गोद में एक सुखी-संतोषी गाँव बसा हुआ था। अपने-अपने घर और अपने-अपने दरवाज़े होते हुए भी गाँव की चौपाल एक थी। सभी घरों के बुज़ुर्ग और नौजवान ब्यालू से निबटते ही अलाव के चारों तरफ़ बैठकर घरेलू बातें करते थे। किसी का भी मुँह झूठ और छल-कपट की वाणी सीखा हुआ नहीं था। सच्ची बात कहते थे और सच्ची बात सुनते थे। घर-घर चूल्हे में मंद-मंद आँच तो जलती थी, मगर किसी भी कोने में आग लगी हुई नहीं थी। बूते की कामना और बूते का काम – नीचे धरती और ऊपर राम।

मुट्ठी में समाय इतनी ही ज़रूरतें थीं। पेट के लिए रोटी – पीने के लिए पानी। पहनने को कपड़े – रहने को मकान। सूर्योदय से पहले ही घर-घर में रोशनी फैल जाती।

उस गाँव के ज़मींदार ने अपनी ज़मीन किसान को खेती के लिए सौंप रखी थी। किसान ने लगान देने की खातिर बहुत मिन्नतें कीं, लेकिन ज़मींदार किसी

भी कीमत पर राज़ी नहीं हुआ। किसान ने ज़्यादा मगज़मारी की तो ज़मींदार बोला कि उसके पास काफ़ी ज़मीन है। मरने पर साथ तो ले जाने से रहा! जोतो-बोओ-कमाओ और खाओ। किसान ने एक दिन खटपट निबटाने के लिए चौपाल में बात चलाई तो बस्ती के सब लोगों ने ज़मींदार की बात ही रखी।

संयोग का खेल कि एक दिन ज़मींदारवाली ज़मीन से झाड़ियों की जड़ें निकालते समय किसान को मोहरों से भरा एक कलश नज़र आया। चारों ओर से खोदने पर एक-एक करके सात कलश हाथ लगे। काम छोड़कर किसान ने

तुरंत बैल जोते। गाड़ी पर सातों कलश रखे और तपती दोपहर में ज़मींदार के घर की तरफ़ चल पड़ा।

ज़मींदार ने दूर से ही गाड़ी को आते देखा तो मन-ही-मन किसान पर नाराज़ हुआ। साफ़ इनकार करने के बावजूद भी लगान की गाड़ी जोतकर लाया, तो

लाने दो। अच्छी तरह खबर लूँगा। बस्ती की बात को टालने की हिम्मत हुई तो हुई कैसे! लेकिन गाड़ी पर कलश देखकर उसका गुस्सा कुछ ठंडा पड़ गया। मुसकराकर पूछा, "यह फिर क्या नई मुसीबत ले आया?"

किसान ने भी उसी तरह मुसकराते हुए जवाब दिया, "लगान न लेने की हेकड़ी तो निभ गई, लेकिन अब यह मुसीबत तो कबूल करनी ही पड़ेगी।"

ढक्कन उघाड़ने पर ज़मींदार ने चमचमाती मोहरें देखीं तो आश्चर्य से पूछा, "बाजरे की जगह खेत में मोहरें पैदा हुई हैं क्या?"

पैदावार की बात करने पर तो फिर वही लगान वाला फंदा फँसेगा। इसलिए तुरंत ज़मींदार की बात काटते कहने लगा, "इससे पहले भी किसी के खेत में मोहरें पैदा हुई होंगी? जड़ें निकालते समय यह सात कलश हाथ लगे हैं, सो कबूल करो।"

ज़मींदार की त्योरियाँ चढ़ गईं। बोला, "तेरे हाथ लगे हैं तो तू रख, मेरे यहाँ क्यूँ लाया?"

किसान ने भी कड़ाई से जवाब दिया, "ज़मीन तुम्हारी है, इसलिए लाया। आँखें दिखाने की ज़रूरत नहीं। मुझे काम के लिए देरी हो रही है। शराफ़त से चुपचाप कलश कबूल करके मेरा फंदा काटो। लगान वाली बात निभ गई सो ही बहुत है।"

ज़मींदार आत्मीयता के स्वर में मीठा उलाहना देते कहने लगा, "देख, तू फिर अन्याय की बात कर रहा है। जड़ें निकालते समय कलश तेरे हाथ लगे हैं तो मैं कैसे कबूल कर सकता हूँ! मेरी अक्ल तो अभी तक ठिकाने है।"

"अगर अक्ल ठिकाने होती तो यूँ तुरंत ना नहीं करते। ऐसी अबूझ बात तो कोई बच्चा भी नहीं करता। जब खेत तुम्हारे हैं तो कलश भी तुम्हारे हैं। इसमें ऐसी कलह की बात ही क्या है।"

ज़मींदार व्यंग्य करते हुए बोला, "सारे इलाके की अक्ल का तू अकेला ही इज़ारेदार दिखता है। ऐसी बेवकूफ़ी की बात सुनकर बस्ती के लोग हँसेंगे, फिर भी पंचायत बैठाने के लिए मेरी ना नहीं है।"

किसान ने कुछ तड़पते हुए ज़ोर से कहा, "तुम्हारी ना क्यों होगी, मेरी ना है। गरीब के साथ कोई भी न्याय नहीं करता। पंचायती के लायक बात हो तो पंचायती भी कराएँ।"

ज़मींदार तैश में आकर कहने लगा, "तेरे कहने से क्या होता है। कैसे पंचायती की बात नहीं है, उस दिन मेरे खेत में तुझे करचा गड़ा था तब मेरा पाँव तो बेकार नहीं हुआ। बता, चौमासे में मेरे खेत पर काम करते समय तुझ पर बिजली गिरे तो मैं ही मरूँगा?"

"मुझ पर बिजली गिरेगी तो मैं ही मरूँगा!"

"खेत मेरा है तब मुझे मरना चाहिए! बता, मेरे खेत में काम करते हुए अगर तुझे साँप काट खाए तो उसका ज़हर मुझे चढ़ेगा या तुझे? बोल?"

"अब इन उलटी-सीधी पहेलियों में मत उलझाओ। तुम पर अच्छा-खासा विश्वास करके मैं यहाँ आया था। मैं जानता हूँ कि पंचायती होने पर मेरे साथ इंसाफ़ नहीं होगा।"

"तब पंचायती क्यों करवाता है? चुपचाप ये कलश अपने घर ले जा। मैं कहीं भी चर्चा नहीं करूँगा।"

"खूब चर्चा करो, मैं किसी से डरता थोड़े ही हूँ। उधार लिया हुआ मुँह हो तब भी ऐसी बात करते थोड़ी-बहुत शर्म आती है। तुम्हारा माल मैं कैसे घर ले जाऊँ? ये कलश जानें और तुम जानो। मैं तो यहीं गाड़ी छोड़कर खेत जा रहा हूँ। इतनी देर में तो मैं आधी जड़ें निकाल लेता। खामखाह बहस करना मुझे नहीं पोसाता।"

और यह आखिरी बात कहकर वह वहाँ से चल पड़ा। ज़मींदार ने उसे पुकारकर कहा, "देख, बेकार ज़िद करके मत जा। पछताएगा।"

"कोई बात नहीं।"

ज़मींदार का गुस्सा समाया नहीं। पर किसान नहीं माना, तब वह कर ही क्या सकता था! घड़ी-डेढ़ घड़ी रात ढलने पर वहीं अलाव के पास पंचायत जमी। किसान की बात सुनकर पंचों ने भिड़ते ही उससे सवाल किया, "ये कलश अपने आप उछलकर बाहर आए या तूने खोदकर निकाले?"

"निकाले तो मैंने खोदकर ही। कलश अपने आप उछलकर बाहर कब आते हैं।"

पंच मुसकराकर कहने लगे, "तब तो यह न्याय तेरे अपने मुँह से ही हो गया कि तेरी मेहनत का फल तुझे ही मिलना चाहिए।"

लेकिन गँवार किसान तब भी नहीं माना। पंचों के सामने वही हठ करते कहने लगा, "लेकिन ज़मीन तो मेरी नहीं है। दूसरे की ज़मीन में गड़ा धन लेने के लिए मेरा मन नहीं मानता।"

पंचों ने कहा, "तेरे मन को मनाना हमारे वश में नहीं है। इंसाफ़ करना हमारे ज़िम्मे था, जो हमने निबटा दिया। धरती, पानी और हवा पर किसी का भी हक नहीं होता। अगर तू ऐसा ही हरिश्चंद्र है तब दूसरे की ज़मीन पर बहती हवा में तुझे साँस भी नहीं लेना चाहिए।"

"आप फ़रमाएँ तो नहीं लूँ?"

पंचों ने कहा, "लेकिन हम ऐसी उलटी बात क्यों फ़रमाएँ। हमारा कहना मान, जब तक गाड़नेवाले का पता नहीं चले तब तक यह अमानत तू ही सँभाल।"

"यह अमानत मेरे किस काम की? यह तो नींद बेचकर जागरण मोल लेना है। भगवान जाने, किसने क्या आस करके ये मोहरें गाड़ी होंगी! या तो दूध का दूध और पानी का पानी करो, वरना मुझे ये कलश राज्य के खज़ाने में जमा कराने पड़ेंगे।"

पंचों ने कहा, "हमने तो अपनी समझ के अनुसार जो इंसाफ़ करना था सो कर दिया। तू न माने तो तेरी मरज़ी।"

तब वह किसान बोला, "जब इंसाफ़ का रास्ता ही नहीं जानते तो इंसाफ़ करने के लिए मुँह धोते ही क्यों हो?"

उसके बाद वह ज़िद्दी किसान सीधा राजदरबार पहुँचा। ध्यान से सारी बात सुनने के बाद राजा ने कहा, "जान-माल की रक्षा के लिए मैं राजा बना, तब तेरा माल छीनने का मुझे अधिकार ही क्या है। तूने बेकार ही जूते घिसे। गाँव के पंचों ने तेरे साथ बेइंसाफ़ी नहीं की। तू खुशी-खुशी ये कलश अपने घर ले जा। तेरी मेहनत और तेरा ही फल!"

राजा के मुँह से यह न्याय सुनकर किसान का मुँह फीका पड़ गया। वह कुछ दूसरी आस लेकर यहाँ आया था। धीमे सुर में कहने लगा, "आपका यह आदेश तो मैं हरगिज़ नहीं मानूँगा। और इन मोहरों का मैं क्या करूँ? बेकार जगह घेरेंगी। आप नाराज़ न हों तो मैं पंचों के सामने उसी जगह ये सातों कलश वापस गाड़ दूँ?"

उस वक्त की गोद में जैसी प्रजा थी, वैसा ही उसका राजा था। होंठों पर मुसकराहट छितराते कहने लगा, "जैसी तेरी मंशा।"

आखिर उस किसान की जो मंशा थी, वही हुआ। तीसरे दिन सूर्योदय के वक्त बस्ती के लोग पास खड़े देखते रहे और उसने अपने हाथों उसी जगह कलश वापस गहरे गाड़ दिए।

उसके बाद वक्त की ढलान पर, वक्त की हवा, निरंतर बिना साँस लिए, बहती ही गई – बहती ही गई। हवा के उन थपेड़ों के आगे न तो वह किसान रहा, न वे बस्ती के लोग और न वह राजा। वक्त की गोद में नई पीढ़ी अवतरित हुई – नया राजा और नए ही पंच – नई पीढ़ी, नया ही खून।

नई हवा में अभी तक वह पुरानी बात घुली हुई थी। एक दिन ज़मींदार का नौजवान बेटा उस किसान के बेटे के पास जाकर कहने लगा, "मेरे पुरखे तो बिलकुल नासमझ थे । लेकिन मैं वैसा नासमझ नहीं हूँ।"

वह आगे कुछ और कहना चाहता था लेकिन लड़का बीच में बोला तो उसे रुकना पड़ा। किसान का लड़का मुसकराने की चेष्टा करते कहने लगा, "आप क्यों नासमझ होने लगे? लेकिन मैं तो अभी तक अपने पुरखों की तरह वैसा ही नासमझ हूँ।"

"हाँ, तू नासमझ है, सो मैं जानता हूँ। तभी मेरे खेत में गड़े हुए कलश तू मुझसे बगैर पूछे, छुपाकर रात को घर ले आया।"

किसान के बेटे ने मन-ही-मन सोचा कि हज़रत खेत की ज़मीन टटोलकर आए दिखते हैं!

वहाँ कलश हों तो मिलें! सुमत सूझी जो सात दिन पहले सारे कलश घर ले आया। नहीं तो आज एक मोहर भी हाथ न लगती। अब दबने से बात बिगड़ जाएगी। निस्संकोच बोला, "क्यों, इसमें पूछने की क्या बात है? खेत कोई मुफ़्त में नहीं जोतता। तीसरे हिस्से का लगान चुकाता हूँ। जड़ें निकालते समय अगर साँप काट खाता तो मेरे बच्चे यतीम होते। आपका कुछ भी नहीं बिगड़ता। अपनी मेहनत से खोदा धन अपने घर लाया। इसमें छुपाने की क्या बात है?"

दोनों में परस्पर बहुत दाँताकसी हुई, लेकिन ज़मींदार के लड़के की कुछ दाल नहीं गली। आखिर धमकी देते बोला, "मैं भी देखता हूँ, मेरे खेत में गड़ा धन तुझे कैसे पचता है?"

"पचना-वचना क्या ठाकुर, वह तो पच गया। दूसरे के माल की आस करने से काम नहीं चलता। आखिर तो पसीने की कमाई से ही पार पड़ेगा।"

लाल-पीली आँखें निकालते वह बस्ती के लोगों के सामने चिल्लाया। पंचों ने सोचा, ऐसी शानदार पंचायती तो मुश्किल से ही हाथ लगती है। ज़मींदार के

लड़के ने पंचों को घर बुलाकर काफ़ी खातिर-तवज्जह की। किसान के बेटे को पता चला तो उसने भी पंचों को अपने घर बुलाया और उनकी मुट्ठियाँ गरम कीं। पंचों की राय फिर बदल गई।

रात को नित पंचायत जुड़ती। आधी रात ढलने तक खूब थूक उछलता। गाँव में दो दल बन गए आधे पंच खेत के मालिक के साथ और आधे किसान के साथ। गुत्थी उलझी तो उलझी, लेकिन पंचों की मौज में किसी तरह की कोई कमी नहीं थी।

काफ़ी दिनों तक सिर खपाने के बाद पंचों ने लगान के हिस्से माफ़िक मोहरें बाँटने का फ़ैसला दिया। लेकिन किसान का बेटा नहीं माना। उसके पास सूरज के टुकड़ों की ताकत थी। उसने फिर पंचों को अपने घर बुलाकर शानदार आवभगत की। यकायक ज़मींदार के हिमायती फिसल गए। बेहाड़ की जबान इधर से उधर मुड़ गई। बेचारे ज़मींदार ने खर्च-खाते के बावजूद सब्र किया।

वक्त की हवा फिर अपनी मस्ती में बही – खूब बही।

गाछ-बिरछों के अनेक पात झड़े और अनेक कोपलें फूटीं। नए अंकुर उगे। अनगिनत नदियों का पानी समुद्र में इकट्ठा हुआ। असंख्य सूरज उदित हुए, चोटी पर चढ़े और अस्त हो गए। फिर एक पीढ़ी ठिकाने लगी। नई पीढ़ी का नया खून नसों के भीतर उलटी छाती चढ़ने लगा।

ज़मींदार का नौजवान दिलेर पोता नंगी तलवार लेकर किसान के घर पहुँचा। किसान का पोता भी ललकार सुनकर हाथ में फरसा लिए बाहर आया। कहा-सुनी से जब निबटारा नहीं हुआ तो ज़मींदार के पोते के एड़ी से चोटी तक आग लग गई। पंजे के बल उचककर किसान के गले पर भरपूर वार किया। गाजर-मूली की तरह तलवार सपाक-से गले के पार हो गई।

भाभी की चीत्कार सुनकर मझला और छोटा भाई बाड़े से दौड़े आए। दोनों के हाथों में दो लंबे तड़े थे। नौजवान ज़मींदार के गले में मझले भाई ने तड़ा फँसाकर ज़ोर से झटका दिया तो उसका गला आधा कटकर लटक गया। खून की फुहार से सारा बदन सराबोर होने लगा।

उस गाँव की धरती पर पहली दफ़ा पसीने की जगह खून की आकृति चित्रित हुई। गाँव के पंच शामिल होकर राजा की शरण में पहुँचे। गड़े धन की बात सुनते ही राजा को गुस्सा आ गया।

पंचों ने इतने दिनों तक भेद छिपाकर क्यों रखा? गड़ा धन तो राजा का ही होता है। उसके आदेश से पंचों को इक्कीस-इक्कीस जूतों की सज़ा मिली। तत्पश्चात राज्य के घुड़सवारों ने घोड़े दौड़ाए, सो किसान के घर में छुपाए हुए कलश तुरंत सरकारी खज़ाने के हवाले किए।

समय-समय की हवा और समय-समय की बयार।

उस सुखी और संतोषी गाँव की जमी हुई चौपाल उठ गई। घर-घर आग की लपटें लपलपाने लगीं। भगवान जाने, वह आग बुझेगी कि नहीं। समय की बात–समय के हाथ।

— **विजयदान देथा**

प्रश्न-अभ्यास

बोध और विचार

(क) मौखिक

1. गाँव के लोग शाम को किस प्रकार अपना समय बिताते थे?
2. किसान के बार-बार मिन्नत करने पर भी ज़मींदार लगान लेने के लिए तैयार क्यों नहीं हुआ?
3. खेत में से कलश मिलते ही किसान काम छोड़कर ज़मींदार के घर की ओर क्यों भागा?
4. गाड़ी पर किसान को आते देख ज़मींदार को कैसा लगा?
5. किसान पंचायत बैठाने के लिए तैयार क्यों नहीं था?
6. किसान की बात सुनकर राजा ने क्या न्याय किया ?
7. पहली पीढ़ी के ज़मींदार और किसान के वार्तालाप से दोनों के बीच किस प्रकार का संबंध झलकता है?

(ख) लिखित

1. ज़मींदार और किसान ने किन-किन तर्कों द्वारा एक दूसरे को अपने-अपने पास कलश रखने के लिए मनाना चाहा?

2. पंचों ने क्या निर्णय दिया? उस निर्णय से उस समय की पंचायत के बारे में क्या धारणा बनती है?
3. किसान ने कलश दोबारा धरती में क्यों गाड़ दिए?
4. दूसरी पीढ़ी के ज़मींदार और किसान में कलशों को लेकर क्या कहा-सुनी हुई?
5. पंचों को अपने पक्ष में करने के लिए दूसरी पीढ़ी के ज़मींदार और किसान ने क्या-क्या किया?
6. पहली पीढ़ी और दूसरी पीढ़ी के पंचों के व्यवहार में क्या अंतर दिखाई देता है?
7. तीसरी पीढ़ी के ज़मींदार और किसान ने समस्या का क्या समाधान निकाला?
8. पहली पीढ़ी से लेकर तीसरी पीढ़ी तक के व्यवहार में आए अंतर को स्पष्ट कीजिए।
9. "जैसी प्रजा थी, वैसा ही उसका राजा" – पाठ से उदाहरण देते हुए इस कथन की पुष्टि कीजिए।
10. "घर-घर चूल्हे में मंद-मंद आँच तो जलती थी, मगर किसी भी कोने में आग लगी हुई नहीं थी। बूते की कामना और बूते का काम।" – आशय स्पष्ट कीजिए।

भाषा-अध्ययन

1. कुछ शब्द युग्म परस्पर मिलते-जुलते अर्थ वाले होते हैं और कुछ विलोम अर्थ वाले। उदाहरण के अनुसार चार-चार शब्द युग्म छाँटकर लिखिए :

	परस्पर मिलते-जुलते अर्थ वाले	*परस्पर विलोम*	*पुनरुक्त*
उदाहरण :	अच्छा-भला	अपना-पराया	अपना-अपना
	________	________	________
	________	________	________
	________	________	________
	________	________	________
	________	________	________

2. निम्नलिखित आज्ञार्थक वाक्यों को उदाहरण के अनुसार बदलिए :

उदाहरण :

(क) तेरे हाथ लगे हैं तो तू रख। (आप)

⟹ आपके हाथ लगे हैं तो आप रखिए।

(ख) मेरे यहाँ क्यों लाया। (तुम)

⟹ तुम मेरे यहाँ क्यों लाए।

(i) चुपचाप ये कलश अपने घर ले जा। (तुम)

(ii) खूब चर्चा करो। (आप)

(iii) बेकार ज़िद करके मत जा। (तुम)

(iv) यह अमानत तू ही सँभाल (आप)

(v) तू खुशी-खुशी ये कलश अपने घर ले जा। (तुम)

(vi) कलश कबूल करके मेरा फंदा काटो (आप)

3. 'तो' निपात के प्रयोग से वाक्य में शब्द विशेष तथा कथन विशेष पर बल पड़ता है। निम्नलिखित वाक्य पढ़िए :

(क) हिम्मत हुई **तो** हुई कैसे?

(ख) जोतकर लाया **तो** लाने दो।

उपर्युक्त वाक्य (क) में **'तो'** शर्त, चुनौती आदि के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है और वाक्य (ख) में **'तो'** 'इसलिए' के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।

पाठ से 'तो' वाले पाँच वाक्य छाँटकर लिखिए।

4. निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए :

(क) हिम्मत हुई तो हुई कैसे?

(ख) दिया तो दिया क्यों?

कौन, कहाँ, कब, किसने, किसे आदि प्रश्न वाचकों के प्रयोग से इसी प्रकार के वाक्य बनाइए।

5. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्य प्रयोग इस प्रकार कीजिए कि मुहावरे का अर्थ स्पष्ट हो जाए। आँख दिखाना, दाल न गलना, अक्ल ठिकाने लगना, जूते घिसना, लाल-पीली आँखें निकालना, नींद बेचकर जागरण मोल लेना, एड़ी से चोटी तक।

योग्यता-विस्तार

पिछली पीढ़ियों और आज की पीढ़ी के रहन-सहन, खान-पान, वेशभूषा तथा मनुष्य के आपसी संबंधों में काफ़ी अंतर दिखाई देता है। इस अंतर पर कक्षा में परिचर्चा आयोजित कीजिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

ब्यालू - शाम का भोजन
अलाव - तापने के लिए जलाई हुई आग
बूते की कामना और बूते का काम - अपने सामर्थ्य के अनुसार इच्छा और परिश्रम करना
मुट्ठी में समाय - कम-से-कम आवश्यकताएँ
मगज़मारी - बात मनवाने के लिए सिर खपाना
अच्छी तरह खबर लेना - डाँटना, जवाब-तलब करना
गुस्सा ठंडा पड़ना - शांत हो जाना
हेकड़ी - अकड़
उघाड़ना - हटाना
आत्मीयता - अपनापन
उलाहना - शिकायत
अबूझ - बिना सोचे समझे
इज़ारेदार - ठेकेदार
करचा - काँच का टुकड़ा
चौमासा - वर्षा ऋतु के चार मास
पोसाता - भाता, पसंद आना, सामर्थ्य में होना
अमानत - धरोहर, थाती
अवतरित - जन्म लेना, आविर्भूत होना
सुमत - सद्बुद्धि

दाँताकसी	-	बहस, तू-तू मैं-मैं
थूक उछालना	-	आरोप-प्रत्यारोप लगाना
सूरज के टुकड़े	-	सोने के सिक्के, धन की चमक
बेहाड़	-	बिना हड्डी वाली
गाछ-बिरछे	-	पेड़ और वृक्ष
उलटी छाती चढ़ना	-	विपरीत दिशा में बहना
आग लगना	-	क्रोध से जल उठना
तड़ा	-	पेड़ की शाखाएँ काटने का हँसिये के आकार का हथियार विशेष जिसमें हत्थे की जगह बाँस का टुकड़ा लगा होता है
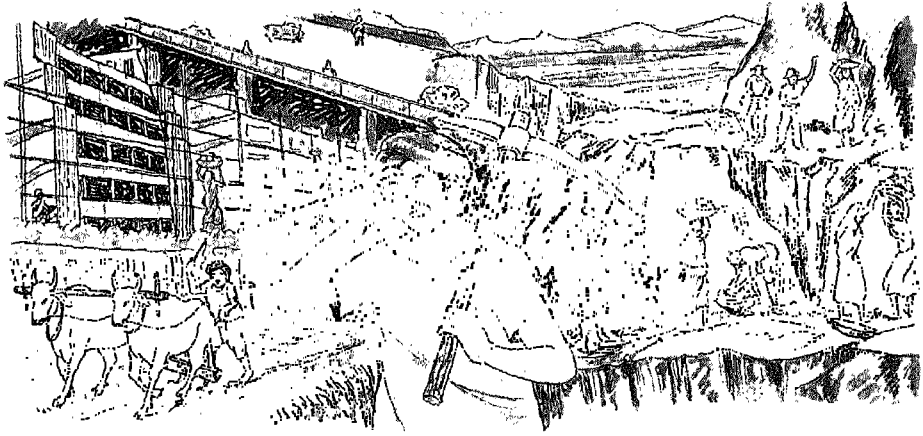
16. मज़दूर

(प्रस्तुत कविता में मज़दूरों के जीवन की विडंबना का चित्रण हुआ है। अनादि काल से इस धरती को सुंदर बनाने और सँवारने में मज़दूर वर्ग की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है और भविष्य में भी रहेगी। अपने श्रम-बल से वह दूसरों के लिए सुख-सुविधाएँ जुटाता है, अन्न उगाता है, भवनों का निर्माण करता है, सड़कें बनाता है किंतु स्वयं अभावों में जीता है। कवि प्रश्न उठाता है — क्या शेष समाज का इस वर्ग के प्रति कोई कर्तव्य नहीं?)

मैं मज़दूर मुझे देवों की बस्ती से क्या?
अगणित बार धरा पर मैंने स्वर्ग बनाए।

अंबर पर जितने तारे, उतने वर्षों से,
मेरे पुरखों ने धरती का रूप सँवारा।
धरती को सुंदरतम करने की ममता में,
बिता चुका है कई पीढ़ियाँ वंश हमारा।

और अभी आगे आनेवाली सदियों में,
मेरे वंशज धरती का उद्धार करेंगे।
इस प्यासी धरती के हित मैं ही लाया था,
हिमगिरि चीर, सुखद गंगा की निर्मल धारा।
मैंने रेगिस्तानों की रेती धो-धोकर,
वंध्या धरती पर भी स्वर्णिम पुष्प खिलाए।
मैं मज़दूर मुझे देवों की बस्ती से क्या?

अपने नहीं अभाव मिटा पाया जीवन भर,
पर औरों के सभी अभाव मिटा सकता हूँ।
तूफ़ानों-भूचालों की भयप्रद छाया में,
मैं ही एक अकेला हूँ, जो गा सकता हूँ।
मेरे 'मैं' की संज्ञा भी इतनी व्यापक है,
इसमें मुझ-से अगणित प्राणी आ जाते हैं।
मुझको अपने पर अदम्य विश्वास रहा है,
मैं खंडहर को फिर से महल बना सकता हूँ।
जब-जब भी मैंने खंडहर आबाद किए हैं,
प्रलय-मेघ, भूचाल देख मुझको शरमाए।
मैं मज़दूर मुझे देवों की बस्ती से क्या?

युगों-युगों से इन झोंपड़ियों में रहकर भी,
औरों के हित लगा हुआ हूँ महल सजाने।

ऐसे ही मेरे कितने साथी भूखे रह,
लगे हुए हैं औरों के हित अन्न उगाने।
इतना समय नहीं मुझको जीवन में मिलता,
अपनी खातिर सुख के कुछ सामान जुटा लूँ।
पर मेरे हित उनका भी कर्तव्य नहीं क्या?
मेरी बाँहें जिनके भरती रहीं खज़ाने
अपने घर के अंधकार की मुझे न चिंता,
मैंने तो औरों के बुझते दीप जलाए।
मैं मज़दूर मुझे देवों की बस्ती से क्या?
अगणित बार धरा पर मैंने स्वर्ग बनाए।

— देवराज दिनेश

प्रश्न-अभ्यास

बोध और सराहना

(क) मौखिक

1. 'देवों की बस्ती' से क्या आशय है?
2. "मज़दूर हज़ारों वर्षों से इस धरती का रूप सँवारते रहे हैं और भविष्य में भी सदियों तक सँवारते रहेंगे।" यह विचार कविता की किन पंक्तियों में व्यक्त हुआ है?
3. धरती पर गंगा की धारा लाने वाला कौन था? उसे मज़दूर की श्रेणी में क्यों रखा गया है?

4. मज़दूर की 'मैं' संज्ञा में और कौन-कौन से प्राणी आ सकते हैं?
5. इस कविता का मुख्य प्रतिपाद्य क्या है?
   (क) मज़दूर के जीवन की विडंबना
   (ख) श्रम की महत्ता
   (ग) उपेक्षित मज़दूर का पक्ष
   (घ) मज़दूर की परोपकार भावना

(ख) लिखित

1. मज़दूर का धनिक वर्ग की बस्ती से कोई सरोकार क्यों नहीं है?
2. मज़दूर धरती का रूप किस प्रकार सँवारते हैं?
3. मज़दूर के जीवन की विडंबना क्या है?
4. मेहनतकश मज़दूर अभावों में जीने के लिए विवश क्यों है?
5. समाज के संपन्न वर्ग का मज़दूरों के प्रति क्या कर्तव्य है?
6. निम्नलिखित पंक्तियों की व्याख्या कीजिए –
   (क) वंध्या धरती पर भी स्वर्णिम पुष्प खिलाए।
   (ख) मेरे 'मैं' की संज्ञा भी इतनी व्यापक है।
   (ग) प्रलय-मेघ, भूचाल देख मुझको शरमाए।

रचना-संसार

1. भगवतशरण उपाध्याय का "मैं मज़दूर हूँ" निबंध पढ़िए और उसपर कक्षा में चर्चा कीजिए।
2. निम्नलिखित पंक्तियों को पढ़िए और उनकी तुलना प्रस्तुत कविता से कीजिए :

आरती लिए तू किसे खोजता है मूरख
मंदिरों, राज प्रासादों में, खलिहानों में।
देवता कहीं सड़कों पर मिट्टी तोड़ रहे,
देवता मिलेंगे खेतों में खलिहानों में।

– रामधारीसिंह 'दिनकर'

3. पास की किसी मज़दूर बस्ती में जाकर मज़दूरों के जीवन और रहन-सहन का परिचय प्राप्त कीजिए और उसपर कुछ वाक्य लिखिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

देवों की बस्ती - स्वर्ग, देवताओं की नगरी, धनिक और संपन्न वर्ग की नगरी

इस प्यासी धरती……निर्मल धारा - भगीरथ की ओर संकेत है। पौराणिक कथा के अनुसार भगीरथ ही गंगा की धारा को शिव-जटाओं से धरती पर लाए थे

वंध्या - अनुपजाऊ, ऊसर

अदम्य - जिसका दमन न किया जा सके, जिसे दबाया न जा सके

17. बिंदु-बिंदु विचार

(प्रस्तुत पाठ में तीन विचार प्रधान लघु निबंध प्रस्तुत किए गए हैं। पहले निबंध 'वाणी और व्यवहार' में लेखक ने किसी भी सीख को रट लेने तथा उसे समझ-बूझकर आचरण में सही ढंग से न उतार पाने की प्रवृत्ति पर व्यंग्य किया है। उसने वाणी और व्यवहार की एकरूपता पर बल दिया है।

'पारसमणि' निबंध में लेखक ने प्रत्येक व्यक्ति को अपने भीतर छिपी पारसमणि को पहचानने के लिए कहा है। लेखक की दृष्टि में यह पारसमणि है – हमारी सेवा भावना, हमारा अपना परिश्रम और लगन। ऐसी पारसमणि के स्पर्श से मनचाहा सोना बनाया जा सकता है, वांछित उपलब्धि प्राप्त की जा सकती है। किंतु इसके साथ ही उसने हमें यह चेतावनी भी दी है कि सोना बनाते समय मन की शुद्धता अनिवार्य है, अन्यथा सोने की मादकता तथा उसे और अधिक पाने का लालच हमें विनाश की ओर ले जा सकता है।

'विवेक की वल्गा' निबंध में लेखक बुद्धि और परिश्रम को 'बड़ी चीज़' मानते हुए भी उन्हें सब कुछ नहीं मानता। ये दोनों जहाँ एक ओर हमें सुख, शांति और प्रगति की राह पर आगे बढ़ाते हैं, वहीं हमारे लिए घातक भी बन जाते हैं। बुद्धि और परिश्रम के घोड़ों को उच्छृंखल होने से रोकने के लिए, विवेक की लगाम अनिवार्य है, अन्यथा हमारा पतन निश्चित है।)

1. वाणी और व्यवहार

मुन्ना ज़ोर-ज़ोर से अपना पाठ रट रहे हैं – "क्लीनलीनेस इज़ नैक्स्ट टु गॉडलीनेस : क्लीनलीनेस इज़ नैक्स्ट टु गॉडलीनेस।"

बड़ा सुंदर पाठ है! हिंदी में इस का अर्थ लगभग यह हुआ कि 'शुचिता देवत्व की छोटी बहन है।' मेरा ध्यान अपनी किताब से उचट कर मुन्ना की ओर लग जाता है।

पाठ याद हो गया। मुन्ना के मित्र बाहर से बुला रहे हैं। मुन्ना पैर में चप्पल डाल कर सपाटे-से बाहर निकल जाते हैं। उनके खेलने का समय हो गया है।

अब कमरे में बिटिया आती हैं। भाई पर बहुत लाड़ है इनका। मुन्ना सात समंदर पार की भाषा पढ़ रहे हैं — इसलिए भाई का आदर भी करती हैं। बिटिया अंग्रेज़ी नहीं पढ़तीं।

मेज़ के पास पहुँचकर बिटिया निशान के लिए कागज़ लगाकर मुन्ना की किताब बंद करती हैं; किताबों-कॉपियों-कागज़ों के बेतरतीब ढेर को सँवारकर करीने से चुनती हैं; खुले पड़े पेन की टोपी बंद करती हैं; गीला कपड़ा लाकर स्याही के दाग-धब्बे पोंछती हैं और कुरसी को कायदे से रखकर चुपचाप चली जाती हैं।

क्लीनलीनेस इज़ नैक्स्ट टु गॉडलीनेस!
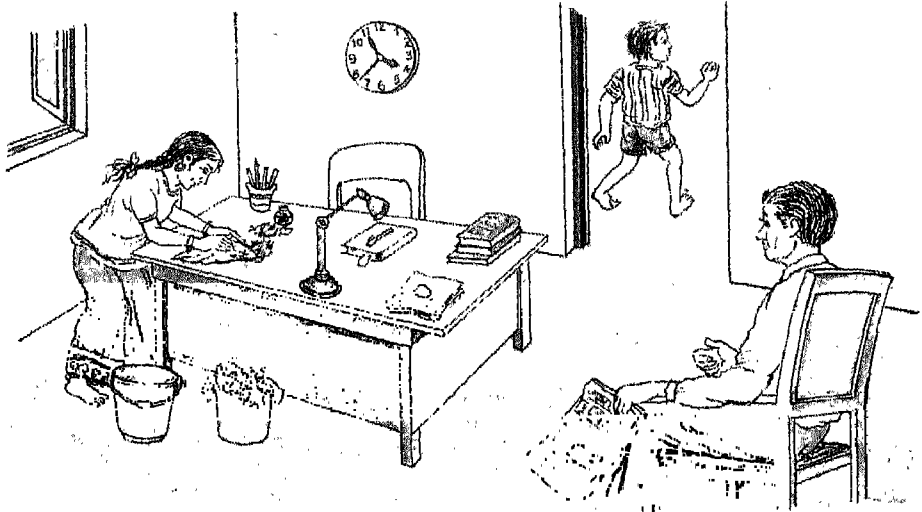
मेरे सामने ज्ञान नंगा होकर खिसियाना-सा रह जाता है।

क्षण मात्र में सब कुछ बदल जाता है! गंभीर घोष से सुललित शैली में दिए गए अनेकानेक भाषणों में सुने सुंदर सुगठित वाक्य कानों में गूँजने लगते हैं! मनमोहिनी जिल्द की शानदार छपाईवाली पुस्तकों में पढ़े कलापूर्ण अंश आँखों के आगे तैर जाते हैं!

प्रवचन और अध्ययन सब बौने हो गए हैं!

आचरण की एक लकीर ने सबको छोटा कर दिया है।

ज्ञान चाहे मस्तिष्क में रहे या पुस्तक में, वह चाहे मुँह से बखाना जाए या मुद्रण के बंदीखाने में रहे — आचरण में उतरे बिना विफल मनोरथ है।

धर्म और राजनीति, समाज और व्यवहार के क्षेत्रों में विविध-विविध मंचों से उपदेश देनेवाले मुन्नाओ! केवल कंठ से मत बोलो — हम तुम्हारे हृदयों की गूँज सुनना चाहते हैं । वाणी और व्यवहार में समता आने दो — हम वास्तव में तुम्हारे समक्ष श्रद्धानत होना चाहते हैं।

मुन्ना! पाठ को रटो मत, उसे अपने अंदर समो लो!

बात को मुँह से और स्वयं को घर से बाहर निकालने से पहले इन दाग-धब्बों को पोंछ लो, जो तुम्हारी असावधानी से चारों ओर पड़ गए हैं।

2. पारसमणि

पारसमणि है तुम्हारे पास?

नहीं तो।

और तुम्हारे पास?

नहीं।

और तुम्हारे?

नहीं।

यहाँ-वहाँ जाने कितनों से पूछा, पर पारसमणि तो कहीं मिली नहीं। क्या इस अद्‌भुत मणि की बात निरी कल्पना है? यदि वास्तव में ऐसी कोई मणि है, तो मुझ अभागे को मिलती क्यों नहीं? तभी किसी ने कहा, "है, मेरे पास है पारसमणि। तुम्हें चाहिए? क्या करोगे उसका?"

उत्तर दिया : हाँ, चाहिए। इसीलिए न, खोजता फिर रहा हूँ। उसके स्पर्श से लोहे को सोना बनाऊँगा।

उसी ने कहा : शुभ संकल्प है तुम्हारा। मणि तो मैं तुम्हें दे दूँ, पर एक बात बताओ – लोहा है तुम्हारे पास?

मुझे जैसे काठ मार गया। पारस की पहली शर्त लोहा है – यह तो कभी ध्यान ही न आया।

मेरा असमंजस देख वही बोला "न सही लोहा, लकड़ी, पत्थर, चमड़ा, पीतल कुछ तो होगा, वही लाओ, मेरे पास बहुत प्रकार की पारसमणियाँ हैं।"

आश्चर्य! क्या पारसमणियों के भी बहुत प्रकार होते हैं? परंतु मेरे पास तो कुछ भी नहीं है। बिलकुल खाली हाथ हूँ। हाय, सोना बनाने का कैसा सुयोग हाथ से निकला जा रहा है।

उसी ने धीरज बँधाया : निराश मत हो। जिसके पास कुछ नहीं है, उसके लिए भी पारसमणि है।

सुखद आश्चर्य से भर उठा मैं। मणि लेने के लिए हाथ फैला दिए।

वही बोला : याचना के लिए फैलाए गए हाथ का भाग केवल तिरस्कार है, बंधु!

हाथ बढ़ाओ तो किसी उद्योग के लिए। तुम पारसमणि खोजते फिर रहे हो न, परंतु वह तो तुम्हारे भीतर ही है – स्पर्शमणि। खाली हाथ हो, तो सेवा के स्पर्श से, लोहे-पीतल वाले हो, तो कौशल के स्पर्श से और प्रतिभा वाले हो, तो लगन के स्पर्श से मनचाहा सोना बना सकते हो तुम। स्पर्श तुम्हारा जितना शुद्ध होगा, सोना भी उसी मात्रा में शुद्ध प्राप्त होगा तुम्हें।

मैं धन्य होकर लौटने लगा, तो उसी ने टोका : गुर सिखाया है, इसलिए यह पूछने का अधिकार है मेरा, सोना बनाकर उसका करोगे क्या?

मैं हतप्रभ रह गया – यह भी कोई प्रश्न हुआ भला!

उसी ने कहा : प्रश्न यह उचित है और आवश्यक भी। सोने में अच्छाई जितनी है, बुराई उससे कम नहीं है। सोना जिसके पास है, उसे मद से मारता है और जिसके पास नहीं है, उसे लोभ से त्रस्त रखता है। शुद्ध सोने का वास शुद्ध व्यक्ति और शुद्ध समाज में ही संभव है।

3. विवेक की वल्गा

यह एक मंदिर है – विशाल और दिव्य, वास्तुकला का जीवित आदर्श। यहाँ आकर हमारे विकारों का शमन हो जाता है।

यह एक मीनार है – ऊँची और भव्य, किसी कारीगर के संतुलन-बोध की प्रत्यक्ष साक्षी।

इस पर चढ़कर मुल्ला अज़ान देता है कि उठो और ईश्वर के प्रति कृतज्ञता-ज्ञापन करो!

यह एक सड़क है – सुदीर्घ और सुदृढ़, किसी इंजीनियर के अनुभवों और प्रयोगों की जाग्रत निशानी। यह मानव के विकास और सभ्यता की प्राण-रेखा है।

यह एक कारखाना है –

यह एक हाट है –

यह एक ओषधि है –

ये सब प्रगति के कारवाँ के पद-चिह्न हैं –

ये सब आदमी की बुद्धि और परिश्रमशीलता के प्रति श्रद्धांजलियाँ हैं।

बुद्धि और परिश्रम बड़ी चीज़ें हैं – बहुत बड़ी चीज़ें; लेकिन क्या ये ही पर्याप्त और सब-कुछ हैं?

नहीं। और निश्चयात्मक रूप से नहीं।

असह्य पीड़ा पहुँचानेवाले यातना-यंत्र –

विध्वंसवाहिनी तोपें –

अपने क्रोड़ में प्रलय को प्रश्रय देनेवाले बम –

सहस्रों को सुख और शांति से वंचित करनेवाले शोषण के नानाविध प्रकट-प्रच्छन्न उपाय – ये भूख, ये बेकारी और ये घुला-घुलाकर मारनेवाले ज़हर –

ये सब अवनति की राह पर आदमी द्वारा छोड़े गए भयावने और भद्दे निशान हैं।

और ये सब आदमी की बुद्धि और परिश्रमशीलता के प्रति निंदा के पारित प्रस्ताव हैं।

तो हम जानें कि बुद्धि और परिश्रम बड़ी चीज़ें हैं – बहुत बड़ी चीज़ें, लेकिन न ये पर्याप्त हैं और न सब-कुछ।

इनसे ऊपर जो है, वह है आदमी का विवेक।

आदमी की तहज़ीब और तरक्की के लिए जितनी बुद्धि और परिश्रम लगाया गया है, उसे बर्बर और पशु बनाने के लिए उससे कम बुद्धि और परिश्रम का व्यय नहीं हुआ है। हिसाब लगाकर देखें तो प्राणदायी बटी और प्राणघातक विष दोनों ही समान बुद्धि और परिश्रम के प्रतिफलन हैं। अफ़ीम की खेती गेहूँ उपजाने से अधिक ही कष्टकर है, कम नहीं।

बंधु, विवेक की वल्गा को कहोगे नहीं, तो बुद्धि और परिश्रम का तुरंग तुम्हें रसातल से इधर पटकनेवाला नहीं है।

और यह न चेतावनी है, न धमकी और न परामर्श –

यह केवल तथ्य है!

– रामानंद दोषी

प्रश्न-अभ्यास

बोध और विचार

(1)

(क) मौखिक

1. मुन्ना कौन-सा पाठ याद कर रहा था?
2. मुन्ना की बहन उसके लिए क्या-क्या कार्य किया करती थी?
3. आपकी राय में अंग्रेज़ी की सूक्ति का मुन्ना और उसकी बहन में से किसने सही-सही अर्थ समझा?

(ख) लिखित

1. लेखक को सारे प्रवचन-अध्ययन बौने क्यों लगे?
2. "हम वास्तव में तुम्हारे समक्ष श्रद्धानत होना चाहते हैं।" — इस वाक्य में लेखक ने 'वास्तव' शब्द का प्रयोग क्यों किया है?
3. लेखक के किन-किन कथनों से ज्ञात होता है कि मुन्ना पढ़े हुए पाठ को व्यवहार में नहीं ला सका?
4. "आचरण में उतारे बिना ज्ञान अधूरा रह जाता है।" — टिप्पणी कीजिए।
5. "विविध मंचों से उपदेश देने वाले मुन्नाओ।" — कथन में लेखक 'मुन्नाओ' से किनकी ओर संकेत कर रहा है और क्यों?
6. आशय स्पष्ट कीजिए —
   — मेरे सामने ज्ञान नंगा होकर खिसियाना-सा रह जाता है।
   — बात को मुँह से और स्वयं को घर से बाहर निकालने से पहले इन दाग-धब्बों को पोंछ लो, जो तुम्हारी असावधानी से चारों ओर पड़ गए हैं।
7. लेखक ने इस निबंध में अंग्रेज़ी की सूक्ति — "क्लीनलीनेस इज़ नैक्स्ट टु गॉडलीनेस" को आधारबिंदु क्यों बनाया है?

(2)

(क) मौखिक

1. लेखक पारसमणि क्यों ढूँढ़ रहा था?
2. किसी ने कहा : "मेरे पास है पारसमणि" — इसमें 'किसी' कौन है?
   (क) कोई राह चलता व्यक्ति
   (ख) लेखक का विवेक
   (ग) लेखक की बुद्धि
   (घ) लेखक की कल्पना

3. "लोहा है तुम्हारे पास?" में 'लोहा' से क्या आशय है?
   (क) उद्यमशीलता
   (ख) लौह धातु
   (ग) भौतिक उपकरण
   (घ) अनुभव
4. लेखक ने स्पर्शमणि के कौन-कौन से रूप बताए हैं?

(ख) लिखित

1. 'शुद्ध स्पर्श' से क्या तात्पर्य है?
2. सोने का होना और न होना दोनों ही समस्या के कारण क्यों हैं?
3. आशय स्पष्ट कीजिए –
   – याचना के लिए फैलाए गए हाथ का भाग केवल तिरस्कार है, बंधु!
   – शुद्ध सोने का वास शुद्ध व्यक्ति और शुद्ध समाज में ही संभव है।

(3)

(क) मौखिक

1. लेखक ने मंदिर और मस्जिद का क्या महत्त्व दर्शाया है?
2. लेखक मनुष्य की किन विशेषताओं का गुणगान कर रहा है?

(ख) लिखित

1. लेखक ने सड़क को मानव के विकास और सभ्यता की प्राणरेखा क्यों कहा है?
2. लेखक मनुष्य की बुद्धि और परिश्रम के प्रति नतमस्तक क्यों है?
3. लेखक बुद्धि और परिश्रम को 'बहुत कुछ' मानकर भी 'सब कुछ' क्यों नहीं मानता?
4. "ये सब अवनति की राह पर आदमी द्वारा छोड़े गए भयावने और भद्दे निशान हैं।" – इस वाक्य में 'ये सब' किनके लिए आया है और उन्हें 'भयावने और भद्दे निशान' क्यों कहा गया है?

5. अवनति की राह पर जाते हुए मनुष्य को लेखक चेतावनी, धमकी या परामर्श न देकर केवल तथ्य क्यों बता रहा है?

भाषा-अध्ययन

1. निम्नलिखित शब्दों के लिए दो-दो समानार्थी शब्द (पर्याय) लिखिए :

किताब	सोना
लाड़	गोद
पत्थर	बर्बर
समंदर	आँख

2. स्तंभ 'क' के विशेषणों को स्तंभ 'ख' के दिए उपयुक्त विशेष्यों से जोड़कर लिखिए :

'क'	'ख'
विशाल	सड़क
ऊँची	बटी
सुदीर्घ	मंदिर
विध्वंसक	विष
प्राणदायी	मीनार
प्राणघातक	तोप

3. नीचे दिए वाक्य को पढ़िए :

(क) सोना पाकर उसका करोगे क्या?

⟹ सोना पाकर उसका क्या करोगे?

(ख) सोने के आकांक्षी हो तुम।

⟹ तुम सोने के आकांक्षी हो।

वाक्य में विशेष अंश पर बल देने के लिए पदों के सामान्य क्रम को बदल देते हैं। पाठ में से इसी प्रकार के वाक्य छाँटकर लिखिए और उनका सामान्य पदक्रम भी लिखिए।

4. नीचे दिए संवाद अंशों को पढ़िए :

— पारसमणि है तुम्हारे पास?

— नहीं तो।

— और तुम्हारे पास?

— नहीं।

— और तुम्हारे?

— नहीं।

संवाद में वाक्य एक पद का हो सकता है, किंतु वह पूरे वाक्य का अर्थ देता है; जैसे — उपर्युक्त संवाद में पहले वाक्य को छोड़कर शेष वाक्यों का पूरा रूप इस प्रकार है :

— नहीं तो, (पारसमणि मेरे पास नहीं है)।

— और तुम्हारे पास (पारसमणि है)?

— नहीं (मेरे पास नहीं है)।

— और तुम्हारे (पास पारसमणि है)।

— नहीं (मेरे पास भी नहीं है)।

इसी प्रकार दो संवाद लिखिए जिनमें ऐसे वाक्यों का प्रयोग हो।

5. निम्नलिखित शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए —

सुललित, सुगठित, प्रवचन, श्रद्धानत, असमंजस

योग्यता-विस्तार

प्रस्तुत लघु निबंधों में अनेक सूक्ति वाक्य आए हैं। उन्हें छाँटिए, उन पर चर्चा कीजिए और उन्हें चार्ट के रूप में प्रस्तुत कीजिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

शुचिता - पवित्रता

बेतरतीब - बिना क्रम के, अव्यवस्थित

करीने - अच्छी तरह से, ढंग से
घोष - आवाज़, ध्वनि
प्रवचन - उपदेशपरक भाषण
समक्ष - सामने, सम्मुख
समोना - आत्मसात करना, समेटना
पारसमणि - ऐसी मणि जिसके स्पर्श से लोहा सोना हो जाए
निरी - मात्र, सिर्फ़
काठ मारना - सुन्न रह जाना, जड़वत हो जाना
असमंजस - दुविधा
सुयोग - सुअवसर, अच्छा मौका
हाथ से निकलना - मौका चूक जाना
याचना - माँगना
भाग - भाग्य, हिस्सा
प्रतिभा - सृजनशील बुद्धि
गुर सिखाना - रहस्य की बात बताना
हत्प्रभ - भौंचक
त्रस्त - परेशान, दुखी
वल्गा - लगाम
दिव्य - अलौकिक
वास्तुकला - भवन निर्माण की कला
शमन होना - शांत होना
भव्य - शानदार
संतुलन बोध - गुण, अवस्था या दशा में उचित अनुपात का ज्ञान
साक्षी - गवाह
अज़ान - नमाज़ के समय की सूचना, नमाज़ के लिए आह्वान
कृतज्ञता-ज्ञापन - आभार प्रकट करना

सुदीर्घ	-	लंबा
प्राण रेखा	-	जीवन-रेखा
कारवाँ	-	देशांतर जाने वाले यात्रियों या व्यापारियों का झुंड
हाट	-	बाज़ार
यातना-यंत्र	-	पीड़ा पहुँचाने के उपकरण
विध्वंसवाहिनी	-	नाश करने वाली
क्रोड़	-	गोद
प्रश्रय	-	सहारा
प्रच्छन्न	-	छुपा हुआ
तहज़ीब	-	सभ्यता
प्रतिफलन	-	परिणाम
तुरंग	-	घोड़ा
परामर्श	-	सलाह

18. नीलकंठ

(इस रेखाचित्र में महादेवी वर्मा ने अपने पालतू मोर 'नीलकंठ' के मीठे-कड़वे अनुभवों का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है। इस पाठ के माध्यम से लेखिका के जीव-जंतुओं के प्रति अथाह प्रेम और सहानुभूति का परिचय मिलता है। नीलकंठ सहित उसके सभी साथियों के रूप, स्वभाव, व्यवहार और चेष्टाओं का लेखिका ने जितनी गहनता और सूक्ष्मता से निरीक्षण तथा वर्णन किया है, उससे यह रेखाचित्र अत्यंत जीवंत बन गया है।)

उस दिन एक अतिथि को स्टेशन पहुँचाकर मैं लौट रही थी कि चिड़ियों और खरगोशों की दुकान का ध्यान आ गया और मैंने ड्राइवर को उसी ओर चलने का आदेश दिया।

बड़े मियाँ चिड़ियावाले की दुकान के निकट पहुँचते ही उन्होंने सड़क पर आकर ड्राइवर को रुकने का संकेत दिया। मेरे कोई प्रश्न करने के पहले ही उन्होंने कहना आरंभ किया, सलाम गुरु जी! पिछली बार आने पर आपने मोर के बच्चों के लिए पूछा था। शंकरगढ़ से एक चिड़ीमार दो मोर के बच्चे पकड़ लाया है, एक मोर है, एक मोरनी। आप पाल लें। मोर के पंजों से दवा बनती है, सो ऐसे ही लोग खरीदने आए थे। आखिर मेरे सीने में भी तो इनसान का दिल है। मारने के लिए ऐसी मासूम चिड़ियों को कैसे दूँ! टालने के लिए मैंने कह दिया – "गुरुजी ने मँगवाए हैं। वैसे, यह कमबख्त रोज़गार ही खराब है। बस, पकड़ो-पकड़ो, मारो-मारो।"

बड़े मियाँ के भाषण की तूफ़ान मेल के लिए कोई निश्चित स्टेशन नहीं है। सुननेवाला थककर जहाँ रोक दे वहीं स्टेशन मान लिया जाता है। इस तथ्य से परिचित होने के कारण ही मैंने बीच में उन्हें रोककर पूछा, "मोर के बच्चे हैं कहाँ?" बड़े मियाँ के हाथ के संकेत का अनुसरण करते हुए मेरी दृष्टि एक तार के छोटे-से पिंजड़े तक पहुँची जिसमें तीतरों के समान दो बच्चे बैठे थे। पिंजड़ा इतना संकीर्ण था कि वे पक्षी-शावक जाली के गोल फ्रेम में किसी जड़े चित्र जैसे लग रहे थे।

मेरे निरीक्षण के साथ-साथ बड़े मियाँ की भाषण-मेल चली जा रही थी "ईमान कसम, गुरुजी – चिड़ीमार ने मुझसे इस मोर के जोड़े के नकद तीस रुपए लिए हैं। बारहा कहा, भई ज़रा सोच तो, अभी इनमें मोर की कोई खासियत भी है कि तू इतनी बड़ी कीमत ही माँगने चला! पर वह मूँजी क्यों सुनने लगा। आपका खयाल करके अछता-पछताकर देना ही पड़ा। अब आप जो मुनासिब समझें।" अस्तु, तीस चिड़ीमार के नाम के और पाँच बड़े मियाँ के ईमान के देकर जब मैंने वह छोटा पिंजड़ा कार में रखा तब मानो वह जाली के चौखटे का चित्र जीवित हो गया। दोनों पक्षी-शावकों के छटपटाने से लगता था मानो पिंजड़ा ही सजीव और उड़ने योग्य हो गया है।

घर पहुँचने पर सब कहने लगे, "तीतर हैं, मोर कहकर ठग लिया है।"

कदाचित अनेक बार ठगे जाने के कारण ही ठगे जाने की बात मेरे चिढ़ जाने की दुर्बलता बन गई है। अप्रसन्न होकर मैंने कहा, "मोर के क्या सुर्खाब के पर लगे हैं। हैं तो पक्षी ही।" चिढ़ा दिया जाने के कारण ही संभवतः उन दोनों पक्षियों के प्रति मेरे व्यवहार और यत्न में कुछ विशेषता आ गई।

पहले अपने पढ़ने-लिखने के कमरे में उनका पिंजड़ा रखकर उसका दरवाज़ा खोला, फिर दो कटोरों में सत्तू की छोटी-छोटी गोलियाँ और पानी रखा। वे दोनों चूहेदानी जैसे पिंजड़े से निकलकर कमरे में मानो खो गए, कभी मेज़ के नीचे घुस गए, कभी अलमारी के पीछे। अंत में इस लुका-छिपी से थककर उन्होंने मेरे रद्दी कागज़ों की टोकरी को अपने नए बसेरे का गौरव प्रदान किया। दो-चार दिन वे इसी प्रकार दिन में इधर-उधर गुप्तवास करते और रात में रद्दी की टोकरी में प्रकट होते रहे। फिर आश्वस्त हो जाने पर कभी मेरी मेज़ पर, कभी कुरसी पर और कभी मेरे सिर पर अचानक आविर्भूत होने लगे। खिड़कियों में तो जाली लगी थी, पर दरवाज़ा मुझे निरंतर बंद रखना पड़ता था। खुला रहने पर चित्रा (मेरी बिल्ली) इन नवागंतुकों का पता लगा सकती थी और तब उसके शोध का क्या परिणाम होता, यह अनुमान करना कठिन नहीं है । वैसे वह चूहों पर भी आक्रमण नहीं करती, परंतु यहाँ तो दो सर्वथा अपरिचित पक्षियों की अनधिकार चेष्टा का प्रश्न था । उसके लिए दरवाज़ा बंद रहे और ये दोनों (उसकी दृष्टि में) ऐरे-गैरे मेरी मेज़ को अपना सिंहासन बना लें, यह स्थिति चित्रा जैसी अभिमानिनी मार्जारी के लिए असह्य ही कही जाएगी।

जब मेरे कमरे का कायाकल्प चिड़ियाखाने के रूप में होने लगा, तब मैंने बड़ी कठिनाई से दोनों चिड़ियों को पकड़कर जाली के बड़े घर में पहुँचाया जो मेरे जीव-जंतुओं का सामान्य निवास है।

दोनों नवागंतुकों ने पहले से रहनेवालों में वैसा ही कुतूहल जगाया जैसा नववधू के आगमन पर परिवार में स्वाभाविक है। लक्का कबूतर नाचना

छोड़कर दौड़ पड़े और उनके चारों ओर घूम-घूमकर गुटरगूँ-गुटरगूँ की रागिनी अलापने लगे। बड़े खरगोश सभ्य सभासदों के समान क्रम से बैठकर गंभीर भाव से उनका निरीक्षण करने लगे। ऊन की गेंद जैसे छोटे खरगोश उनके चारों ओर उछल-कूद मचाने लगे। तोते मानो भलीभाँति देखने के लिए एक आँख बंद करके उनका परीक्षण करने लगे। उस दिन मेरे चिड़ियाघर में मानो भूचाल आ गया।

धीरे-धीरे दोनों मोर के बच्चे बढ़ने लगे। उनका कायाकल्प वैसा ही क्रमशः और रंगमय था जैसा इल्ली से तितली का बनना।

मोर के सिर की कलगी और सघन, ऊँची तथा चमकीली हो गई। चोंच अधिक बंकिम और पैनी हो गई, गोल आँखों में इंद्रनील की नीलाभ द्युति झलकने लगी। लंबी नील-हरित ग्रीवा की हर भंगिमा में धूपछाँही तरंगें उठने-गिरने लगीं। दक्षिण-वाम दोनों पंखों में सलेटी और सफ़ेद आलेखन स्पष्ट होने लगे। पूँछ लंबी हुई और उसके पंखों पर चंद्रिकाओं के इंद्रधनुषी रंग उद्दीप्त हो उठे। रंग-रहित पैरों को गर्वीली गति ने एक नई गरिमा से रंजित कर दिया। उसका गरदन ऊँची कर देखना, विशेष भंगिमा के साथ उसे नीची कर दाना चुगना, पानी पीना, टेढ़ी कर शब्द सुनना आदि क्रियाओं में जो सुकुमारता और सौंदर्य था, उसका अनुभव देखकर ही किया जा सकता है। गति का चित्र नहीं आँका जा सकता।

मोरनी का विकास मोर के समान चमत्कारिक तो नहीं हुआ, परंतु अपनी लंबी धूपछाँही गरदन, हवा में चंचल कलगी, पंखों की श्याम-श्वेत पत्रलेखा, मंथर गति आदि से वह भी मोर की उपयुक्त सहचारिणी होने का प्रमाण देने लगी।

नीलाभ ग्रीवा के कारण मोर का नाम रखा गया नीलकंठ और उसकी छाया के समान रहने के कारण मोरनी का नामकरण हुआ राधा।

मुझे स्वयं ज्ञात नहीं कि कब नीलकंठ ने अपने आपको चिड़ियाघर के निवासी जीव-जंतुओं का सेनापति और संरक्षक नियुक्त कर लिया। सवेरे ही वह सब खरगोश कबूतर आदि की सेना एकत्र कर उस ओर ले जाता जहाँ दाना दिया जाता है और घूम-घूमकर मानो सबकी रखवाली करता रहता। किसी ने कुछ गड़बड़ की और वह अपने तीखे चंचु-प्रहार से उसे दंड देने दौड़ा।

खरगोश के छोटे बच्चों को वह चोंच से उनके कान पकड़कर ऊपर उठा लेता था और जब तक वे आर्तक्रंदन न करने लगते उन्हें अधर में लटकाए रखता। कभी-कभी उसकी पैनी चोंच से खरगोश के बच्चों का कर्णवेध संस्कार हो जाता था, पर वे फिर कभी उसे क्रोधित होने का अवसर न देते थे। दंडविधान के समान ही उन जीव-जंतुओं के प्रति उसका प्रेम भी असाधारण था। प्रायः वह मिट्टी में पंख फैलाकर बैठ जाता और वे सब उसकी लंबी पूँछ और सघन पंखों में छुआ-छुऔअल-सा खेलते रहते थे।

ऐसी ही किसी स्थिति में एक साँप जाली के भीतर पहुँच गया। सब जीव-जंतु भागकर इधर-उधर छिप गए, केवल एक शिशु, खरगोश साँप की पकड़ में आ गया। निगलने के प्रयास में साँप ने उसका आधा पिछला शरीर तो मुँह में दबा रखा था, शेष आधा जो बाहर था, उससे चीं-चीं का स्वर भी इतना तीव्र नहीं निकल सकता था कि किसी को स्पष्ट सुनाई दे सके। नीलकंठ दूर ऊपर झूले में सो रहा था। उसी के चौकन्ने कानों ने उस मंद स्वर की व्यथा पहचानी
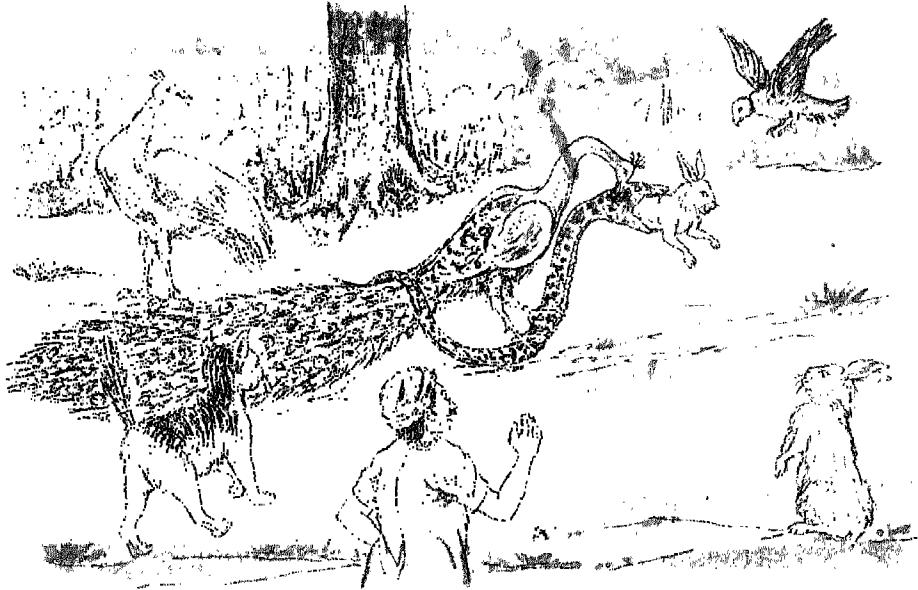
और वह पूँछ-पंख समेटकर सर से एक झपट्टे में नीचे आ गया । संभवतः अपनी सहज चेतना से ही उसने समझ लिया होगा कि साँप के फन पर चोंच मारने से खरगोश भी घायल हो सकता है।

उसने साँप को फन के पास पंजों से दबाया और फिर चोंच से इतने प्रहार किए कि वह अधमरा हो गया। पकड़ ढीली पड़ते ही खरगोश का बच्चा मुख से निकल तो आया, परंतु निश्चेष्ट-सा वहीं पड़ा रहा।

राधा ने सहायता देने की आवश्यकता नहीं समझी, परंतु अपनी मंद केका से किसी असामान्य घटना की सूचना सब ओर प्रसारित कर दी। माली पहुँचा, फिर हम सब पहुँचे। नीलकंठ जब साँप के दो खंड कर चुका, तब उस शिशु खरगोश के पास गया और रात भर उसे पंखों के नीचे रखे उष्णता देता रहा।

कार्तिकेय ने अपने युद्ध-वाहन के लिए मयूर को क्यों चुना होगा, यह उस पक्षी का रूप और स्वभाव देखकर समझ में आ जाता है।

मयूर कलाप्रिय वीर पक्षी है, हिंसक-मात्र नहीं। इसी से उसे बाज़, चील आदि की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता, जिनका जीवन ही क्रूर कर्म है।

नीलकंठ में उसकी जातिगत विशेषताएँ तो थीं ही, उनका मानवीकरण भी हो गया था। मेघों की साँवली छाया में अपने इंद्रधनुष के गुच्छे जैसे पंखों को मंडलाकार बनाकर जब वह नाचता था, तब उस नृत्य में एक सहजात लय-ताल रहता था। आगे-पीछे, दाहिने-बाएँ क्रम से घूमकर वह किसी अलक्ष्य सम पर ठहर-ठहर जाता था।

राधा नीलकंठ के समान नहीं नाच सकती थी, परंतु उसकी गति में भी एक छंद रहता था। वह नृत्यमग्न नीलकंठ की दाहिनी ओर के पंख को छूती हुई बाईं ओर निकल आती थी और बाएँ पंख को स्पर्श कर दाहिनी ओर। इस प्रकार उसकी परिक्रमा में भी एक पूरक ताल-परिचय मिलता था। नीलकंठ ने कैसे समझ लिया कि उसका नृत्य मुझे बहुत भाता है, यह तो नहीं बताया जा सकता; परंतु अचानक एक दिन वह मेरे जालीघर के पास पहुँचते ही, अपने झूले से उतरकर नीचे आ गया और पंखों का सतरंगी मंडलाकार छाता तानकर नृत्य की भंगिमा में खड़ा हो गया। तब से यह नृत्य-भंगिमा नित्य का क्रम बन गई। प्रायः मेरे साथ कोई-न-कोई देशी-विदेशी अतिथि भी पहुँच जाता था और नीलकंठ की मुद्रा को अपने प्रति सम्मानपूर्वक समझकर विस्मयाभिभूत हो उठता था। कई विदेशी महिलाओं ने उसे 'परफैक्ट जेंटिलमैन' की उपाधि दे डाली। जिस नुकीली पैनी चोंच से वह भयंकर विषधर को खंड-खंड कर

सकता था, उसी से मेरी हथेली पर रखे हुए भुने चने ऐसी कोमलता से हौले-हौले उठाकर खाता था कि हँसी भी आती थी और विस्मय भी होता था। फलों के वृक्षों से अधिक उसे पुष्पित और पल्लवित वृक्ष भाते थे।

वसंत में जब आम के वृक्ष सुनहली मंजरियों से लद जाते थे, अशोक नए लाल पल्लवों से ढँक जाता था, तब जालीघर में वह इतना अस्थिर हो उठता कि उसे बाहर छोड़ देना पड़ता।

नीलकंठ और राधा की सबसे प्रिय ऋतु तो वर्षा ही थी। मेघों के उमड़ आने से पहले ही वे हवा में उसकी सजल आहट पा लेते थे और तब उनकी मंद केका की गूँज-अनुगूँज तीव्र से तीव्रतर होती हुई मानो बूँदों के उतरने के

लिए सोपान-पंक्ति बनने लगती थी। मेघ के गर्जन के ताल पर ही उसके तन्मय नृत्य का आरंभ होता। और फिर मेघ जितना अधिक गरजता, बिजली जितनी अधिक चमकती, बूँदों की रिम-झिमाहट जितनी तीव्र होती जाती, नीलकंठ के नृत्य का वेग उतना ही अधिक बढ़ता जाता और उसकी केका का स्वर उतना ही मंद्र से मंद्रतर होता जाता। वर्षा के थम जाने पर वह दाहिने पंजे पर दाहिना पंख और बाएँ पर बायाँ पंख फैलाकर सुखाता। कभी-कभी वे दोनों एक-दूसरे के पंखों से टपकनेवाली बूँदों को चोंच से पी-पी कर पंखों का गीलापन दूर करते रहते।

इस आनंदोत्सव की रागिनी में बेमेल स्वर कैसे बज उठा, यह भी एक करुण-कथा है।

एक दिन मुझे किसी कार्य से नखासकोने से निकलना पड़ा और बड़े मियाँ ने पहले के समान कार को रोक लिया। इस बार किसी पिंजड़े की ओर नहीं देखूँगी, यह संकल्प करके मैंने बड़े मियाँ की विरल दाढ़ी और सफ़ेद डोरे से कान में बँधी ऐनक को ही अपने ध्यान का केंद्र बनाया। पर बड़े मियाँ के पैरों के पास जो मोरनी पड़ी थी उसे अनदेखा करना कठिन था। मोरनी राधा के समान ही थी। उसके मूँज से बँधे दोनों पंजों की उँगलियाँ टूटकर इस प्रकार एकत्र हो गई थीं कि वह खड़ी ही नहीं हो सकती थी।

बड़े मियाँ की भाषण-मेल फिर दौड़ने लगी – "देखिए गुरुजी, कमबख्त चिड़ीमार ने बेचारी का क्या हाल किया है। ऐसे कभी चिड़िया पकड़ी जाती है! आप न आई होतीं तो मैं उसी के सिर इसे पटक देता। पर आपसे भी यह अधमरी मोरनी ले जाने को कैसे कहूँ!"

सारांश यह कि सात रुपए देकर मैं उसे अगली सीट पर रखवाकर घर ले आई और एक बार फिर मेरे पढ़ने-लिखने का कमरा अस्पताल बना। पंजों की मरहमपट्टी और देखभाल करने पर वह महीने भर में अच्छी हो गई। उँगलियाँ वैसी ही टेढ़ी-मेढ़ी रहीं, परंतु वह ठूँठ जैसे पंजों पर डगमगाती हुई चलने लगी। तब उसे जालीघर में पहुँचाया गया और नाम रखा गया कुब्जा। नाम के अनुरूप वह स्वभाव से भी कुब्जा ही प्रमाणित हुई। अब तक नीलकंठ और राधा साथ रहते थे। अब कुब्जा उन्हें साथ देखते ही मारने दौड़ती। चोंच से मार-मारकर उसने राधा की कलगी नोच डाली, पंख नोच डाले। कठिनाई यह थी कि नीलकंठ उससे दूर भागता था और वह उसके साथ रहना चाहती थी। न किसी जीव-जंतु से उसकी मित्रता थी, न वह किसी को नीलकंठ के समीप आने देना चाहती थी। उसी बीच राधा ने दो अंडे दिए, जिनको वह पंखों में छिपाए बैठी रहती थी। पता चलते ही कुब्जा ने चोंच मार-मार कर राधा को ढकेल दिया और फिर अंडे फोड़कर ठूँठ जैसे पैरों से सब ओर छितरा दिए।

इस कलह-कोलाहल से और उससे भी अधिक राधा की दूरी से बेचारे नीलकंठ की प्रसन्नता का अंत हो गया।

कई बार वह जाली के घर से निकल भागा। एक बार कई दिन भूखा-प्यासा आम की शाखाओं में छिपा बैठा रहा, जहाँ से बहुत पुचकार कर मैंने उतारा। एक बार मेरी खिड़की के शेड पर छिपा रहा।

मेरे दाना देने जाने पर वह सदा की भाँति पंखों को मंडलाकार बनाकर खड़ा हो जाता था, पर उसकी चाल में थकावट और आँखों में एक शून्यता रहती थी। अपनी अनुभवहीनता के कारण ही मैं आशा करती रही कि थोड़े दिन बाद सबमें मेल हो जाएगा। अंत में तीन-चार मास के उपरांत एक दिन सवेरे

जाकर देखा कि नीलकंठ पूँछ-पंख फैलाए धरती पर उसी प्रकार बैठा हुआ है, जैसे खरगोश के बच्चों को पंखों में छिपाकर बैठता था। मेरे पुकारने पर भी उसके न उठने पर संदेह हुआ।

वास्तव में नीलकंठ मर गया था। 'क्यों' का उत्तर तो अब तक नहीं मिल सका है। न उसे कोई बीमारी हुई, न उसके रंग-बिरंगे फूलों के स्तबक जैसे शरीर पर किसी चोट का चिह्न मिला। मैं अपने शाल में लपेटकर उसे संगम ले गई। जब गंगा की बीच धार में उसे प्रवाहित किया गया, तब उसके पंखों की चंद्रिकाओं से बिंबित-प्रतिबिंबित होकर गंगा का चौड़ा पाट एक विशाल मयूर के समान तरंगित हो उठा। नीलकंठ के न रहने पर राधा तो निश्चेष्ट-सी कई दिन कोने में बैठी रही। वह कई बार भागकर लौट आया था, अतः वह प्रतीक्षा के भाव से द्वार पर दृष्टि लगाए रहती थी। पर कुब्जा ने कोलाहल के साथ खोज-ढूँढ़ आरंभ की। खोज के क्रम में वह प्रायः जाली का दरवाज़ा खुलते ही बाहर निकल आती थी और आम, अशोक, कचनार आदि की शाखाओं में नीलकंठ को ढूँढ़ती रहती थी। एक दिन वह आम से उतरी ही थी कि कजली (अल्सेशियन कुत्ती) सामने पड़ गई। स्वभाव के अनुसार उसने कजली पर भी चोंच से प्रहार किया। परिणामतः कजली के दो दाँत उसकी गरदन पर लग गए। इस बार उसका कलह-कोलाहल और द्वेष-प्रेम भरा जीवन बचाया न जा सका। परंतु इन तीन पक्षियों ने मुझे पक्षी-प्रकृति की विभिन्नता का जो परिचय दिया है, वह मेरे लिए विशेष महत्त्व रखता है।

राधा अब प्रतीक्षा में ही दुकेली है। आषाढ़ में जब आकाश मेघाच्छन्न हो जाता है तब वह कभी ऊँचे झूले पर और कभी अशोक की डाल पर अपनी केका को तीव्रतर करके नीलकंठ को बुलाती रहती है।

— महादेवी वर्मा

प्रश्न-अभ्यास

बोध और विचार

(क) मौखिक

1. महादेवीजी ने ड्राइवर को किस ओर चलने का आदेश दिया और क्यों?
2. लेखिका ने बड़े मियाँ को बोलते-बोलते क्यों रोक दिया?
3. लेखिका को अपने कमरे का दरवाज़ा क्यों बंद रखना पड़ता था?
4. मोर-मोरनी के नामकरण का क्या आधार था?
5. विदेशी महिलाएँ नीलकंठ को 'परफैक्ट जेंटिलमैन' क्यों कहती थीं?

(ख) लिखित

1. लेखिका के चिड़ियाघर में भूचाल जैसी स्थिति कब पैदा हो गई थी? क्यों?
2. नीलकंठ के रूप-रंग का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए। इस दृष्टि से राधा कहाँ तक भिन्न थी?
3. नीलकंठ चिड़ियाघर के अन्य जीव-जंतुओं का मित्र भी था और संरक्षक भी। सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
4. कुब्जा राधा से क्यों द्वेष रखती थी? वह उसके प्रति अपना द्वेष-भाव किस प्रकार व्यक्त करती थी?
5. नीलकंठ का सुखमय जीवन करुण-कथा में कैसे बदल गया?

भाषा-अध्ययन

1. निम्नलिखित शब्दों में संधि-विच्छेद कीजिए :

नवागंतुक	मंडलाकार	निश्चेष्ट
आनंदोत्सव	विस्मयाभिभूत	आविर्भूत
मेघाच्छन्न	उद्दीप्त	

2. निम्नलिखित समस्त पदों का विग्रह करते हुए समास का नाम भी लिखिए :

पक्षी-शावक	करुण-कथा	लय-ताल
धूप-छाँह	श्याम-श्वेत	चंचु-प्रहार
नीलकंठ	आर्तक्रंदन	युद्धवाहन

3. निम्नलिखित शब्दों से मूल शब्द और प्रत्यय अलग कीजिए :

स्वाभाविक	दुर्बलता	रिमझिमाहट	पुष्पित
चमत्कारिक	क्रोधित	मानवीकरण	विदेशी
सुनहला	परिणामतः		

4. निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए :

(क) पूँछ लंबी हुई और उसके पंखों पर चंद्रिकाओं के इंद्रधनुषी रंग उद्दीप्त हो उठे।

(ख) केवल एक शिशु खरगोश साँप की पकड़ में आ गया।

(ग) कई विदेशी महिलाओं ने उसे 'परफैक्ट जेंटिलमैन' की उपाधि दे डाली।

(घ) बड़े मियाँ ने पहले के समान कार को रोक लिया।

उपर्युक्त चारों वाक्यों में रेखांकित क्रियाएँ संयुक्त क्रियाएँ हैं। इनमें 'हो, आ, दे, रोक' ये मुख्य क्रियाएँ हैं और उठे, गया, डाली, लिया ये रंजक क्रियाएँ हैं। ये रंजक क्रियाएँ क्रमशः आकस्मिकता, पूर्णता और अनायासता का अर्थ देती हैं।

उठना, जाना, डालना, लेना रंजक क्रियाओं से बननेवाली संयुक्त क्रियाओं से चार वाक्य बनाइए।

5. निम्नलिखित वाक्यों में उदाहरणों के अनुसार यथास्थान उपयुक्त विराम चिह्न लगाइए :

उदाहरण 1. उन्होंने कहना आरंभ किया सलाम गुरुजी

⟹ उन्होंने कहना आरंभ किया, "सलाम गुरुजी!"

2. आम, अशोक, कचनार आदि की शाखाओं में नीलकंठ को ढूँढ़ती रहती थी

⟹ आम, अशोक, कचनार आदि की शाखाओं में नीलकंठ को ढूँढ़ती रहती थी।

(क) उन्हें रोककर पूछा मोर के बच्चे हैं कहाँ

(ख) सब जीव जंतु भागकर इधर उधर छिप गए

(ग) चोंच से मार-मारकर उसने राधा की कलगी नोच डाली, पंख नोच डाले
(घ) न उसे कोई बीमारी हुई न उसके शरीर पर किसी चोट का चिह्न मिला
(ङ) मयूर को बाज़ चील आदि की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता जिनका जीवन ही क्रूर कर्म है

योग्यता-विस्तार

अपने परिवार, मित्रों अथवा अपने आस-पड़ोस द्वारा पालित किसी पशु या पक्षी के रूप-रंग, स्वभाव, व्यवहार तथा क्रियाकलापों का अवलोकन कीजिए और उसके आधार पर उसका शब्द-चित्र खींचिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

अनुसरण - पीछे-पीछे चलना
संकीर्ण - सँकरा, छोटा
आविर्भूत - प्रकट
नवागंतुक - नया-नया आया हुआ, नया अतिथि
मार्जारी - मादा बिल्ली
इल्ली - तितली के बच्चों का अंडे से निकलने के बाद का रूप
बंकिम - टेढ़ा
इंद्रनील - नीलकांत-नीलम
द्युति - चमक
दीप्त होना - चमकना
चंचु-प्रहार - चोंच द्वारा आक्रमण
आर्तक्रंदन - दर्द भरी आवाज़ में रोना
अधर - बीच में
कर्णवेध - कान छेदना

निश्चेष्ट - बिना प्रयास के
कार्तिकेय - कृत्तिका नक्षत्र में उत्पन्न शिव के पुत्र, देवताओं के सेनापति
मंजरियां - नई कोंपलें, बौर
मंद्र - गंभीर, धीमा
क्रूर कर्म - कठोर कार्य
स्तबक - गुलदस्ता, पुष्प गुच्छ
कुब्जा - कुब्बड़वाली, कंस की एक दासी जो कुबड़ी थी, श्री कृष्ण ने उसका कुब्बड़ ठीक किया
दुकेली - जो अकेली न हो
पक्षी-शावक - पक्षी के बच्चे
बारहा - बार-बार
छंद रहता-सा - गति में लय का होना
सुरम्य - मनोहर
मूँजी - कंजूस
केका - मोर की बोली

19. उद्यमी नर

(प्रस्तुत कविता में मनुष्य के श्रम और पुरुषार्थ की महत्ता स्थापित की गई है। कवि का विचार है कि इस जीवन में मनुष्य ने जो कुछ सुख-साधन प्राप्त किए हैं, वे उसके श्रम और उद्यम के बल पर ही संभव हुए हैं। इनकी प्राप्ति में भाग्य का कोई हाथ नहीं है। प्रकृति उद्यमी मनुष्य से यह अपेक्षा करती है कि वह अपने उचित श्रम से विजयी बने और प्रकृति उसे सुखद परिणाम प्रदान करे।)

इतना कुछ है भरा विभव का
    कोष प्रकृति के भीतर,
निज इच्छित सुख-भोग सहज
    ही पा सकते नारी-नर।

सब हो सकते तुष्ट, एक-सा
    सब सुख पा सकते हैं,
चाहें तो, पल में धरती को
    स्वर्ग बना सकते हैं।

छिपा दिए सब तत्त्व आवरण
    के नीचे ईश्वर ने,
संघर्षों से खोज निकाला
    उन्हें उद्यमी नर ने।
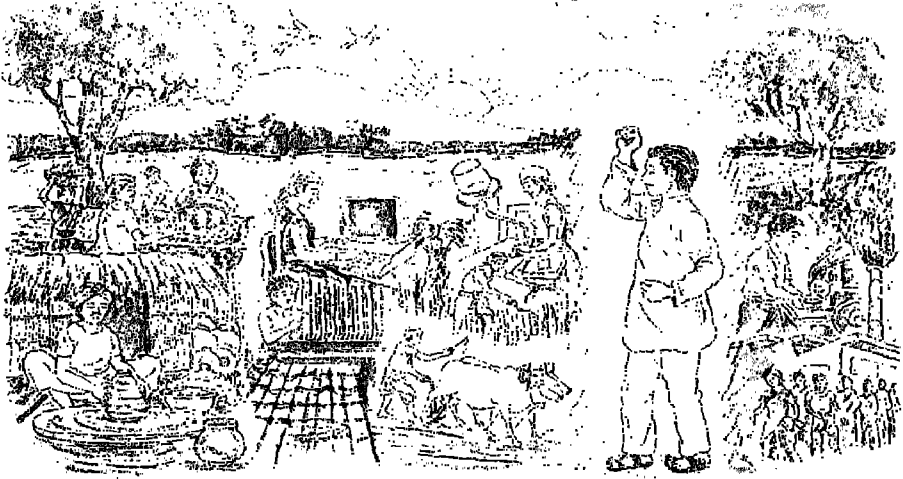
ब्रह्मा से कुछ लिखा भाग्य में
मनुज नहीं लाया है,
अपना सुख उसने अपने
भुजबल से ही पाया है।

प्रकृति नहीं डरकर झुकती है
कभी भाग्य के बल से,
सदा हारती वह मनुष्य के
उद्यम से; श्रमजल से।

ब्रह्मा का अभिलेख पढ़ा
करते निरुद्यमी प्राणी,
धोते वीर कु-अंक भाल का
बहा भ्रुवों से पानी।

भाग्यवाद आवरण पाप का
और शस्त्र शोषण का,
जिससे रखता दबा एक जन
भाग दूसरे जन का।

पूछो किसी भाग्यवादी से,
यदि विधि-अंक प्रबल है,
पद पर क्यों देती न स्वयं
वसुधा निज रतन उगल है?

उपजाता क्यों विभव प्रकृति को
सींच-सींच वह जल से?
क्यों न उठा लेता निज संचित
कोष भाग्य के बल से?

एक मनुज संचित करता है
अर्थ पाप के बल से,
और भोगता उसे दूसरा
भाग्यवाद के छल से।

नर-समाज का भाग्य एक है,
वह श्रम, वह भुज-बल है,
जिसके सम्मुख झुकी हुई
पृथिवी, विनीत नभ-तल है।

जिसने श्रम-जल दिया, उसे
पीछे मत रह जाने दो,
विजित प्रकृति से सबसे पहले
उसको सुख पाने दो।

— रामधारी सिंह 'दिनकर'

प्रश्न-अभ्यास

बोध और सराहना

(क) मौखिक

1. प्रकृति के छिपे खज़ाने को कौन प्राप्त कर सकता है?
2. प्रकृति किस प्रकार के मनुष्य को विजय प्रदान करती है?
3. कवि के अनुसार मानवी दुनिया का भाग्य कैसे बनता है?
4. भाग्य के भरोसे कौन लोग रहते हैं?

(ख) लिखित

1. धरती को स्वर्ग कैसे बनाया जा सकता है?
2. भाग्यवाद को पाप का आवरण और शोषण का हथियार क्यों कहा है?

3. भाग्यवाद के विरोध में कवि ने क्या तर्क दिए हैं? आप उनसे कहाँ तक सहमत हैं?
4. कवि की दृष्टि में सबसे पहले सुख पाने का अधिकारी कौन है?
5. निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए :
   (क) छिपा दिए सब तत्त्व आवरण के नीचे ईश्वर ने।
   (ख) ब्रह्मा का अभिलेख पढ़ा करते निरुद्यमी प्राणी।

योग्यता-विस्तार

1. "कर्म नहीं, सर्वत्र भाग्य ही फलता है" इस विषय पर कक्षा में एक वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन कीजिए।
2. जैनेंद्र का 'भाग्य और पुरुषार्थ' निबंध खोजकर पढ़िए और उसकी कक्षा में चर्चा कीजिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

विभव - वैभव, धन-संपदा
कोष - भंडार
तुष्ट - संतुष्ट
आवरण - परदा, ढकने का वस्त्र, आच्छादन
श्रमजल - पसीना, मेहनत का पसीना
अभिलेख - लिखा हुआ, खुदा हुआ
कु-अंक - दुर्भाग्य
भ्रुवों - भौंहों
विधि-अंक - भाग्य का लिखा हुआ
संचित - एकत्रित
अर्थ - धन, सुख-सुविधा
विजित - जिसे जीत लिया गया हो, पराजित
निरुद्यमी - अकर्मण्य

20. वापसी

(भारत के विभाजन के पश्चात अनेक भारतवासी मुसलमान पाकिस्तान चले गए थे, किंतु उनके मन के किसी न किसी कोने में अपनी जन्मभूमि के प्रति लगाव बना रहा। प्रस्तुत एकांकी में पाकिस्तान में बसे एक ऐसे ही व्यक्ति असगर की मनःस्थिति का अत्यंत मार्मिक चित्रण है। असगर पाकिस्तान की छतरीधारी सेना का एक सैनिक था। उसे कश्मीर के उसी गाँव पर आक्रमण करने का आदेश मिला जहाँ उसका बचपन व्यतीत हुआ था। अपने गाँव की धरती पर कदम रखते ही उसे वहाँ बचपन में बिताए क्षणों तथा उसके साथ वहाँ के लोगों के स्नेहपूर्ण संबंधों की स्मृतियों ने घेर लिया। ऐसी स्थिति में उसके मन में अंतर्द्वंद्व उठ खड़ा हुआ कि वह अपनी जन्मभूमि को अपना दुश्मन कैसे माने। किंतु ऐसी मनःस्थिति केवल असगर की ही नहीं थी। शत्रु का जासूस मानकर उसे पकड़वानेवाला गाँव का चौधरी भी ऐसे ही अंतर्द्वंद्व से गुज़र रहा था। वह अपने मन को यह समझा नहीं पा रहा था कि उसकी गोद में खेला, उसके पुत्र का बालसखा और अपने ही देश आया असगर, देश का दुश्मन कैसे हो गया। 'वापसी' एकांकी इसी अंतर्द्वंद्व की कलात्मक अभिव्यक्ति है।)

पात्र-परिचय

असगर : भारत पर आक्रमण करने वाली शत्रु-सेना का छतरीधारी सैनिक। यह भारत-विभाजन के पूर्व कश्मीर में उसी गाँव में रहता था जिस पर आक्रमण करने का उसे आदेश मिला है।

बुनियाद : शत्रु सेना का कप्तान।

मुनीर
मकसूद
आदि : शत्रु सेना के सैनिक।

चौधरी : आक्रांत गाँव का चौधरी।

लालाजी
सरदारजी : भारतीय जन।
इंस्पेक्टर

काल : सितंबर-अक्तूबर सन् 1965।

स्थान : कश्मीर का एक गाँव।

(तोपों के गोलों की आवाज़ आ रही है। उसके धीमे होते-होते सायरन बज उठता है और उसके ऊपर हवाई जहाज़ों की आवाज़ छा जाती है। उसी के साथ विमानभेदी तोपें छूटती हैं। बहुत से नेट जहाज़ उड़ते हैं। कई क्षण के शोर के बाद शांति-सूचक सायरन बजता है। एक क्षण मौन के बाद कुछ व्यक्तियों के फुसफुसाकर बात करने की आवाज़ होती है।)

बुनियाद : मुनीर, क्या हम ठीक जगह पर आ पहुँचे हैं?
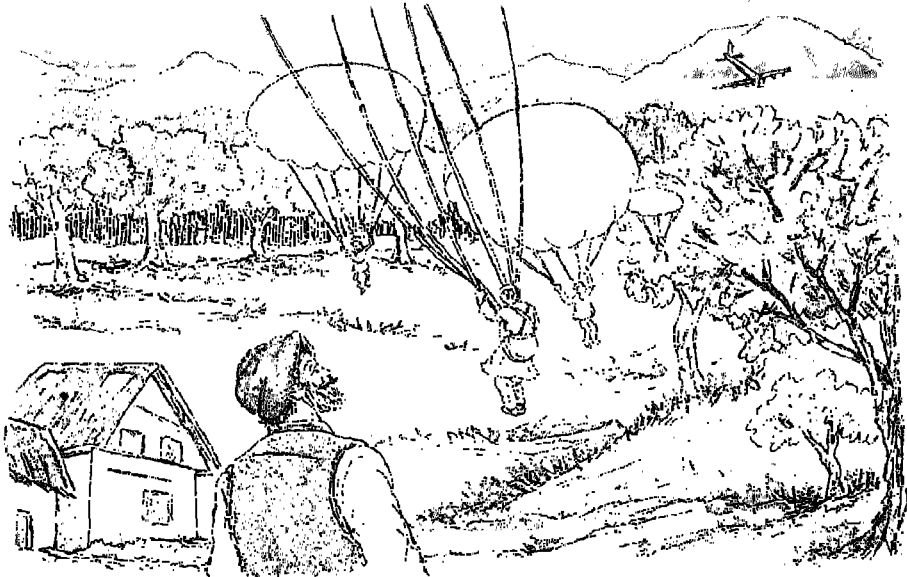
मुनीर : हाँ, कप्तान साहब! हम सही ठिकाने पर ही उतरे हैं। लेकिन हमें बहुत जल्दी छिपने का इंतज़ाम करना चाहिए। शायद चाँदनी होनेवाली है।

बुनियाद : नहीं, नहीं, अभी देर है। हमें अपने दूसरे साथियों की टोह लेनी चाहिए।

मुनीर : लेकिन छिपने का ठिकाना भी ढूँढ़ लेना चाहिए। आप तो इन सब जगहों को जानते हैं?

बुनियाद : हाँ, जानता तो हूँ, लेकिन असगर से कम। वह तो इस इलाके का रहनेवाला है। वह देखो, उधर कुछ खेत दिखाई दे रहे हैं। आओ, हम वहीं चलें। ऐसा लगता है कि सामने से हमारे दो साथी भी आ रहे हैं। आओ, जल्दी करें।

मुनीर : हाँ, हाँ, चलिए। *(धीरे-धीरे बातें करते हुए चलते हैं।)* यहाँ तो कोई नहीं दिखाई दे रहा। उधर कुछ झाड़ियाँ हैं, कहीं वे लोग वहीं तो नहीं छिप गए?

बुनियाद : हो सकता है। तुम ऐसा करो, जल्दी से वहाँ चले जाओ, नहीं-नहीं ठहरो, मैं भी चलता हूँ। तुम अपनी टोपी लगा लो, जिससे हमको कोई देखे तो समझे कि हम इंडियन सिविल डिफ़ेंस के आदमी हैं।

मुनीर : हो सकता है, किसी ने हमें उतरते हुए देख लिया हो और वे लोग इधर ही आनेवाले हों। देखो, देखो, वे कौन हैं?

बुनियाद : अरे, वे तो हमारे साथी ही हैं। असगर भी है। आओ, इधर से आओ। *(झाड़ियों के पीछे चलने की आवाज़)* तो तुम यहाँ हो

अहमद! तुमको अपना काम याद है? तुमको बहुत जल्दी ही यहाँ से निकल जाना चाहिए।

अहमद : जी हाँ, मैं और अब्दुल दोनों गाँव में जाते हैं । वहाँ हमारे जान-पहचान का एक आदमी है।

बुनियाद : तो ख़ुदा हाफ़िज़। जल्दी-से-जल्दी भारतीय जनता में पहुँचकर इस बात की कोशिश करो कि हिंदू-मुसलमानों में लड़ाई हो जाए।

अहमद : इंशाअल्लाह, ख़ुदा हाफ़िज़!

बुनियाद : ख़ुदा हाफ़िज़!

मुनीर : असगर, तुम क्या सोच रहे हो? तुम चुप क्यों हो? कहीं चोट तो नहीं लगी?

असगर : *(चौंककर)* ऐं!

बुनियाद : तुम शायद सो रहे हो? क्या तुम नहीं जानते कि इस वक्त एक-एक लमहा हमारे लिए अहम है?

असगर : जी, मैं जानता हूँ। यह भी जानता हूँ कि हवाई अड्डे पर हमला करनेवाले जहाज़ों को मुझे इशारा करना है।

मुनीर : सब सामान ठीक है न?

असगर : जी हाँ।

बुनियाद : ख़ुदा हाफ़िज़!

मुनीर : ख़ुदा हाफ़िज़!

असगर : ख़ुदा हाफ़िज़! *(एक क्षण शांति रहती है। धीरे-धीरे पदचाप उठती है, दूर होती है। आसमान में हवाई जहाज़ संघर्ष करते हैं।*

फिर शांति छा जाती है। उसी के भीतर से असगर की आवाज़ उठती है।)

कहीं भी तो रोशनी नहीं दिखाई दे रही है। लेकिन मैं हूँ कहाँ? हवाई अड्डा उस तरफ़ ही तो नहीं? हाँ, उसी तरफ़ होना चाहिए। देखूँ नक्शा। *(नक्शा खोलने की आवाज़)* हाँ, यही है। ठीक है, उस तरफ़ फ़ैक्टरी है। बुनियाद और मुनीर को वहीं जाना है। मेरे कपड़े तो ठीक हैं? हाँ, बिलकुल हिंदुस्तानी किसान के-से लगते हैं। अब्बा कहते थे कि मैं बिलकुल हिंदू जाट की तरह दिखाई देता हूँ। हिंदू जाट, मुसलमान जाट, आखिर दोनों जाट ही तो हैं। *(चौंककर)* यह मैं क्या सोचने लगा? यह कुफ़्र है। हमारे मौलवियों ने आज़ादी की इस लड़ाई को जिहाद का फ़तवा दिया है। जिहाद के इस मौके पर मैं भी अपना फ़र्ज़ पूरा करूँगा। *(चौंककर)* यह कौन आ रहा है? ओह! *(पुकारकर)* मकसूद, तुम कहाँ थे?

मकसूद : मंज़िल से ज़रा दूर जा उतरा था। वहाँ छिपने का कोई ठिकाना भी तो न था। ख़ुदा का शुक्र है कि अँधेरे की वजह से यहाँ तक सही सलामत पहुँच गया।

असगर : मैं समझता हूँ कि हम यहीं रहें तो अच्छा है। यहाँ से हम अपने जहाज़ों को आसानी से इशारा कर सकते हैं। लोगों को हमारे यहाँ छिपने का कोई शक भी नहीं होगा। *(क्षणिक सन्नाटा)* लेकिन मकसूद....

मकसूद : हाँ, चुप क्यों हो गए? कहो न क्या कहते हो?

असगर : कुछ नहीं ऐसे ही एक ख्याल आ गया था। सोचता था कि इतनी जल्दी हमको बुलाया और पहले कुछ बतलाए बिना यहाँ भेज दिया। सिर्फ़ आधा घंटा पहले ही तो उन्होंने हमें सब कुछ बताया था।

मकसूद : तो क्या हुआ? यह आज़ादी की लड़ाई है। हिंदुस्तान को हमें हमेशा के लिए सबक सिखाना है। उसकी बेवकूफ़ी की हरकतें हम कब तक सहते रहेंगे?

असगर : ठीक है, ठीक है, मैं यह नहीं कहता।

मकसूद : तो फिर क्या कहते हो? तुम्हारी तबीयत तो ठीक है?

असगर : बिलकुल ठीक है। तुम फ़िक्र मत करो। आराम से अपना कोट फैलाकर बैठ जाओ। अपने हथियारों का ध्यान रखना। मैं तब तक ज़रा आसपास घूम लूँ।

मकसूद : तुम यहाँ से जा तो नहीं रहे?

असगर : बस इन झाड़ियों के पीछे-पीछे उस नाले की ढलान तक जाऊँगा। हाँ, तुमने एक बात देखी?

मकसूद : क्या?

असगर : ऐसा लगता है कि यहाँ के किसानों को किसी बात की फ़िक्र नहीं है। वे अपने खेतों को हमेशा की तरह जोत-बो रहे हैं। उधर देखो, वे जुते हुए खेत उधर वह ईख और मकई की फ़सल।

मकसूद : वह देखने की मुझे फ़ुरसत नहीं है। अँधेरे में यह सब कोई कैसे देख सकता है? मैं तो बस उस वक्त की राह देख रहा हूँ, जब

हमारे हवाई जहाज़ों की आवाज़ कानों में पड़ेगी और मैं उन्हें इशारा कर सकूँगा।

असगर : वह तो करना ही है। इस बार इनको सबक सिखाना ही है। लेकिन तुमने देखा, आज आसमान में हमारी और उनकी लड़ाई कितनी तेज़ हुई। समझ में नहीं आता, उनके ये छोटे-छोटे पिद्दी से नेट कैसे हमारे बड़े-बड़े सुपरसॉनिक जेट हवाई जहाज़ों को परेशान कर देते हैं? निडर और कैसे हिम्मतवाले हैं उनके हवाबाज़!

मकसूद : यह तुम फिर क्या सोचने लगे? तुम्हारे दिमाग में ऐसे बुरे-बुरे ख्याल आते ही क्यों हैं? क्या तुमने नहीं सुना कि हमने उनके कितने जहाज़ गिरा दिए हैं? उनके कितने शहर आग की लपटों में झुलस रहे हैं?

असगर : अच्छा, मैं अभी आता हूँ। होशियार रहना।
(क्षणिक सन्नाटा, दूर जाती और फिर पास आती हुई पदचाप)....हूँ, तो जीत हमारी हो रही है । हाँ, कहा तो यही जा रहा है और यूँ जीत होनी भी चाहिए। इन लोगों ने परेशान कर दिया है। इस बार इनका सिर कुचल दिया जाएगा। भला ये कश्मीर पर अपना दावा कैसे जता सकते हैं? फिर भी.......हूँ.....

असगर : *(चौंककर)* अरे, यह क्या है?...... ओह! यह तो वह पुराना खंडहर है। धुँधलके में कैसा नज़र आता है। *(पास आकर)* वही है। आज भी वैसे-का-वैसा खड़ा है। लेकिन शायद कोई इसकी देखभाल नहीं करता। सब कुछ खत्म हो जाता है – अमन भी,

जंग भी। यह जंग भी खत्म हो जाएगी। चलूँ ज़रा इसके भीतर तो देखूँ। बचपन में घर से भागकर मैं यहीं आकर तो छिपता था और अब्बा परेशान होते रहते थे। और फिर आखिर यहीं से पकड़कर ले जाते थे। इसी के पास से तो वह गाँव का रास्ता गया है। वह दूर आसमान में जो साए की तरह दिखाई दे रही है वे मस्जिद की मीनारें ही तो हैं। हाँ, वही हैं। और यह इधर क्या है? चौपाल! शायद अभी बनी है, और उसके चारों तरफ़ ये ऊँचे-ऊँचे पेड़! इन पेड़ों के पास वही तो रहट है। रहट का वह मीठा-मीठा ठंडा पानी, मन करता है खूब पीऊँ – शायद वहीं कहीं नया नाला भी है। चलूँ, ज़रा देखूँ तो सही। *(सहसा चौंककर)* नहीं, नहीं, मुझे गाँव के पास नहीं जाना चाहिए। उधर चलना चाहिए। पर क्यों, क्या अब वहाँ नहीं जा सकता?.... नहीं, नहीं, यह सब कमज़ोरी है।

यह सब मेरे दिमाग में क्या आ घुसा? यह ज़िंदगी-मौत का सवाल है, वतन का सवाल है। मेरा प्यारा वतन, मेरा प्यारा पाकिस्तान, पाकिस्तान ..... *(क्षणिक शांति)* लेकिन क्या सचमुच हमने पाकिस्तान चाहा था ..... क्या सचमुच? ना, ना, हमने तो नहीं चाहा, इन गाँवों के रहने वाले मुसलमानों ने तो कभी मुस्लिम लीग का साथ नहीं दिया। इसी धरती पर हमारे बड़े पैदा हुए । इसी धरती की गोद में वे सो गए। उनके मन में कभी यहाँ से जाने का ख्याल आया ही नहीं। *(चौंककर)* लेकिन मैं यह क्या

सोचने लगा? मैं यह सब नहीं सोचूँगा। यह शैतान का काम है, यह गुनाह है। *(क्षणिक सन्नाटा, तेज़-तेज़ चलने की आवाज़ जिसमें गहरी साँस खींचने की आवाज़ मिल जाती है । फिर मकसूद की आवाज़ उठती है।)*

मकसूद : असगर! असगर तुम कहाँ चले गए थे?

असगर : कहीं नहीं, बस यही देख रहा था कि ठीक जगह पर तो हैं। बेशक हम ठीक जगह पर हैं । अब काफ़ी देर तक यहीं पड़े रहना होगा।

मकसूद : और उसके बाद?

असगर : उसके बाद क्या होगा, यह सोचने का हमें कोई हक नहीं है।

मकसूद : असगर, यह क्या कह रहे हो?

असगर : क्या मैं गलत कह रहा हूँ? क्या हम भेड़-बकरियों के झुंड की तरह नहीं हैं? जिधर हाँक दिया, चल पड़े ।

मकसूद : दुश्मन की धरती पर आकर तुम्हारे दिमाग में ये कैसे ख्याल भर आए? क्या यह बगावत नहीं है? क्या तुम यहाँ पर दुश्मन को बरबाद करने की कसम खाकर नहीं आए थे?

असगर : आए हैं, लेकिन मन से नहीं। मन की आज़ादी है ही कहाँ। एक दिन यहाँ से जाने को मज़बूर हुए। आज आने को मज़बूर हुए हैं। क्या मैं कुछ गलत कह रहा हूँ?

मकसूद : *(झिझककर)* गलत तो नहीं कह रहे हो, लेकिन खाने-पीने के सामान की तो कोई कमी नहीं है। लाओ बोतल दो, मैं ज़रा पानी पीऊँगा।

असगर : *(हँसकर)* ये लो। बुझा लो अपनी प्यास। लेकिन पानी से क्या इनसान की प्यास बुझती है? उसकी प्यास बुझ सके, शायद ऐसी कोई चीज़ वह अभी तक खोज नहीं पाया है।

(सहसा कहीं दूर गोली की आवाज़ उठती है। एक मिनट बाद कुछ व्यक्तियों के बोलने की आवाज़ पास आती है।)

मकसूद : *(घबराकर)* यह क्या? ये लोग कौन हैं? ये तो इधर ही आ रहे हैं। शायद इन लोगों को पता लग गया है। जल्दी अंदर हो जाओ और साँस रोककर लेट जाओ।

असगर : या ख़ुदा, या पाक परवरदिगार! *(आवाज़ें पास आ जाती हैं।)*

चौधरी : मैंने अपनी आँखों से देखा है। जिस वक्त हमारे जवान दुश्मन के जहाज़ों पर आग बरसा रहे थे तो एक हवाई जहाज़ इधर आया था।

लालाजी : जी हाँ, मैंने भी एक जहाज़ को जलते हुए नीचे गिरते देखा है। वह इतनी तेज़ी से गिरा, जैसे आग का गोला गोता लगा रहा है।

चौधरी : पर, जिस जहाज़ को मैंने देखा था, उसमें आग नहीं लगी थी। वह इधर आया, नीचे झुका और लौटकर चला गया।

इंस्पेक्टर : हाँ, हाँ, मुझे भी यही पता लगा है कि एक जहाज़ यहाँ से ठीक-ठाक वापस चला गया।

लालाजी : उसी ने कुछ आदमियों को नीचे उतारा है।

सरदारजी : जी हाँ, मैंने अपनी आँखों से देखा है। मैंने उन आदमियों को उतरते हुए देखा है। दस-पंद्रह होंगे।

इंस्पेक्टर : लेकिन वे गए कहाँ? क्या गाँव में छिपे हैं?

सरदारजी : हो सकता है, एक-आध गाँव में भी हो। पर यहाँ काफ़ी खेत हैं। इधर वह घना जंगल है। खंडहर हैं, झाड़ियाँ हैं।

इंस्पेक्टर : तो आप सब लोग चारों तरफ़ फैल जाएँ। हथियार अपने पास रखिए। वे लोग ज़रा भी परेशान करें, तो गोली मार दें। लेकिन ज़िंदा पकड़ सकें तो बहुत ही अच्छा है।

लालाजी : हम अभी उन्हें घेर लेते हैं। आखिर बचकर कहाँ जाएँगे।

इंस्पेक्टर : चौधरी साहब, यह खेत किसका है? मुझे डर है कि खड़ी फ़सल को अभी काट डालना होगा।

चौधरी : आप इसकी बिलकुल चिंता मत कीजिए। देश के लिए हम बड़े-से-बड़े बलिदान करने को तैयार हैं। किसके हैं, यह बाद में देखा जाएगा। आप ट्रेक्टर मँगवाकर कटवा डालिए।

इंस्पेक्टर : ट्रेक्टर अभी आ रहा है । शायद वह आ भी गया है। मुझे यकीन है पैराट्रूपर यहीं कहीं छिपे हैं। आओ इधर खेतों की ओर चलें ! *(आवाजें धीरे-धीरे दूर होती हैं। क्षणिक सन्नाटे के बाद असगर की आवाज़ उभरती है।)*

असगर : आखिर इन्हें पता लग गया। थोड़ी देर में ये लोग हमको घेर लेंगे।

मकसूद : तो क्या हुआ? तुम क्या सोचकर घर से निकले थे? तुमने तो सिर और धड़ की बाज़ी लगाई थी। अब क्यों घबराते हो? अगर सिर ही देना होगा तो देंगे, ज़रूर देंगे। और अब हमारे हवाई जहाज़ भी तो आने वाले हैं। काश, वे जल्दी ही आ जाते।

असगर : *(खोया-खोया)* जब आना होगा, आ जाएँगे।

मकसूद : तुम फिर कहीं खो गए। क्या सोचने लगे?

असगर : कुछ नहीं, कुछ नहीं।

मकसूद : कुछ तो है।

असगर : क्या तुम जानते हो यह चौधरी कौन है?

मकसूद : होगा इस गाँव का कोई आदमी।

असगर : हाँ, इसी गाँव का है। मैं इसे बचपन में ताऊ कहकर पुकारता था। बिलकुल भी तो नहीं बदला। अठारह साल गुज़र गए, लेकिन इसके चेहरे पर वही रोब है, आवाज़ में वही कड़क। जब मैं सोलह वर्ष का था कितना प्यार करता था यह मुझको! जाते समय इसने कहा था, "अच्छा, जाते हो तो जाओ, लेकिन यह याद रखना कि इस गाँव में तुमको कोई तकलीफ़ नहीं थी।

काश! तुम यहीं रहते। लेकिन खैर, वक्त ही ऐसा है। रोकूँगा नहीं। लेकिन ध्यान रखना कि हम दोस्त हैं, दोस्त ही रहेंगे।" ..... उस दिन हम सब रोए थे और आज कैसी अनोखी बात है। एक बिलकुल दूसरे ही माहौल में मैं उनको देख रहा हूँ। उन्होंने कहा था हम दोस्त हैं। लेकिन आज तो हम दुश्मन हैं। सच तो यह है कि साथ रहते थे, तब भी दुश्मन माने जाते थे। अलग हैं, तब भी दुश्मन हैं। दुश्मनी का माहौल जैसे सच्चाई है, बाकी सब झूठ है। दुश्मनी का माहौल! आह! क्या यह माहौल बदल नहीं सकता, क्या हम कभी एक-दूसरे को प्यार नहीं कर सकते, क्या इनसान...

मकसूद : तुम्हें यह क्या हो रहा है, इस वक्त? होश में आओ । हमने अपने प्यारे वतन की खिदमत करने की कसम खाई है। हमें अपने वतन पर नाज़ है। ऐसे मौके पर तुम्हारे दिल और दिमाग पर यह कैसी कमज़ोरी छा रही है?

असगर : नहीं, नहीं, कमज़ोरी नहीं है। मैं बिलकुल ठीक हूँ। मैं कुछ और कर ही नहीं सकता। तुम फ़िक्र मत करो।

मकसूद : आखिर दिन डूबने लगा। बहुत जल्दी ही रात के अँधियारे में सब कुछ डूब जाएगा, सब कुछ *(ट्रेक्टर की आवाज़)* यह क्या, ट्रेक्टर? खेत कट रहे हैं। तो हमारे साथी फँस जाएँगे, या ख़ुदा! *(दूर हवाई जहाज़ के आने की आवाज़ आती है।)*

मकसूद : देखो, देखो ये किसके जहाज़ हैं? शायद हमारे हों। हाँ, हाँ हमारे ही हैं। आओ, आओ हम जल्दी से इन्हें इशारा करें।

असगर : नहीं, नहीं मैं कुछ नहीं कर सकता। मेरे हाथ काँप रहे हैं । ये निहत्थे इनसानों पर बम क्यों डालते हैं? क्यों बेकसूर, बेपनाह...

मकसूद : ये कैसी बातें करते हो? तुम गद्दार हो।

असगर : चुप रहो। उन्होंने हमारे साथ कौन-सा अच्छा सलूक किया है। ये सियासतवाले हर मुल्क में अपना उल्लू सीधा करने के लिए आपस में लड़ा करते हैं और लोगों को परेशान करते हैं। *(गोली चलने की आवाज़)* यह लो, गोली चली। शायद खेत कट जाने पर हमारे साथी घिर गए। *(बार-बार गोली चलती है।)*

मकसूद : हमें उनकी मदद के लिए चलना चाहिए।

असगर : चुप रहो, वहाँ पर जाना खतरे से खाली नहीं है।
(गोली चलती है, चीख की आवाज़ उठती है । धीरे-धीरे पास आती है।)

मकसूद : वे इधर ही आ रहे हैं, गोली चलाने के लिए।

असगर : मैं तैयार हूँ।
(आवाज़ें बिलकुल पास आ जाती हैं।)

चौधरी : इधर इंस्पेक्टर साहब। इधर भी कुछ लोग छिपे हुए हैं। हमें अफ़सोस है, हम कुल तीन आदमियों को पकड़ सके। बाकी शायद इधर छिपे हैं। आप उस खेत में देखिए, मैं इन झाड़ियों की ओर देखता हूँ।
(ट्रेक्टर चल रहा है। गोली चलती है। चीख उठती है।)

मकसूद : *(काँपकर)* कैप्टन बुनियाद और उनके साथी भी पकड़े गए। या ख़ुदा! या अल्लाह, यह क्या हो गया?

असगर : जान बचाना चाहता है, तो मेरे साथ आ।

मकसूद : नहीं-नहीं, गोली चलाओ।

असगर : रहने दे, बेवकूफ़। क्यों मौत के मुँह में जाना चाहता है। मेरे साथ आ। वह देख, इंस्पेक्टर और चौधरी इधर ही आ रहे हैं। जल्दी आ। छोड़ दे इसे।

(आवाज़ तेज़ होती है। चौधरी और इंस्पेक्टर पास आ जाते हैं।)

चौधरी : वह देखिए, उस झाड़ी में! वे भी उन्हीं में से हैं।

इंस्पेक्टर : लो, इन्होंने तो हाथ ऊपर कर दिए। इन्हें पकड़ लो।

चौधरी : *(ज़ोर से)* तुम दोनों यहाँ चले आओ। चले आओ।

असगर : *(पास आते हुए)* आ रहे हैं। *(पास आकर)* आपने मुझे पहचाना?

चौधरी : क्यों नहीं पहचाना, तुम पाकिस्तानी जासूस हो।

असगर : वह तो मैं हूँ ही, लेकिन कुछ और भी हूँ। मेरा नाम असगर है। मैं चौधरी लतीफ़ का बेटा हूँ। इसी गाँव का। पहचाना ताऊ?

चौधरी : *(परेशान होकर)* यह कैसा जाल है! ताऊ, लतीफ़, असगर! मैं किसी को नहीं जानता। तुम मुझे भुलावे में डालना चाहते हो, लेकिन....लेकिन मुझे कुछ याद आ रहा है। हाँ, हाँ तुम लतीफ़ के बेटे हो। तुम असगर हो। तुम इतने बड़े हो गए *(दृढ़ होकर)* लेकिन तुम असगर हो या लतीफ या कोई भी हो। इस वक्त दुश्मन के जासूस हो। बस तुम केवल एक कैदी हो।

असगर : जानता हूँ, ताऊ। उसकी सज़ा भुगतने के लिए तैयार हूँ। लेकिन अब मैं अपने गाँव लौट आया हूँ, अपने गाँव में। आओ मकसूद, अब कोई डर नहीं, हम अपने वतन में हैं।

चौधरी : *(कड़ककर)* इन दोनों को बाँधकर ले चलो। ये हमें भुलावे में डालना चाहते हैं। इनका विश्वास मत करो।

असगर : चलिए, हम तैयार हैं। *(जाने की पदचाप)*।

चौधरी : *(खोया-खोया)* यह क्या हो गया, समझ में नहीं आता। यह कैसा जादू है? यह सचमुच असगर है? असगर, लतीफ़ का बेटा, इस गाँव का लड़का! लतीफ़ इसी गाँव में तो रहता था। वह मेरा दोस्त था, पड़ोसी था। इसको मैंने अपनी गोद में खिलाया है। यह रामसिंह के साथ खेल-खेलकर बड़ा हुआ है और रामसिंह आज

मोर्चे पर है। यह भी तो मोर्चे पर है लेकिन यह कैसा मोर्चा है, यह तो .... दुश्मन का जासूस है और कुछ नहीं, केवल दुश्मन। *(एकदम)* नहीं, नहीं, वह सब मैं आज नहीं सोचूँगा।

इंस्पेक्टर : *(दूर से)* आइए, चौधरी साहब, उधर अब कोई नहीं है।

चौधरी : आ रहा हूँ साहब, आ रहा हूँ। *(जाते-जाते)* लेकिन असगर.... नहीं, नहीं, कोई असगर नहीं। केवल जासूस, दुश्मन, दुश्मन का जासूस। पर यह सचमुच असगर है। मैं इसे पहचानता हूँ और यह भी अपनी धरती को पहचान गया है। तभी तो वापस लौटा है .... नहीं, नहीं, ... यह सब छल है, निरा छल .... छल, लतीफ़ .... असगर .... ताऊ .... मेरी कुछ समझ में नहीं आ रहा है। एक धरती, एक आसमान, फिर भी आदमी आदमी का दुश्मन .... नहीं, नहीं *(चीखकर)* आज यह दुश्मन है .... केवल दुश्मन .... केवल जासूस और जासूस की सज़ा .... ओह, ओह यह कैसा मिलन, यह कैसी वापसी ....

(दूर पर उठती हुई गोलियों की आवाज़ में लय हो जाता है)

— विष्णु प्रभाकर

प्रश्न-अभ्यास

बोध और विचार

(क) मौखिक

1. कप्तान बुनियाद ने अहमद, असगर आदि को किस उद्देश्य से भारतीय सीमा में भेजा था?
2. बुनियाद ने मुनीर को टोपी लगा लेने के लिए क्यों कहा?
3. किसानों को खेतों को हमेशा की तरह जोतना-बोना किस बात का संकेत देता है?
4. गाँव के पास पहुँचकर असगर को अपने बचपन की क्या-क्या स्मृतियाँ घेर लेती हैं?
5. असगर अपनी सत्ता भेड़-बकरियों की भाँति क्यों मानता है?
6. इंस्पेक्टर चौधरी से फ़सल काट डालने के लिए क्यों कहता है?

(ख) लिखित

1. भारतीय हवाबाज़ों के कारनामों के बारे में असगर और मकसूद के दृष्टिकोण में क्या अंतर है और क्यों?
2. असगर एक ओर अपने बचपन के गाँव की चीज़ों को देखने के लिए ललचा उठता है और दूसरी ओर ऐसा करना अपनी कमज़ोरी भी मानता है। ऐसा क्यों?
3. "एक दिन यहाँ से जाने को मजबूर हुए। आज आने को मजबूर हुए हैं।" — असगर यहाँ से 'जाने' और 'आने' दोनों को मजबूरी क्यों मानता है?
4. "क्या सचमुच हमने पाकिस्तान चाहा था?" असगर ने ऐसा क्यों सोचा?
5. असगर को लेकर चौधरी के मन में उठते हुए अंतद्‌र्वंद्‌व पर प्रकाश डालिए।
6. आशय स्पष्ट कीजिए :
   — बुझा लो प्यास। लेकिन पानी से क्या इनसान की प्यास बुझती है?
   — एक धरती, एक आसमान, फिर भी आदमी आदमी का दुश्मन।
7. इस एकांकी के शीर्षक की सार्थकता पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।
8. एकांकी से ऐसे संवादों का चयन कीजिए जो असगर के मन की दुविधा को उजागर करते हैं।

भाषा-अध्ययन

1. इस पाठ से लिया गया निम्नलिखित संवाद अनुतान सहित पढ़िए :

   (क) मुनीर : वह उधर कुछ झाड़ियाँ हैं, कहीं वे लोग वहीं तो नहीं छिप गए?

   बुनियाद : हो सकता है।

   (ख) असगर : हाँ, तुमने एक बात देखी?

   मकसूद : क्या?

   असगर : ऐसा लगता है कि यहाँ के किसानों को किसी बात की फ़िक्र नहीं है।

   हो सकता है और **ऐसा लगता है** का प्रयोग करते हुए दो संवाद लिखिए।

2. नीचे दिए शब्दों में से पुनरुक्त शब्द चुनिए :

   पीछे-पीछे, ऊँचे-ऊँचे, ठीक-ठाक, लेकिन-लेकिन, उलटा-पुलटा, खेल-खेल, हक्का-बक्का।

3. अरबी-फ़ारसी से आगत उपसर्ग 'अभाव' और 'के बिना' का अर्थ देता है; जैसे – बेकसूर, बेपरवाह। इसी प्रकार हिंदी 'नि' उपसर्ग भी 'के बिना' का अर्थ देता है; जैसे – निहत्था। 'बे' और 'नि' उपसर्गों से बनने वाले दो-दो शब्द लिखिए।

4. पाठ में आए निम्नलिखित प्रयोगों को देखिए :

   (क) ना, ना, हमने तो नहीं चाहा।

   (ख) देखो, देखो, वे कौन हैं?

   उपर्युक्त वाक्यों में 'ना' तथा 'देखो' का दो बार प्रयोग हुआ है। इस प्रकार का प्रयोग कही गई बात पर बल देने के लिए होता है।

   इस पाठ में आए दो अन्य वाक्य चुनकर लिखिए, जिनमें कही गई बात पर बल देने के लिए एक ही शब्द का दो बार प्रयोग हुआ है।

5. निम्नलिखित शब्दों में से भाववाचक संज्ञाएँ छाँटिए –

   फ़सल, बेवकूफ़ी, कमज़ोरी, झाड़ी, परेशानी, बचपन, जासूस, बलिदान।

6. उदाहरण के अनुसार निम्नलिखित वाक्यों को निषेधात्मक और संदेहबोधक वाक्यों में बदलिए :

   उदाहरण : हमें अपने दूसरे साथियों की टोह लेनी चाहिए।

   1. हमें अपने दूसरे साथियों की टोह नहीं लेनी चाहिए। (निषेधात्मक)
   2. शायद हमें अपने दूसरे साथियों की टोह लेनी हो। (संदेहबोधक)

(क) हम सही ठिकाने पर उतरे हैं।
(ख) मैंने उन आदमियों को उतरते हुए देखा है।
(ग) हमको उनकी मदद के लिए चलना चाहिए।
(घ) तुमको यहाँ से निकलना चाहिए।

योग्यता-विस्तार

1. इस एकांकी का अभिनय विद्यालय के रंगमंच पर कीजिए।
2. भारत-पाक विभाजन पर अनेक कहानियाँ लिखी गई हैं; जैसे – पानी और पुल (महीप सिंह), सिक्का बदल गया (कृष्णा सोबती), मलबे का मालिक (मोहन राकेश), टोबा टेकसिंह (सआदत हसन मंटो)। इन्हें पढ़िए और किसी एक पर कक्षा में चर्चा कीजिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

आक्रांत - जिस पर आक्रमण किया गया हो
इंशाअल्लाह - अगर ईश्वर ने चाहा, ईश्वरेच्छा
ख़ुदा हाफ़िज़ - ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे
लमहा - पल, क्षण
अहम - महत्त्वपूर्ण
कुफ़्र - कृतघ्नता
पिद्दी - बहुत ही तुच्छ
सबक सिखाना - ठीक करना, पाठ पढ़ाना
हवाबाज़ - विमान चालक
सिर कुचल देना - नष्ट करना
अमन - सुख-शांति
जंग - लड़ाई, युद्ध
गुनाह - कसूर, पाप

बगावत	-	विद्रोह
पाक	-	पवित्र
परवरदिगार	-	पालन-पोषण करने वाला
आग बरसाना	-	गोली-बारी करना
पैराट्रूपर	-	छाताधारी सैनिक
सिर और धड़ की बाज़ी लगाना	-	जी-जान से जुट जाना, बलिदान का संकल्प करना
सिर देना	-	प्राण निछावर करना, जान देना
खिदमत	-	सेवा
नाज़	-	गर्व
बेपनाह	-	असुरक्षित, बेसहारा
सियासत	-	राजनीति
अपना उल्लू सीधा करना	-	स्वार्थ साधना

21. तीर्थनद ब्रह्मपुत्र

(प्रस्तुत पाठ में लेखक ने उत्तर-पूर्वांचल में देवतुल्य पूजे जानेवाले नद ब्रह्मपुत्र की विकास यात्रा का वर्णन किया है। यह कभी विष्णुरूप है तो कभी प्रलयंकर शिव के समान – अपनी कृपा और कोप दोनों ही रूपों का दर्शन कराने वाला। यह इस प्रदेश की सभ्यता और संस्कृति का आधार है और संवृद्धि का संवाहक भी। इस नद ने उत्तर-पूर्वांचल का भूगोल रचा है। इस निबंध में लेखक ने इसके तटवर्ती स्थलों की भौतिक-सामाजिक-सांस्कृतिक प्रगति को रेखांकित तो किया ही है, साथ ही इससे जुड़े धार्मिक-पौराणिक आख्यानों का उल्लेख करते हुए इसके तटों को महामिलनमय तीर्थ कहा है।)

ब्रह्मपुत्र के बिना आप उत्तर-पूर्वांचल के राज्यों की कल्पना नहीं कर सकते। भारत के इन सुरम्य प्रदेशों का व्यक्तित्व अधूरा रह जाता यदि यहाँ ब्रह्मपुत्र की तीव्र धार न बही होती। ब्रह्मपुत्र को इस क्षेत्र में देवता की तरह पूजा जाता है। अनेक नदियाँ जहाँ देवियाँ हैं, माताएँ हैं, बहनें या बेटियाँ हैं, ब्रह्मपुत्र वहाँ देव है और पुत्र भी। भारत की नदियों में यह पुरुषवाची नदी है। इसलिए इसे 'नद' कहा जाता है। यह अपने आकार-प्रकार और शील-स्वभाव में ऊपर शांत पर नीचे विक्षुब्ध, देखने में सहज पर प्रलयंकर है।

ब्रह्मपुत्र इस प्रदेश की भू-आकृति का निर्माता, संस्कृति का जनक और भौतिक समृद्धि का संवाहक है। इसके तटवासियों का सर्वस्व यदि किसी एक शक्ति में निहित है तो वह है ब्रह्मपुत्र की शक्ति। इस विशाल अंचल में यह अपने लंबे परिवार की सहायक नदियों को साथ लेकर अज्ञातकाल से बहता आ रहा है। इसकी कृपा से यहाँ जीवन है और कोप से संहार।
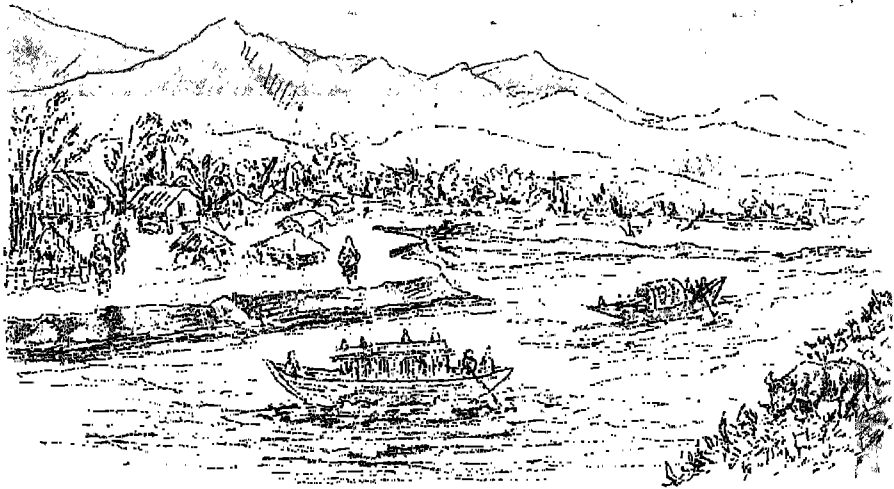
ब्रह्मपुत्र नद मानसरोवर के पास से निकलता, तिब्बत के पठार को सींचता, पासीघाट (अरुणाचल) में प्रवेश करता है। इसका प्रवाह अरुणाचल प्रदेश को पार करके सदिया के पास असम की सीमा में आ जाता है और क्रमशः बढ़ता हुआ धुबरी नगर को पार करके बांग्लादेश में प्रवेश कर जाता है। बांग्लादेश में इसके साथ पद्‌मा नदी मिलती है जो गंगा की एक शाखा है। फिर आगे चलकर यह गंगासागर में विलीन हो जाता है। उद्‌गम से सागर तक ब्रह्मपुत्र का प्रवाह 2900 किलोमीटर लंबा है।

ब्रह्मपुत्र की विकास-यात्रा की तरह ही इसके नामों की विकास-यात्रा भी काफ़ी मनोरंजक तथा ज्ञानवर्धक है। तिब्बत में इसकी विशालता को देखकर ही इसे 'सांग पो' अर्थात विशाल नदी कहा गया। भारत में प्रवेश करते ही इसका नाम 'दिहांग' हो जाता है। दिहांग का अर्थ है–बड़ी नदी। वस्तुतः इस

क्षेत्र में नदियों की औसत लंबाई काफ़ी कम पाई जाती है । ऐसी स्थिति में किसी बड़ी नदी का उपर्युक्त नाम रखा जाना स्वाभाविक है। मिश्मी लोग ब्रह्मपुत्र को 'लुइत' कहते हैं। मिश्मी बोली में लुइत का अर्थ है – 'तारों की राजकुमारी'। ब्रह्मपुत्र का एक नाम लौहित्य भी है। संस्कृत के शब्द लौहित्य का अर्थ है लाल। पहाड़ों की मिट्टी के लाल कणों को इसकी धारा बहाती आई है। कदाचित इसीलिए इसका नाम लौहित्य पड़ा।

पौराणिक आख्यानों के अनुसार विष्णु के अवतार भगवान परशुराम अपने हाथ में रक्तरंजित परशु लेकर सदिया में ब्रह्मपुत्र के तट पर आए। यहीं उन्होंने अपने हाथ धोए, तभी उनके हाथ से रक्तरंजित परशु छूटा। परशु में लगा रक्त ब्रह्मपुत्र की धारा में घुला और उसका रंग लाल हो गया। इस पौराणिक कथा से संबद्ध स्थान 'परशुराम कुंड' आज भी एक प्रमुख तीर्थ है।

एक पौराणिक आख्यान के अनुसार ब्रह्मपुत्र स्वयं विधाता ब्रह्मा का पुत्र है जो अमोघा के गर्भ से जन्मा। ब्रह्मपुत्र के जन्म के बारे में पौराणिक तथा स्थानीय विवरणों में प्राप्त होनेवाली कथाओं को एक साथ देखने पर यह बात स्पष्ट होती है कि ब्रह्मपुत्र ने सबको आकर्षित किया और सबको कौतूहल में डाला।

भूगर्भशास्त्रियों की राय में ब्रह्मपुत्र का प्रवाह हिमालय से भी पुराना है। इसमें बहकर आई जलोढ़ मिट्टी से इसकी घाटी का निर्माण हुआ है। इस क्षेत्र में खूब वर्षा होती है। वर्षा का जल विभिन्न सहायक नदियों से होकर ब्रह्मपुत्र में मिलता है जिससे ब्रह्मपुत्र का जल-प्रवाह अत्यंत शक्तिशाली हो जाता है। ऐसा जल-प्रवाह जल-विद्युत ऊर्जा के निर्माण में बड़ा ही उपयोगी हो सकता है।

ब्रह्मपुत्र उत्तर-पूर्वांचल के भौगोलिक व्यक्तित्व का नियंता है। यह अपनी प्रचंड धारा से कभी तो बस्तियों का नामोनिशान मिटा देता है तो कभी यह नए

भूभाग का वरदान दे डालता है। विश्व का सबसे बड़ा नदी-द्वीप ब्रह्मपुत्र का ही अवदान है। जोरहाट के निकट 'माजुली द्वीप' नामक क्षेत्र है। यह संसार का सबसे बड़ा नदी-द्वीप है। एक समय यह 90 कि.मी. लंबे तथा 20 कि.मी. चौड़े भूभाग में फैला था। आज इसका एक बड़ा भाग ब्रह्मपुत्र की गोद में चला गया है। जैसे जगद्गुरु आदि शंकराचार्य द्वारा हमारे देश की चारों दिशाओं में चार मठों की स्थापना की गई थी, वैसे ही श्रीमंत शंकरदेव के महान कार्यों को गतिशील रखने के लिए माजुली द्वीप में भी कमलाबाड़ी, औनियाटी, गड़मूड़ तथा दक्षिणपाट नामक चार सत्र स्थापित किए गए । इन सत्रों को असमिया संस्कृति का केंद्र कहा जा सकता है। इनमें असम की शिल्प-कला, नृत्य-संगीत और साहित्य सुरक्षित हैं।

ब्रह्मपुत्र ने यदि इस क्षेत्र का भूगोल बनाया है तो इसने यहाँ का इतिहास भी रचा है। इस अंचल में सभ्यता और संस्कृति का उत्थान-पतन इसके किनारे ही हुआ है। यहाँ के ज्ञात इतिहास का भव्य नायक शिवसागर नगर ब्रह्मपुत्र के तट पर ही स्थित है, जहाँ ऐतिहासिक अहोम राजाओं के प्रताप का सूर्य शताब्दियों तक अस्त नहीं हुआ। प्राग्ज्योतिषपुर नामक पौराणिक राज्य का विस्तार भी इसी नदी के तट पर था। गुवाहाटी नगर के आमबाड़ी क्षेत्र में हुए उत्खनन से ब्रह्मपुत्र के तट पर फली-फूली एक समर्थ सभ्यता का पता चला है। ब्रह्मपुत्र के तट से ही प्राग्ज्योतिषपुर का राजा भगदत्त हाथियों की एक कुमुक लेकर कुरुक्षेत्र में हुए महाभारत के युद्ध में गया था। इसी नदी के पावन तट पर सुप्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग नालंदा से चलकर आया था। ब्रह्मपुत्र साक्षी है, गुरु तेगबहादुर के असम आगमन का, जब गुरुजी राजा राम सिंह की

सहायता के लिए असम आए और धुबरी में ठहरे। धुबरी में जहाँ गुरुजी ठहरे थे आज वहाँ एक भव्य गुरुद्वारा है। ब्रह्मपुत्र के तट पर ही सराईघाट का वह प्रसिद्ध मैदान है जहाँ अहोम सेनापति लाचित बरफुकन ने मुगल सेना को पराजित कर उसे वापस लौटने को मजबूर कर दिया था।

ब्रह्मपुत्र भारत पर अत्यंत कृपालु रहा है। तिब्बत के पठार पर जहाँ ब्रह्मपुत्र नौगम्य नहीं है वहीं भारत में यह नौगम्य हो जाता है। तिब्बत के पठार पर ब्रह्मपुत्र में चमड़े की नौका चलती है। इस नौका को 'क्वा' कहते हैं। क्वा धारा के विपरीत नहीं चल सकती। पर भारत में ब्रह्मपुत्र असमवासियों के लिए सहज और उदार हो उठता है। ब्रह्मपुत्र की धारा के बावजूद तिब्बत का पठार धान की उपज का वरदान नहीं पा सका। असमवासियों को ब्रह्मपुत्र ने धान की श्रेष्ठ फ़सलों का वरदान दिया है।

असम में ब्रह्मपुत्र बाढ़ से चाहे जो भी ज़ुल्म क्यों न करे, यह धान की फ़सलों का वरदान कभी वापस नहीं लेता। धान की खेती के लिए ही नहीं, चाय के सुरम्य बागानों के लिए भी असम की प्रजा उसकी आभारी है। चाय ही क्यों, तेल के भंडारों का होना भी इस क्षेत्र में संभव नहीं होता यदि ब्रह्मपुत्र न होता। भूगर्भशास्त्रियों की राय में परतदार चट्टानों की संरचना में ब्रह्मपुत्र का महत्त्वपूर्ण योगदान है, जिन परतदार चट्टानों के बीच से आज खनिज तेल निकाला जा रहा है।

ब्रह्मपुत्र की विशाल धारा के अंदर यदि अगणित जल-जीव निवास करते हैं तो उसके वक्ष पर दिलेर नावरिए (नाविक) नावों में बैठ अपनी जीविका के लिए मछली पकड़ते हैं। ये नावरिए जितने कुशल शिकारी होते हैं उतने ही कुशल गायक भी। मधुर और उन्मुक्त स्वर में इनका 'नावरिया गीत' जब

छिड़ता है तो शायद लहरें भी ठहर जाती हैं और ब्रह्मपुत्र आनंद विभोर हो उठता है। ब्रह्मपुत्र के नैसर्गिक अवदान और मनुष्य की प्रतिभा से निर्मित नावरिया गीत लोक साहित्य की अमूल्य संपदा बन गया है।

ब्रह्मपुत्र प्राचीन और अर्वाचीन को जोड़नेवाला सेतु है। यह स्वयं तो दुर्बंध्य है, पर यह जातियों को जोड़ता है। इसके प्रवाह में यहाँ लोगों के अंतर्मन का प्रतिबिंब बनता है और इसके कलकल स्वरों में इस क्षेत्र के लोगों की काकली गूँजती है। ब्रह्मपुत्र एक शाश्वत जीवन-यात्रा है। यह एक अमर काया है जिसमें मानसरोवर का मंत्रपूत जल बहता है और जो अपने लोगों के श्रमसीकर को धोकर उन्हें ऊर्जस्वित करता जाता है। यह अपनी प्रजा का सखा है, स्रष्टा है और देवता भी। लोक मान्यताओं के अनुसार हर वर्ष अशोक अष्टमी के दिन सभी नदियों का जल ब्रह्मपुत्र में आ मिलता है। इस विशिष्ट अवसर पर ब्रह्मपुत्र में स्नान करना शुभ माना जाता है। इस दिन ब्रह्मपुत्र के अनेक तट महामिलन के तीर्थ बन जाते हैं।

— अजयेंद्र नाथ त्रिवेदी

प्रश्न-अभ्यास

बोध और विचार

(क) मौखिक

1. लेखक ने ब्रह्मपुत्र को पुरुषवाची क्यों कहा है?
2. ब्रह्मपुत्र नदी किन-किन क्षेत्रों से होकर गुज़रती है?
3. असमिया संस्कृति का केंद्र किन्हें कहा जा सकता है और क्यों?

4. 'क्वा' किसे कहते हैं? उसकी क्या विशेषता है?
5. 'नावरिया गीत' का संबंध किससे है और उसका क्या महत्त्व है?
6. ब्रह्मपुत्र के तट किस विशिष्ट अवसर पर तीर्थ बन जाते हैं?

(ख) लिखित

1. ब्रह्मपुत्र नदी के नामों की विकास यात्रा स्वयं में अनूठी है। कैसे?
2. गुवाहाटी नगर ब्रह्मपुत्र का कृतज्ञ क्यों है?
3. ब्रह्मपुत्र उत्तर पूर्वांचल के लिए वरदान है और विनाश का कारण भी। पाठ के आधार पर इस कथन को स्पष्ट कीजिए।
4. निम्नलिखित कथनों पर टिप्पणी कीजिए :
   (क) उत्तर पूर्वांचल का व्यक्तित्व ब्रह्मपुत्र के बिना अधूरा है।
   (ख) ब्रह्मपुत्र स्वयं तो दुर्बंध्य है, पर जातियों को जोड़ता है।
5. आशय स्पष्ट कीजिए –
   (क) ब्रह्मपुत्र प्राचीन और अर्वाचीन को जोड़ने वाला सेतु है।
   (ख) ब्रह्मपुत्र अपनी प्रजा का सखा है, स्रष्टा है और देवता भी।

भाषा-अध्ययन

1. निम्नलिखित शब्दों की वर्तनी शुद्ध कीजिए :
   स्मृद्धि, पोराणिक, एनक, एतिहासिक, उर्जा, नैर्सगिक, शास्वत
2. 'व्यक्तित्व' और 'परतदार' शब्द 'व्यक्ति' और 'परत' शब्दों में क्रमशः त्व संस्कृत प्रत्यय और 'दार' फ़ारसी प्रत्यय लगाकर बने हैं। 'त्व' और 'दार' प्रत्यय लगाकर चार-चार शब्द बनाइए।
3. निम्नलिखित शब्दों के विलोम लिखिए –

संहार	कृत्रिम	अर्वाचीन	वरदान
उत्थान	आगमन	मधुर	पराजित

4. नीचे लिखे वाक्यों में से उदाहरण के अनुसार सर्वनाम और सार्वनामिक विशेषणों को चुनकर लिखिए —

उदाहरण :

1. भारत की नदियों में ब्रह्मपुत्र पुरुषवाची नदी है, इसलिए इसे नद कहा गया है।
   — इसे (सर्वनाम)
2. ब्रह्मपुत्र को इस क्षेत्र में देवता की तरह पूजा जाता है। — इस (सार्वनामिक विशेषण)
   (क) यह स्वयं तो दुर्बंध्य है, पर यह जातियों को जोड़ता है।
   (ख) भारत के इन सुरम्य प्रदेशों का व्यक्तित्व अधूरा रह जाता यदि यहाँ ब्रह्मपुत्र की तीव्र धार न बही होती।
   (ग) ये नावरिए जितने कुशल शिकारी होते हैं उतने ही कुशल गायक भी।
   (घ) यह संसार का सबसे बड़ा नदी-द्वीप है।
   (ङ) इस नौका को 'क्वा' कहते हैं।
   (च) इनमें असम के शिल्प कला, नृत्य संगीत और साहित्य सुरक्षित हैं।

6. निम्नलिखित शब्द-समूहों का वाक्य में प्रयोग कीजिए :
   सुरम्य प्रदेश, औसत लंबाई, भौगोलिक व्यक्तित्व, अमूल्य संपदा, विशिष्ट अवसर

योग्यता-विस्तार

1. अमृतलाल बेगड़ कृत 'नर्मदा की आत्मकथा' और काका कालेलकर कृत 'दक्षिण गंगा गोदावरी' रचनाएँ पढ़िए तथा नर्मदा, गोदावरी और ब्रह्मपुत्र तीनों के सांस्कृतिक महत्त्व की तुलना कीजिए।
2. असम के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन में श्रीमंत शंकरदेव के योगदान के विषय में जानकारी प्राप्त करके उसे कक्षा की भित्ति पत्रिका पर प्रस्तुत कीजिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

सुरम्य - रमणीक, मनोहर
विक्षुब्ध - व्याकुल

प्रलयंकर - नाश करनेवाली
संवाहक - वहन करने वाला, ले जाने वाला
निर्मात्री - निर्माण करने वाली
कोप - क्रोध
संहार - विनाश
अग्रगण्य - आगे गिना जाने योग्य
परशु - फरसा, कुल्हाड़ी जैसा शस्त्र
भूतत्त्ववेत्ताओं - धरती की रचना का अध्ययन करने वाले
नियंता - नियंत्रण करने वाला
अवदान - योगदान
भग्नावशेषों - खंडहर (किसी इमारत के बचे हुए अवशेष)
उत्खनन - खुदाई
कुमुक - किसी सेना की सहायता के लिए भेजी हुई सेना
नौगम्य - जहाँ नाव द्वारा जाया जा सके
नैसर्गिक - प्राकृतिक
श्रमसीकर - परिश्रम के कारण आई पसीने की बूँदें
अर्वाचीन - आधुनिक
दुर्बंध्य - जिसे बाँधना कठिन हो
ऊर्जस्वित - शक्तिदायक, शक्तिप्रद

22. आप किनके साथ हैं?

(प्रस्तुत कविता उनके पक्ष में खड़ी है जो स्वाभिमानी, स्वावलंबी, साहसी, निर्भीक और त्यागी हैं और किसी अन्याय के सामने अपना सिर नहीं झुकाते। वे अपने न्यायोचित अधिकार के लिए लड़ते हैं और कर्मनिष्ठ रहकर अपने पथ की बाधाओं का डटकर सामना करते हैं। अपने लक्ष्य को सब कुछ न्योछावर कर प्राप्त करना चाहते हैं ।)

मैं हूँ उनके साथ खड़ी
जो सीधी रखते अपनी रीढ़।

कभी नहीं जो तज सकते हैं
अपना न्यायोचित अधिकार,
कभी नहीं जो सह सकते हैं
शीश नवाकर अत्याचार,
एक अकेले हों या उनके
साथ खड़ी हो भारी भीड़,
मैं हूँ उनके साथ खड़ी
जो सीधी रखते अपनी रीढ़।

निर्भय होकर घोषित करते
जो अपने उद्‌गार-विचार,
जिनकी जिह्वा पर होता है
उनके अंतर का अंगार,
नहीं जिन्हें चुप कर सकती है
आततायियों की शमशीर,
मैं हूँ उनके साथ खड़ी
जो सीधी रखते अपनी रीढ़।

नहीं झुका करते जो दुनिया से
करने को समझौता,
ऊँचे से ऊँचे सपनों को
देते रहते जो न्योता,
दूर देखती जिनकी पैनी
आँख भविष्यत् का तम चीर,
मैं हूँ उनके साथ खड़ी
जो सीधी रखते अपनी रीढ़।

जो अपने कंधों से पर्वत से
बढ़ टक्कर लेते हैं,

पथ की बाधाओं को जिनके
पाँव चुनौती देते हैं,
जिनको बाँध नहीं सकती है
लोहे की बेड़ी-जंजीर,
मैं हूँ उनके साथ खड़ी
जो सीधी रखते अपनी रीढ़।

जो चलते हैं अपने छप्पर के
ऊपर लूका धरकर,
हार-जीत का सौदा करते
जो प्राणों की बाज़ी पर,
कूद उदधि में नहीं पलटकर

जो फिर ताका करते तीर,
मैं हूँ उनके साथ खड़ी
जो सीधी रखते अपनी रीढ़।

जिनको यह अवकाश नहीं है,
देखें कब तारे अनुकूल,
जिनको यह परवाह नहीं है,
कब तक भद्रा, कब दिक्शूल,
जिनके हाथों की चाबुक से
चलती है उनकी तकदीर,
मैं हूँ उनके साथ खड़ी
जो सीधी रखते अपनी रीढ़।

तुम हो कौन, कहो जो मुझसे
सही-गलत पथ लो तो जान,
सोच-सोचकर, पूछ-पूछकर
बोलो, कब चलता तूफ़ान,
सत्पथ है वह जिसपर अपनी
छाती ताने जाते वीर,
मैं हूँ उनके साथ खड़ी
जो सीधी रखते अपनी रीढ़।

— हरिवंश राय 'बच्चन'

प्रश्न-अभ्यास

बोध और सराहना

(क) मौखिक

1. 'रीढ़ सीधी रखना' मुहावरे का क्या अर्थ है?
2. कविता उन लोगों का साथ निभाने का वचन देती है जो :
   (क) अपने क्रांतिकारी विचारों की अभिव्यक्ति निर्भीकतापूर्वक करते हैं।
   (ख) जीवन में आने वाली बाधाओं का डटकर सामना करते हैं।
   (ग) अपने भाग्य के निर्माता स्वयं होते हैं।
3. ऊँचे से ऊँचे स्वप्नों को निमंत्रण देने का अभिप्राय स्पष्ट कीजिए।
4. ग्रह-नक्षत्रों की अनुकूलता कौन लोग देखा करते हैं?

(ख) लिखित

1. कविता में रीढ़ सीधी खड़ी रखने वालों की कौन-कौन सी विशेषताएँ बतलाई गई हैं?
2. घर फूँक तमाशा देखने की प्रवृत्ति किन लोगों में पैदा हो जाती है और क्यों?
3. 'तूफ़ान सोच विचार कर नहीं चलता' कथन से कवि क्या कहना चाहता है?
4. इस कविता के संदेश को अपने शब्दों में लिखिए।
5. भाव स्पष्ट कीजिए :
   (क) जो चलते हैं अपने छप्पर के ऊपर लूका धरकर,
   हार-जीत का सौदा करते जो प्राणों की बाज़ी पर।
   (ख) कूद उदधि में नहीं पलट कर जो फिर ताका करते तीर,
   मैं हूँ उनके साथ खड़ी जो सीधी रखते अपनी रीढ़।

योग्यता-विस्तार

1. 'कभी नहीं जो तज सकते हैं......................अत्याचार' – पंक्तियों की तुलना निम्नलिखित पंक्तियों से कीजिए :

   अधिकार खोकर बैठ रहना यह महादुष्कर्म है।
   न्यायार्थ अपने बंधु को भी दंड देना धर्म है।।

2. 'ऐसे होते हैं वीर' – विषय पर एक निबंध लिखिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

रीढ़ सीधी रखना - स्वाभिमानी और स्वावलंबी होना, किसी के सामने न झुकना
उद्‌गार - भाव, आवेग
आततायी - अत्याचारी
शमशीर - तलवार
तम - अँधेरा
लूका धरना - जलती हुई लकड़ी रखना, अंगारा रखना
उदधि - सागर
भद्रा - ज्योतिष के अनुसार शुभकार्य के लिए निषिद्‌ध समय
दिक्‌शूल - दिशा-शूल, किसी विशिष्ट समय में विशेष दिशा की ओर यात्रा के लिए अशुभ समय

शब्द-कोश

इस शब्द-कोश से आपको इस पुस्तक के पाठों के कठिन शब्दों के अर्थ समझने में सहायता मिलेगी। नीचे बाईं ओर कठिन शब्द तथा दाईं ओर उसका अर्थ दिया गया है। अनेक स्थलों पर शब्दों के आगे कोष्ठक में संयुक्त शब्दों को अलग-अलग करके दिखाया गया है ताकि आप शब्द-निर्माण की विधि भी समझ सकें।

कहीं-कहीं शब्दों के अनेक पर्याय भी दिए गए हैं। इससे आप प्रसंग के अनुसार अनुकूल शब्द का चयन करना सीख सकेंगे। यह शब्द-कोश आपको शब्दों के न केवल सही अर्थ जानने में मदद करेगा अपितु शब्दों की सही वर्तनी भी सिखाएगा।

शब्द का अर्थ देने से पहले मूल शब्द के बाद कोष्ठक में एक संकेताक्षर दिया गया है। व्याकरण की दृष्टि से कोई शब्द संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया आदि शब्दभेदों में से किस भेद का है, यह सूचना आपको इस संकेताक्षर से मिलेगी। यहाँ जो संकेताक्षर अथवा संक्षिप्त रूप प्रयुक्त हुए हैं, वे इस प्रकार हैं–

पु.	- पुल्लिंग	क्रि.	- क्रिया
स्त्री.	- स्त्रीलिंग	क्रि.वि.	- क्रिया विशेषण

सर्व. - सर्वनाम   अ. - अव्यय
वि. - विशेषण   मु. - मुहावरा

इस शब्द-कोश में अपेक्षित शब्द का अर्थ ढूँढ़ना शुरू करने से पहले यह उचित होगा कि शब्द-कोश देखने की सही विधि आप जान लें। इसके लिए नीचे लिखे बिंदुओं को ध्यान में रखना होगा –

1. जिस शब्द के बारे में जानकारी प्राप्त करनी है, उसके आरंभ का वर्ण देखा जाता है। उसके आधार पर ही शब्द ढूँढ़ा जाता है।
2. शब्द-कोश में शब्दों को इस वर्ण-अनुक्रम में दिया जाता है – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ के पश्चात् क से ह तक के सभी वर्ण क्रम के अनुसार।
3. 'क्ष', 'त्र', 'ज्ञ', को 'ह' के बाद नहीं ढूँढ़ना चाहिए। 'क्ष' 'क्' और 'ष' का संयुक्त रूप है। अतः इससे शुरू होने वाले शब्दों को 'क' से शुरू होने वाले शब्दों के समाप्त होने पर ढूँढ़ना चाहिए। 'क्व' से प्रारंभ होने वाले शब्दों के समाप्त होने पर 'क्ष' से प्रारंभ होने वाले शब्द देखे जा सकते हैं।
4. 'त्र' 'त्' और 'र' का संयुक्त रूप है। अतः 'त्र' से शुरू होने वाले शब्द 'त' से शुरू होने वाले शब्दों के बाद ही ढूँढ़े जाने चाहिए। 'त्य' से संबंधित शब्द जब समाप्त हो जाते हैं तब 'त्र' से आरंभ होने वाले शब्द देखे जा सकते हैं।
5. 'ज्ञ' 'ज्' और 'ञ्' का संयुक्त रूप है। अतः 'ज्ञ' से शुरू होने वाले शब्दों को 'ज' से शुरू होने वाले शब्दों के बाद ही ढूँढ़ना चाहिए। 'ज' से संयुक्त होकर बनने वाला पहला वर्ण 'ज्ञ' ही है। अतः 'जौहरी' के बाद ही 'ज्ञ' से बनने वाले शब्द देखे जा सकते हैं। 'ज्ञ' के बाद 'ज्य' से बनने वाले शब्द आते हैं।

6. सभी वर्ण अनुस्वार एवं चंद्रबिंदु से ही शुरू होते हैं। उसके बाद वर्णक्रम शुरू होता है। इसलिए 'अंक', 'अँकवार', 'अंकुश', 'अंधा', 'अँधेरा', 'अंश' आदि के बाद ही 'अकड़', 'अकाल' आदि शब्द आते हैं। अनुस्वार और अनुनासिक की प्राथमिकता इसी क्रम में सभी वर्णों के साथ स्वीकृत है।
7. अनुस्वार और अनुनासिक युक्त वर्ण के पश्चात हर वर्ण में मात्राओं का वही क्रम रहता है जो स्वरों का होता है। (अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ) मात्राओं से युक्त वर्णों के समाप्त हो जाने पर ही संयुक्त वर्ण शुरू होगा।

सामान्य शब्द-कोशों में मुहावरों को उनके पहले शब्द के अंतर्गत दिया जाता है। विद्यार्थियों की दृष्टि से हमने यहाँ मुहावरों को स्वतंत्र इकाई मान कर अलग पद के रूप में दिया है ताकि शब्द-कोश देखना विद्यार्थियों के लिए जटिल न हो जाए।

अ

अंकुश : (पु.), नियंत्रण, हाथी को नियंत्रित करने वाला अस्त्र
अंचल : (पु.), आँचल
अंतरगत : (अ.), हृदय में, अंदर
अंतर्जामी : (वि.), अंतर्यामी, सबके अंतर्मन की बात जाननेवाला ईश्वर
अंबर : (पु.), आकाश
अकर्मण्यता : (स्त्री.), निकम्मापन
अगहन : (पु.), मार्गशीर्ष मास
अग्रगण्य : (वि.), जो आगे या पहले गिना जाए

अच्छी तरह खबर लेना	:	(मु.), डाँटना, धमकाना
अज़ान	:	(पु.), नमाज़ के समय की सूचना, नमाज़ के लिए बुलावा
अटपटा	:	(पु.), टेढ़ा, विचित्र
अतिशय	:	(वि.), बहुत अधिक
अदम्य	:	(वि.), जिसे दबाया न जा सके
अधर	:	(अ.), बीच में
अधर	:	(पु.), बीच में, होंठ
अनुसंधान	:	(पु.), खोज
अनुसरण	:	(पु.), किसी के अनुसार कार्य करना, पीछे चलना
अपना उल्लू सीधा करना	:	(मु.), स्वार्थ साधना
अप्रतिम	:	(वि.), अनुपम, बेजोड़
अबूझ	:	(वि.), बिना सोचे-समझे
अभिलेख	:	(पु.), शिलाओं और स्तंभों पर लिखा हुआ, खुदा हुआ
अमन	:	(पु.), सुख-शांति
अमानत	:	(स्त्री.), धरोहर
अमोलक	:	(वि.), अनमोल
अर्थ	:	(पु.), धन, साधन
अर्धशती	:	(स्त्री.), आधी शताब्दी, पचास वर्ष
अर्वाचीन	:	(वि.), आधुनिक
अलंकरण	:	(पु.), उपाधि से विभूषित करना, सम्मान
अलाव	:	(पु.), तापने के लिए जलाई गई आग
अवंती	:	(स्त्री.), वर्तमान उज्जैन
अवतरित	:	(वि.), अवतार लेना, विशेष प्रकार का जन्म
अवदान	:	(पु.), योगदान

अविस्मरणीय : (वि.), न भुलाया जा सकनेवाला

असमंजस : (पु.), दुविधा

असाध्य रोग : (वि.), वह रोग जिसका निदान कठिन हो, लाइलाज

असीम : (वि.), जिसकी सीमा न हो

आ

आँखें फटी की फटी रह जाना : (मु.), आश्चर्य चकित हो जाना

आँवा : (पु.), भट्ठी, वह गड्ढा जिसमें कुम्हार मिट्टी के बरतन पकाता है

आकांक्षी : (वि.), इच्छुक

आक्रांत : (वि.), जिसपर आक्रमण किया गया हो

आख्यान : (पु.), कथा-कहानी, पौराणिक कथा

आग लगना : (मु.), क्रोध से जल उठना

आग बरसाना : (मु.), गोलीबारी करना

आग लगी न होना : (मु.), बैर न होना

आचरण : (पु.), व्यवहार

आजीवन : (अ.), जीवन भर

आततायी : (वि.), अत्याचारी

आत्मीय : (वि.), प्रिय, स्वजन, अपना

आम्रकुंज : (पु.), आम का बाग

आर्तनाद : (पु.), दुखभरी आवाज़

आवरण : (पु.), परदा, ढकने का वस्त्र

आविर्भूत : (वि.), प्रकट हुआ

आशंका : (स्त्री.), बुरी घटना होने का भय

आसिन : (पु.), आश्विन मास

आहुति : (स्त्री.), हवन, बलिदान
आह्वान : (पु.), बुलावा

इ

इंद्रनील : (पु.), नीलकांत मणि, नीलम
इंशाअल्लाह : (स्त्री.), ईश्वर की इच्छा
इज़ारेदार : (पु.), ठेकेदार
इल्ली : (स्त्री.), तितली के बच्चे का अंडे से निकलने के बाद का रूप

उ

उघाड़ना : (पु.), खोलना
उज्र : (पु.), किसी कार्य अथवा बात का विरोध करना या आपत्ति प्रकट करना
उण बिन : (सर्व., अ.), उनके बिना
उत्कीर्ण : (वि.), खुदा हुआ
उत्खनन : (पु.), खुदाई
उत्तरीय : (पु.), ऊपर का वस्त्र, गमछा, दुपट्टा
उदधि : (पु.), सागर
उद्‌गार : (पु.), भाव और विचार
उर्वरक : (पु.), उपज बढ़ानेवाला रसायन, खाद
उलटी छाती चढ़ना : (मु.), विपरीत दिशा में बहना
उलाहना : (पु.), शिकायत

ऊ

ऊर्जस्वित : (वि.), शक्तिदायक

ए

एकाकीपन : (पु.), अकेलापन

ओ

ओंकार : (पु.), ब्रह्म का नाद-प्रतीक, ओम् की ध्वनि
ओजस्वी : (वि.), ओज युक्त, तेज-बल युक्त
ओत-प्रोत : (वि.), खूब भरा हुआ, परस्पर गुँथा हुआ
ओषधि : (स्त्री.), जड़ी-बूटी

औ

औंधे मुँह गिरना : (मु.), धोखा खाना
औषध : (पु.), दवाई
औषधीय : (वि.), औषध संबंधी

क

कट्ठा : (पु.), खेत या ज़मीन नापने का एक नाप
कनक-शस्य : (पु.), सोने जैसी घास, अनाज की सुनहली फ़सल
कर का मनका : (पु.), हाथ की माला के दाने
करचा : (पु.), काँच का टुकड़ा
करतब : (पु.), कौशल, अचरज में डालने वाला काम
करनफूल : (पु.), कान में पहना जाने वाला गहना

करीना	:	(पु.), अच्छी तरह
कर्णवेध	:	(पु.), कान छेदना, एक संस्कार
कलाकृति	:	(स्त्री.), कलात्मक रचना
काँची	:	(वि.), कच्ची, अर्थहीन
काँटे	:	(पु.), बाधाएँ, दुखद स्थितियाँ
कॉस्मिक किरण	:	(स्त्री.), बाहरी अंतरिक्ष (सौर मंडल से परे) से आनेवाली उच्च भेदन क्षमता के विकिरण
काठ मारना	:	(मु.), सुन्न रह जाना, जड़वत हो जाना
कोढ़ै	:	(क्रि.), निकालना
कारवाँ	:	(पु.), देशांतर जानेवाले यात्रियों या व्यापारियों का झुंड
कार्तिकेय	:	(पु.), कृत्तिका नक्षत्र में उत्पन्न शिव के पुत्र, देवताओं के सेनापति
किंकर्तव्यविमूढ़	:	(वि.), अनिश्चय की स्थिति, कुछ भी निर्णय न कर पाने की स्थिति
कीटनाशी	:	(वि.), कीड़े-मकोड़ों को नष्ट करने वाली
कुंकुम	:	(पु.), रोली
कुँआरी	:	(वि.), कुमारी, अविवाहित कन्या
कुटुंब	:	(पु.), परिवार
कुफ्र	:	(पु.), कृतघ्नता
कुब्जा	:	(स्त्री.), कुब्बड़वाली , कंस की एक दासी जो कुबड़ी थी, श्री कृष्ण ने उसका कुब्बड़ ठीक किया
कुमति	:	(स्त्री.), दुर्बुद्धि
कुमुक	:	(स्त्री.), किसी सेना की सहायता के लिए भेजी गई सेना की टुकड़ी
कुलेल	:	(स्त्री.), कलोल, क्रीड़ा
कुशल-क्षेम	:	(पु.), सुख स्वास्थ्य की जानकारी
कृतज्ञता-ज्ञापन	:	(पु.), आभार प्रकट करना
केका	:	(स्त्री.), मोर की बोली
कोप	:	(पु.), क्रोध

कोष : (पु.), भंडार
कौल : (पु.), वचन, वादा
क्रियाशील : (वि.), कार्य में लीन, सक्रिय
क्रूर कर्म : (पु.), कठोर कार्य
क्रोड़ : (स्त्री.), गोद
क्षत-विक्षत : (वि.), बुरी तरह घायल

ख

खचित : (वि.), भरा हुआ, जड़ा हुआ
खारो : (वि.), निरर्थक, नमकीन
खिदमत : (स्त्री.), सेवा
खून मुँह लगना : (मु.), खून का मज़ा मिलना, चसका पड़ जाना
खेवटिया : (पु.), केवट

ग

गढ़ि-गढ़ि : (क्रि.), बना-बनाकर
गद्गद होना : (मु.), अत्यंत प्रसन्न होना
गनीमत : (स्त्री.), संतोष की बात
गर्जितोर्मि : (स्त्री.), गर्जन करती लहरें
गाछ-बिरछे : (पु.), पेड़-पौधे
गार : (पु.), गड्ढा
गुनाह : (पु.), कसूर, गलती
गुर सिखाना : (मु.), युक्ति बताना
गुस्सा ठंडा पड़ना : (मु.), शांत होना

घ

घनेरी : (वि.), बहुत
घोष : (पु.), आवाज़, ध्वनि

च

चंचु प्रहार : (पु.), चोंच का प्रहार
चरक : (पु.), 'चरक संहिता' का रचयिता और आयुर्वेद का आचार्य
चिड़ीमार : (पु.), चिड़ियों को मारने वाला, चिड़ियों का शिकारी
चिरस्मरणीय : (वि.), बहुत समय तक याद रखने योग्य
चेतना : (स्त्री.), जागृति
चौकसी : (स्त्री.), पहरेदारी
चौर : (पु.) ताल, जहाँ वर्षा और बाढ़ का पानी एकत्र हो जाता है
छंद : (पु.), लय, कविता में वर्ण आदि की एक व्यवस्था
छिद्र : (पु.), छेद

ज

जंग : (स्त्री.), लड़ाई, युद्ध
जड़मति : (वि.), मूर्ख, नासमझ
जल समाधि : (मु.), जल में डूब जाना, जल में योग द्वारा ली गई समाधि
जस : (पु.), यश
जाँगर : (पु.), शरीर का बल
जाणत : (क्रि.), जानते
जमिं : (सर्व.), जिसमें
जिज्ञासु : (वि.), जानने की इच्छा रखने वाला

जित : (सर्व.), जहाँ

जीर्णोद्धार : (पु.), पुराने टूटे-फूटे मंदिर, किले, भवन आदि का फिर से निर्माण करना

जीवनाधार : (पु.), जीवन का सहारा

जुगाली : (स्त्री.), जानवरों द्वारा निगले हुए चारे को गले से निकालकर थोड़ा-थोड़ा चबाना, पागुर

जोखिम : (पु.), खतरा

जोखिम भरा : (वि.), खतरे से भरा

ज्योतिर्जल : (पु.), निर्मल जल

झ

झींखना : (क्रि.), दुखी होना, पछताना

झुटपुटा : (पु.), सुबह और शाम का वह समय जब कुछ अँधेरा और कुछ उजाला हो

ट

टोटा : (पु.), कमी

ड

डारि : (स्त्री.), डाली, टहनी

ढ

ढूह : (पु.), किसी वस्तु का ढेर, टीला, भीटा

ढेर हो जाना : (मु.), मर जाना

त

तड़ा : (पु.), पेड़ की डालियाँ काटने के उपयोग में आनेवाला हँसिए के आकार का हथियार जिसमें हत्थे की जगह बाँस का टुकड़ा लगा होता है।

तम : (पु.), अँधेरा

तर आयो : (क्रि.), पार कर लिया, पार आ गया

तराई : (स्त्री.), पहाड़ के नीचे का मैदान

तहज़ीब : (स्त्री.), सभ्यता, शिष्टाचार

ताक पर रखना : (मु.), काम में न लाना

तापित : (वि.), धूप में जलता हुआ, पीड़ित

तालमेल रखना : (क्रि.), संगति बनाए रखना

तित : (सर्व.), वहाँ

तुरंगा : (वि.), प्रसन्न, खुश, तृप्त

तेई : (सर्व.), वही

त्रस्त : (वि.), परेशान, भयभीत, दुखी

त्राण : (पु.), मुक्ति, बचाव

त्रिविध : (स्त्री.), मंद, शीतल और सुगंधित वायु

थ

थूक उछालना : (मु.), आरोप-प्रत्यारोप, वाक् युद्ध

द

दंत कथा : (स्त्री.), लोक प्रचलित कथा

दबे पाँव आना : (मु.), चुपके-चुपके आना

दमनचक्र : (पु.), विरोधियों को दबाने का कार्य

दरसण : (पु.), दर्शन, साक्षात्कार

दलील : (स्त्री.), तर्क

दाँताकसी : (स्त्री.), व्यर्थ की बातें करना

दिक्शूल : (पु.), दिशा-शूल, ज्योतिष के अनुसार किसी विशिष्ट समय में विशेष दिशा में यात्रा के लिए अशुभ समय

दिव्य : (वि.), अलौकिक

दीन्यौ : (क्रि.), दीजिए

दीपधर : (पु.), जिसपर दीपक रखा जाता है, दीवट

दीर्घ : (वि.), लंबा, विशाल, विस्तृत

दुकेली : (पु.), जो अकेली न हो

दुर्बंध्य : (वि.), जिसे बाँधा न जा सके

देवों की बस्ती : (स्त्री.), स्वर्ग, संपन्न लोगों का आवास

द्युति : (स्त्री.), चमक, कांति

ध

धन्वंतरि : (पु.), 1. पुराण के अनुसार समुद्र-मंथन से निकले हुए देवताओं के वैद्य 2. धन्व के पुत्र और काशी के राजा दिवोदास, धन्वंतरि संहिता के रचयिता

धरा : (स्त्री.), पृथ्वी

धर्मनिष्ठ : (वि.), धर्म पर विश्वास रखने वाला

धवल : (वि.), श्वेत, निर्मल

धूर्तता : (स्त्री.), छल, चालाकी, धोखा-धड़ी

न

नत मस्तक : (वि.), जिसका सिर किसी के आगे झुका हो (अधीनता या आदर का सूचक)

नवाचार : (पु.), नया आचरण, नए प्रयोग
नवीनीकरण : (पु.), नया करना, नवीकरण
नाऊँ : (पु.), नाम
नाज़ : (पु.), गर्व, घमंड
निंदिए : (क्रि.), शंका रहित, निडर, बेखटके
निदान : (पु.), रोग की पहचान करना, रोग का मूल कारण जानना
नियंता : (पु.), नियंत्रण करने वाला, शासक
निरी : (अ.), मात्र, सिर्फ़
निरीह : (वि.), निर्बल, असहाय
निरुद्यमी : (वि.), अकर्मण्य, निकम्मा
निर्मात्री : (स्त्री.), निर्माण करने वाली
निर्मित : (वि.), जिसका निर्माण किया गया हो, रचित
निश्चेष्ट : (वि.), चेतना शून्य, अचेत, बेहोश
निष्कासित : (वि.), निकाला हुआ
निष्क्रिय : (वि.), कुछ न करनेवाला, क्रियाशून्य, चेष्टा रहित
नुनफर : (पु.), गाँव का ऐसा स्थान जो ऊसर हो और खेतों से ऊँचा हो
नैन : (पु.), आँखें, दृष्टि
नैसर्गिक : (वि.), प्राकृतिक
नौगम्य : (वि.), जहाँ नाव द्वारा जाया जा सके
न्यूनी-सी चिकनी : (वि.), मक्खन के समान चिकनी

प

पक्षी-शावक : (पु.), पक्षी के बच्चे
पथिक : (पु.), मार्ग चलने वाला, यात्री, मुसाफिर
पद-तल : (अ.), चरण के नीचे

पदारथ चारी : (पु.), चारों पदार्थ – धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। इन्हें पुरुषार्थ भी कहा गया है

परंपरागत : (स्त्री.), परंपरा से प्राप्त, सदा से चला आता हुआ

परमाणु-ऊर्जा : (पु.), परमाणु में संचित ऊर्जा जो नाभिकीय विखंडन अथवा संलयन से उत्पन्न होती है

परवरदिगार : (पु.), पालन-पोषण करने वाला, ईश्वर

परशु : (पु.), फरसा

पराबैंगनी किरणें : (स्त्री.), प्रकाश में लाल, नारंगी, पीली, हरी, आसमानी, नीली और बैंगनी रंगों के बाद सूर्य से निकलने वाली हानिकारक किरणें

परिवेश : (पु.), आसपास का वातावरण, पर्यावरण

परिष्कृत : (वि.), शुद्ध किया हुआ

परिसर : (वि.), भवन के आसपास की भूमि, अहाता

पाँयन : (पु.), पैरों के

पाँव उखड़ जाना : (मु.), लड़ाई में ठहर न पाना

पाक : (वि.), पवित्र

पाथेय : (पु.), वह वस्तु जिसे पथिक रास्ते में खाने के लिए ले जाता है

पारसमणि : (स्त्री.), ऐसी कल्पित मणि जिसके स्पर्श (परस) से लोहा सोना बन जाता है

पाषाणयुग : (पु.), वह ऐतिहासिक काल जब मनुष्य पत्थर के बने औज़ारों का प्रयोग करता था

पीर : (स्त्री.), पीड़ा, कष्ट, दुख

पुलक : (पु.), प्रेम, हर्ष आदि के भाव से रोएँ खड़े होना

पैराट्रूपर : (पु.), युद्ध के वायुयान से उतरने वाले छाताधारी सैनिक

पोसाना : (क्रि.), लाभकर होना

प्रकाश स्तंभ : (पु.), समुद्र तट पर बनाया गया ऊँचा स्तंभ जिसपर रात के समय जहाज़ों को चट्टानों या अन्य खतरों से बचाने या दिशा-ज्ञान के लिए रोशनी की जाती है, लाइट हाउस

प्रच्छन्न : (वि.), छिपा हुआ, गुप्त
प्रणव : (पु.), ओंकार मंत्र, परमेश्वर
प्रतिफलन : (पु.), परिणाम
प्रतिभा : (पु.), सृजनशील बुद्धि, असाधारण बुद्धि बल
प्रलयंकर : (वि.), प्रलय के समान सर्वनाश करने वाला
प्रलोभन : (पु.), लालच, लोभ
प्रवचन : (पु.), उपदेशपरक भाषण, धार्मिक, नैतिक विषयों का व्याख्यान
प्रश्रय : (पु.), सहारा, आगे बढ़ाना
प्रस्थान : (पु.), चले जाना, यात्रा, रवानगी
प्रांगण : (पु.), आँगन
प्राकार : (पु.), किले, मंदिर आदि के चारों तरफ़ बनाई गई चहारदिवारी
प्राण रेख : (स्त्री.), जीवन रेखा
प्रौद्योगिकी : (स्त्री.), वैज्ञानिक सिद्धांतों का व्यावहारिक रूप, उद्योगों से संबंधित शास्त्र

ब

बंकिम : (वि.), टेढ़ा
बंधक : (पु.), गिरवी रखना
बख्श देना : (पु.), क्षमा करना
बगावत : (स्त्री.), विद्रोह
बजंता ढोल : (पु.), ढोल बजाकर, खुलकर, सबके सामने
बलवती : (वि.), तीव्र, बहुत अधिक
बलित : (वि.), वलित, लिपटी हुई
बवंडर : (वि.), तूफ़ान
बहुमुखी प्रतिभा : (स्त्री.), अनेक विषयों में रुचि और ज्ञान रखने वाली बौद्धिक क्षमता

बँधि	:	(क्रि.), बाँधकर
बाज़ आना	:	(मु.), दूर रहना, छोड़ देना
बाध्य	:	(वि.), विवश
बारहा	:	(अ.), बार-बार
बिगुल	:	(पु.), युद्ध प्रारंभ होने से पहले बजने वाला वाद्य यंत्र
बिताना	:	(पु.), फैली हुई
विरासत	:	(स्त्री.), उत्तराधिकार में मिली संपत्ति, सामग्री
बूते की कामना और बूते का काम	:	(मु.), अपनी सामर्थ्य के अनुसार इच्छा और परिश्रम करना
बेतरतीब	:	(वि.), बिना क्रम के, अव्यवस्थित
बेपनाह	:	(वि.), निराश्रय, बेसहारा, बिना रक्षा का
बेशुमार	:	(वि.), अत्यधिक, अपार
बेहाड़	:	(वि.), बिना हड्डी वाली
बैन	:	(पु.), वाणी
ब्यालू	:	(स्त्री.), शाम का भोजन

भ

भग्नावशेष	:	(पु.), खंडहर, किसी इमारत के बचे हुए अवशेष
भद्रजन	:	(पु.), भले आदमी, सभ्य लोग
भद्रा	:	(स्त्री.), शुभ कार्य के लिए निषिद्ध समय
भयप्रद	:	(वि.), डरावना, भय प्रदान करनेवाला
भवसागर	:	(पु.), संसार रूपी सागर
भव्य	:	(वि.), सुंदर, आकर्षक, शानदार
भाग	:	(पु.), भाग्य, किस्मत
भारति	:	(स्त्री.), हे भारती, सरस्वती
भूतत्त्ववेत्ता	:	(पु.), धरती की रचना का अध्ययन करनेवाले

भेव	:	(पु.), भेद, रहस्य
भोग्य	:	(वि.), भोगने योग्य, उपयोग के लिए
भ्रांतिवश	:	(अ.), भ्रम में पड़कर, भ्रम के कारण
भ्रुव	:	(स्त्री.), भौंह

म

मंजरी	:	(स्त्री.), नया निकला हुआ कोंपल
मंजु	:	(वि.), सुंदर
मगज़मारी	:	(स्त्री.), दिमाग लगाना, सिर खपाना
मज़हबी	:	(वि.), धार्मिक
मधुकर सेनी	:	(स्त्री.), भौंरों की कतार या पंक्ति
मन का फेर	:	(पु.), मन की दुष्प्रकृति
मर्दन	:	(पु.), नाश
महाकाल	:	(पु.), कालों का काल, काल प्रवर्तक, महादेव
महिषासुर	:	(पु.), एक असुर जो भैंसे का रूप धारण कर लेता था और जिसे भगवती दुर्गा ने मारा था
मांगलिक	:	(वि.), शुभ कार्य संबंधी, मंगलकारी
मायापुरी	:	(स्त्री.), वर्तमान हरिद्वार, एक तीर्थस्थल
मार्जारी	:	(स्त्री.), बिल्ली
मुँहधो	:	(वि.), मँहगा
मुकुट	:	(पु.), ताज
मुखरे	:	(वि.), ध्वनित होने वाली, सैकड़ों आवाज़ों से बोलने वाली
मूँजी	:	(वि.), कंजूस
मृगतृष्णा	:	(स्त्री.),मृग की प्यास, मरूभूमि की विरल वायु में तेज़ धूप जब परावर्तित होती है, दूर से देखने पर ऐसा लगता है जैसे कि पानी चमक रहा है। प्यासा मृग इस दृश्य को वास्तविक पानी समझकर अपनी प्यास बुझाने

के लिए दौड़ता है। उसे पानी नहीं मिलता और न उसकी प्यास बुझ पाती है, अंततः उसे जान गँवानी पड़ जाती है। मृग की इस प्राणघाती प्यास को मृगतृष्णा कहते हैं

मृच्छकटिकम् : (पु.), महाकवि शूद्रक का प्रसिद्ध संस्कृत नाटक, जिसका अर्थ है मिट्टी की गाड़ी

म्हैं : (सर्व)., मैंने

य

याके : (सर्व.), इसके

याचना : (स्त्री.), माँगना

यातना-यंत्र : (पु.), पीड़ा पहुँचाने वाले उपकरण

याही कूँ : (सर्व.), इसी को

युक्ति संगत : (वि.), उचित, तर्कयुक्त

रंग राची : (वि.), रंग में रँग गई, भक्ति में डूब गई

रक्तरंजित : (वि.), खून का बहना

रणभेरी : (स्त्री.), युद्ध के समय बजाया जाने वाला नगाड़ा

रमणीक : (वि.), सुंदर

रसीली भक्ति : (स्त्री.), माधुर्य भाव की भक्ति

राजप्रासाद : (पु.), राजा का महल

रीढ़ सीधी रखना : (मु.), स्वाभिमानी और स्वावलंबी होना, किसी के सामने न झुकना

रुकती-सी दुनिया : (स्त्री.), दुनिया की प्रगति जब बाधित हो रही हो

रैनि : (स्त्री.), रात

रौंदना : (क्रि.), पैरों से कुचलना

ल

लपलपाती	:	(वि.), जीभ का हिलना-डुलना
लमहा	:	(पु.), पल
लहू में उबाल आना	:	(मु.), क्रोध आना
लालसा	:	(स्त्री.), किसी चीज़ को पाने की अत्यधिक इच्छा
लूका धरना	:	(मु.), अंगारा रखना, जला देना
लौ	:	(स्त्री.), शिखा, लपट

व

वंध्या	:	(वि.), बंजर
वल्गा	:	(स्त्री.), लगाम
वसन	:	(पु.), वस्त्र
वात्सल्य	:	(पु.), मातृ-पितृवत् स्नेह
वापी	:	(स्त्री.), तालाब
वारी	:	(स्त्री.), न्योछावर
वार्डर	:	(पु.), कैदियों में से चुना हुआ एक पहरेदार
वासुरि	:	(पु.), दिन, वासर
वास्तुकला	:	(स्त्री.), भवन-निर्माण की कला
विक्षुब्ध	:	(वि.), क्षोभ से भरा
विजित	:	(वि.), जिसे जीत लिया गया हो, पराजित
विटप	:	(पु.), वृक्ष, पेड़
विधि-अंक	:	(पु.), भाग्य का लिखा हुआ
विध्वंसवाहिनी	:	(स्त्री.), नाश करने वाली
विभव	:	(पु.), वैभव, धन-संपदा

विलक्षण : (वि.), अनोखा
विस्मयाभिभूत : (वि.), आश्चर्यपूर्ण
विस्मृत : (वि.), भुलाया
वैभव : (पु.), ऐश्वर्य
व्याप्त : (वि.), फैला हुआ

श

शतदल : (पु.), कमल
शतमुख : (पु.), सैकड़ों मुखों से
शतरव : (पु.), सैकड़ों आवाज़ें
शमन होना : (क्रि.), शांत होना
शमशीर : (स्त्री.), तलवार
शल्यक्रिया : (स्त्री.), चीर-फाड़ द्वारा शरीर का इलाज करना
शिक्षाविद् : (पु.), शिक्षाशास्त्र के ज्ञाता
शुचि : (वि.), पवित्र
शुचिता : (स्त्री.), पवित्रता
शुतुरमुर्ग : (पु.), एक बड़ा पक्षी जिसकी गरदन ऊँट की गरदन की तरह टेढ़ी और लंबी होती है। यह पक्षी पंख होते हुए भी उड़ नहीं सकता।
श्रमजल : (पु.), पसीना, मेहनत का पसीना
श्रमसीकर : (पु.), परिश्रम के कारण निकलनेवाली पसीने की बूँदें
संकीर्ण : (वि.), सँकरा
संग्रहण : (पु.), इकट्ठा करना
संचित : (पु.), एकत्रित
संतुलन-बोध : (वि.), गुण, अवस्था या दशा में उचित अनुपात का ज्ञान
संवाहक : (पु.), वहन करनेवाला

संहार	:	(पु.), विनाश
सज्जात्मक वस्तुएँ	:	(स्त्री.), सजाने की वस्तुएँ
सतत	:	(अ.), लगातार
सत्याग्रह	:	(पु.), सत्य आचरण के प्रति आग्रह
सदानीरा	:	(स्त्री.), वह नदी जिसमें जल की धारा निरंतर प्रवाहित होती रहे
सबक सिखाना	:	(मु.), ठीक करना, पाठ पढ़ाना
समक्ष	:	(अ.), सामने, सम्मुख
समोना	:	(क्रि.), आत्मसात करना, समेटना
सरेह	:	(पु.) खेत का विस्तार, गाँव के बाहर खेती की विस्तृत भूमि
सरोकार	:	(पु.), लगाव, परस्पर संबंध
सलोनी	:	(वि.), लावण्यमयी, सुंदर, प्यारी
सहचारिणी	:	(स्त्री.), पत्नी
सहार	:	(पु.), सहारा
साँवरा	:	(वि.), साँवला (कृष्ण)
साक्षी	:	(स्त्री.), गवाह
साष्टांग	:	(पु.), आठ अंगों से किया जाने वाला प्रणाम
सिंहद्वार	:	(पु.), मुख्यद्वार
सियासत	:	(स्त्री.), राजनीति
सिर और धड़ की बाज़ी लगाना	:	(मु.), पूरी तरह कुर्बान होना
सिर कुचल देना	:	(मु.), नष्ट करना
सिर देना	:	(मु.), बलिदान करना
सिष	:	(पु.), शिष्य
सीमांत	:	(पु.), सीमावर्ती स्थान
सुँहघो	:	(वि.), सस्ता
सुमत	:	(स्त्री.), सद्बुद्धि

सुयोग : (पु.), सुअवसर, अच्छा मौका

सुरम्य : (वि.), रमणीक

सुश्रुत : (पु.), आयुर्वेद चिकित्सा शास्त्र के प्रसिद्ध आचार्य, सुश्रुत संहिता के रचयिता

सृजन : (पु.), निर्माण करना

स्तव : (पु.), स्तुति, वंदना

स्तबक : (पु.), गुलदस्ता, पुष्प-गुच्छ

स्निग्ध : (वि.), शीतल, चिकना

स्वच्छंद : (वि.), मुक्त भाव से, बिना रोक-टोक के

ह

हँसली : (स्त्री.), गले में पहनने का आभूषण

हतप्रभ : (स्त्री.), भौंचक

हरख-हरख : (पु.), हर्ष से, प्रसन्नता से

हवाबाज़ : (पु.), विमान चालक

हसरत : (स्त्री.), चाह

हस्तशिल्प : (पु.), हाथ की कारीगरी, दस्तकारी

हाट : (पु.), बाज़ार

हाथ से निकलना : (मु.), मौका चूक जाना

हिदायत : (स्त्री.), निर्देश

हिम-तुषार : (पु.), बर्फ़ और पाला

हिरण्यकशिपु : (पु.), एक दैत्य का नाम, प्रह्लाद का पिता

हेकड़ी : (स्त्री.), अकड़